हिन्दी-गौरव-ग्रंथ मालाका १७ वाँ ग्रंथ ।

बलिदान

स्व० महाकवि गिरिशचंद्र घोषके एक बहुत ही
कारुणिक सामाजिक नाटकका
हिन्दी अनुवाद ।

अनुवादक,
श्रीयुत बाबू रामचंद्र वर्मा ।

प्रकाशक,
गाँधी हिन्दी-पुस्तक भंडार,
कालबादेवी—बम्बई ।

पहला संस्करण ।

मूल्य—
सादी जिल्द १।)
पक्की जिल्द १॥) रु०

श्रावण १९७७

नाटकके पात्र।

पुरुष।

करुणामय बोस—	एक कुलीन गृहस्थ।
रूपचंद मित्र—	एक धनी व्यक्ति।
लालचंद—	रूपचंद मित्रका चरित्रहीन लड़का।
मोहितमोहन—	करुणामयका बड़ा दामाद।
घनश्याम—	करुणामयके एक धनी पड़ौसी।
किशोर—	घनश्यामका पुत्र।
काली पंडित—	विवाहका दलाल।
रमानाथ—	मोहनका दूरके रिश्तेका मामा।
मुकुन्दलाल—	करुणामयका मँझला दामाद।
मृगांक और शशांक—	मुकुन्दलालके पहली स्त्रीके लड़के।
रामलाल—	घनश्यामका दामाद, भाविनीका पति।

बाँधव-समितिके सभासद, वकील, इन्स्पेक्टर, जमादार, पुरोहित, मोदी, ग्वाला, हलवाई, बजाज, बेलिफ, तम्बोली, हीरा, कपटी अन्धा, लगड़ा, पहरेवाला, बराती, कहार इत्यादि।

स्त्री।

सरस्वती—	करुणामयकी स्त्री।
यशोदा—	रूपचंदकी स्त्री।
राजलक्ष्मी—	घनश्यामकी स्त्री।
मंगली—	रमानाथकी परित्यक्ता स्त्री।
मातंगिनी—	मोहितमोहनकी मा।
किरणमयी—	करुणामयकी बड़ी लड़की।
हिरणमयी—	,, मँझली लड़की।
ज्योतिर्मयी—	,, छोटी लड़की।
भाविनी—	घनश्यामकी लड़की।

पड़ोसिनें, दाई, कल्लूवहू, नौकरानियाँ, ग्वालिनी कपटी विधवा इत्यादि।

बलिदान ।

पहला अंक ।

पहला दृश्य ।

स्थान—करुणामयके मकानकी बैठक।

करुणामय और सरस्वती।
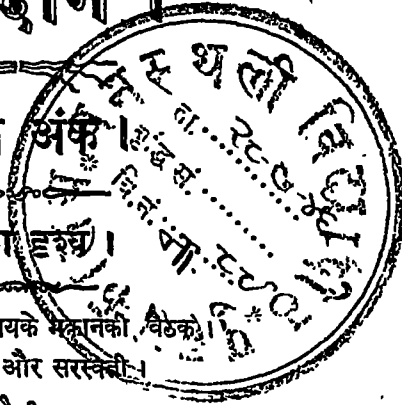
सर०—अब तबीयत कैसी है ?

करु०—अच्छी है । किरण कहाँ है ?

सर०—कल रातभर वह तुम्हें पंखा झलती थी । आज सबेरा हो जाने पर मैंने उससे जाकर थोड़ा सो रहनेके लिए कहा है । वह तो, जाती ही नहीं थी; मैंने उसे बहुत न कह-सुन कर भेजा है ।

करु०—किरण तो मुझे पंखा झलती थी, पर जानती हो, मैं उसके लिए क्या कर रहा था ?

सर०—कल रातको तो तुम्हारी तबीयत बहुत खराब हो गई थी । सारी रात तुमने तड़प तड़प कर काटी है ।

करु०—मैं पिता होकर उसकी मृत्युकी कामना कर रहा था ।

सर०—छीः छीः ! इन सब बातोंको छोड़ो । किरणके साथ तुम जितना प्रेम करते हो, उतना प्रेम तो मैं भी उसके साथ नहीं करती।

करु०—तुम समझती नहीं हो । मैं सचमुच उसकी मृत्युकी कामना करता था । किरण हम लोगोंकी शत्रु है; उसीके कारण हम

लोगोंका सर्वनाश होगा। कन्यादान! कन्यादान! ओह! गृहस्थके लिए यह कितनी बड़ी आफत है!

सर०—तुम क्यों व्यर्थ इसके लिए इतनी चिन्ता करते हो? क्या उसके लिये कहीं वर ही न मिलेगा?

करु०—ओह! कैसी विलक्षण बात है! जिस किरणके लिए आफिसमें बैठ कर काम करते करते यह मनमें आता था कि चटपट जाकर एक बार उसे देख आऊँ, जिस किरणके पास न रहनेके कारण मुझसे कुछ खाया नहीं जाता था, जिसका सुन्दर मुखड़ा देखनेसे कभी जी ही नहीं भरता था; उसी किरणको अब अपने सामने देख कर मेरा सारा खून जल जाता है।

सर०—ये सब तुम्हारी व्यर्थकी बातें हैं। तुम व्यर्थ इतनी चिन्ता क्यों करते हो? क्या किसीके घर लड़की नहीं होती? या किरणके लिए कोई वर ही न मिलेगा?

करु०—लड़की तो सबके घर होती है; पर ऐसी प्यारी लड़की भी किसीके घर होती है? आहा! किरण मुझे बिलकुल अपना आप ही समझती है। यह लड़की मुझे बीमार देख कर रातभर पंखा झलती रही है; जब वह मुझे जरा भी उदास देखती है तब उसकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। हाय, उसी किरणको मैं किसके घर फेंक आऊँगा? हाय, दुनियामें रुपया ही सब कुछ है! हाय! यदि सारे भारतके कायस्थोंमें परस्पर विवाह करनेकी प्रथा होती तो कैसा सुभीता होता। लेकिन भला समाज यह बात क्यों होने देगा? धर्मभीरु समाजके लोग कहते हैं कि इससे जाति चली जायगी। यदि कहीं इस बातकी चर्चा भी उठे तो लोग नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं। लोग यह नहीं देखते कि इस प्रथाके न होनेके कारण घर घर कैसा अनर्थ हो रहा है। हाय, यह किरण ही मेरे लिये जंजाल हो गई!

सर०—तुम क्यों व्यर्थ इतना सोच करते हो ? हम लोगोंकी जैसी अवस्था है उसीके अनुसार घर-वर देख कर सम्बन्धं ठीक कर दो। बस इतना ही चाहिए कि गृहस्थका घर हो, कमा कर लाते-खाते हों, लड़का पढ़ता-लिखता हो, काना-कुतरा न हो, और क्या !

करु०—गृहस्थ हों, कमाते-खाते हों, लड़का पढ़ता-लिखता हो, काना-कुतरा न हो तो उसका भाव जानती हो ? पाँच हजार रुपए ! हम अपने आपको बेच डालें तब भी पाँच हजार रुपए न मिलें ।

सर०—हैं ! पाँच हजार रुपए ! और लोग क्या लड़कीका विवाह नहीं करते ?

करु०—क्यों नहीं करते ! तुम भी करना चाहो, कर डालो । पण्डितजी तीन चार जगहकी बात लाए हैं ।

सर०—अच्छी बात है, तो फिर उन्हींमेंसे देख-सुन कर कहीं ब्याह कर दो ।

करु०—पहले सुन तो लो । एक लड़केके बापका तो ढाई कट्ठे जमीनके ऊपर एक मकान है । सुना है, उसी मकानको रेहन रख कर उसने दो कमरे बनवाए हैं । लड़का अट्ठारह बरसका है, स्कूलमें पढ़ना उसने छोड़ दिया है—बस बापके सिर चढ़ कर खाना और मजेमें थिएटर देखना, यही उसका काम है । उसका भाव है—हजार रुपए नगद, हजार रुपएके गहने, पलंग-बिछौना, घड़ी, घड़ीका चेन, तीन हजार रुपएकी चपत है । एक और लड़का है, जिसका घर-बार कुछ भी नहीं है, यहीं कलकत्तेमें अपनी बहनके यहाँ रहता और पढ़ता-लिखता है । उसके लिए भी दो हजार रुपएसे कम नहीं चाहिए । एक और लड़का है, उसका बाप चीना बाजारमें कहीं मुहर्रिरी करता है । सुना है, देशमें कहीं उसका कुछ घर-बार है । कलकत्तेमें दो कमरे किराए पर लेकर बाप-बेटा दोनों उन्हींमें रहते हैं ।

लड़का भी कुछ दिनों बाद बापकी ही तरह कहीं चीना बाजारमें कोई छोटी-मोटी नौकरी कर लेगा। लड़कपनमें एक बार बीमार हो जानेके कारण उसने स्कूल जाना छोड़ दिया। इस लिये वह अँगरेजी नहीं पढ़ सका। इसके लिये भी कुछ सोना, घड़ी और घड़ीकी चेन चाहिए। एक और लड़का है, उसका बाप पहले किसी हाउसमें नौकरी करता था; चोरीके अपराधमें निकाल दिया गया। अब वह घर पर खाली बैठा है। लड़केने दो बार फौजदारीमें जुरमाना दिया है। आजकल वह हैण्डनोटकी दलाली करता है और महीनेमें पन्द्रह दिन घर नहीं रहता। ब्याह करने पर भी वह कुछ बहुत राजी नहीं है। हाँ, यदि किसी राजा-बाबूकी लड़की और कुछ जमीन-जायदाद मिले तो वह पण्डितजी पर बड़ी कृपा करके और लड़कीके बापको मानों मोल लेकर ब्याह करनेके लिये राजी हो सकता है। अब बतलाओ, इनमेंसे कौनसा लड़का तुम्हें पसन्द है?

सर०—मैं क्या बताऊँ, घर घर तो यही विपत है। क्या इसका कोई कुछ उपाय नहीं करता? ये लोग जो इतनी सभाएँ करते हैं और न जाने क्या करते हैं; वे लोग कोई ऐसा उपाय नहीं करते, जिससे लोगोंकी जात भी बचे और इज्जत भी बची रहे?

करु०—जिन लोगोंके घर लड़के हैं वे तो खूब खिंचे-तने बैठे हैं, और जिनके घर लड़कियाँ हैं वे हमारी तरह फटफटाया करते हैं। और उनकी स्त्रियाँ तुम्हारी तरह कहती हैं—"क्योंजी, कोई इसका कुछ उपाय नहीं करता?" जो लोग बड़े बड़े व्याख्यान देते हैं, जो लोग लड़कीके ब्याहमें खर्च घटानेके लिये सभाएँ करते हैं, अगर उन्हीं लोगोंके लड़कोंके साथ ब्याहकी बात-चीत चलाई जाय तो वे ही लोग कहते हैं कि अभी हमारा लड़का ब्याहने लायक नहीं हुआ है और उधर पण्डितोंको भेज कर तलाश करते हैं

कि कौन अपनी लड़कीके व्याहमें दस-बीस हजार रुपए देगा। जो लोग सभाओंमें हाथ मटका मटका कर व्याख्यान देते हैं, उनमेंसे एकके लड़केके साथ मैंने तुम्हारी किरणका ब्याह करना चाहा था। जिस दिन मैंने उनके साथ पहले पहल इस विषयमें वात की थी उसके तीन दिन बाद तक उन्होंने मुझसे भेंट तक नहीं की।

सर०—अच्छा तो फिर कोई ऐसा ही लड़का देखो, जिसके घर एक स्त्री पहलेसे मौजूद हो। इस तरहका ब्याह भी तो सब लोग करते हैं।

करु०—यदि ऐसे वरकी भी अवस्था कम हो तो उसके लिये भी ज्यादा रुपया ही चाहिए। हाँ, यदि उसके आगे दो तीन लड़के-वाले हों, उमर ढल रही हो, पर हाँ जिसके यहाँ खानेका भी ठिकाना न हो उसके यहाँ यदि ब्याह करना चाहो तो पाँच रुपएमें हो सकता है।

सर०—तुम रहने दो, ये सब पण्डित किसी कामके नहीं होते। मैं श्यामा पुरोहितानीको बुलवाती हूँ। उसीने न सरकार बाबूकी लड़कीका ब्याह कराया था। बस सौ-पचास रुपएमें ही सब काम हो गया था।

करु०—तभी तो ब्याहको छः महीने भी नहीं बीते और लड़का ताला तोड़नेके अपराधमें जेल चला गया। जानती हो? अब लड़की उनके गले पड़ी है।

सर०—यह तो फिर भाग्यकी बात है।

करु०—खैर, भाग्यकी बात ही सही। जब तुमने लड़की जनी है तो यह सब हम लोगोंके दुर्भाग्यकी ही बात है। उमानाथसे सम्बन्धकी बात सुन कर मैं बिगड़ उठा था। लेकिन हम लोगोंकी जैसी अवस्था है उसे देखते हुए वही उपयुक्त सम्बन्ध था।

सर०—वे कहाँ व्याह करनेको कहते थे ?

करु०—सुन कर ही क्या कर लोगी ? वे कहते थे कि तुम्हारे मह-ल्लेके हरविलास मित्रके साथ किरणका विवाह कर दिया जाय।

सर०—हाय हाय, दो सौतों पर व्याह करके उसके गले लड़की मढ़ दूँ ? आज लड़कीका व्याह करूँ और कल ही उसका सिर मुड़ाऊँ ?

करु०—इतना मत बिगड़ो। वे जो कुछ कह गए हैं वह बहुत ही ठीक कह गए हैं। इस छोटेसे मकान और अपने बदनके दो गहनों पर ही न तुम इतनी उछल-कूद करती हो और चार घर लड़के ढूँ-ढ़ती हो ?

सर०—अजी, रहने भी दो। भला, ऐसी बात तुम्हारे मुँहसे कैसे निकली ?

करु०—यह बात मैं बड़े ही दुःखसे कह रहा हूँ। किरण जब पेटमें आई थी तब मैं अपने मित्रोंसे कहा करता था कि यदि लड़की हुई तब तो मैं तुम लोगोंको खिलाऊँ-पिलाऊँगा; और यदि लड़का हुआ तो नहीं खिलाऊँ-पिलाऊँगा। मैं खूब बढ़-बढ़ कर बातें बनाया करता था और लोगोंसे पूछा करता था कि लड़के और लड़कीमें फरक ही क्या है? अब जब सिर पर आकर पड़ी है तब मालूम होता है कि दोनोंमें क्या फरक है ?

(नेपथ्यमें) पं० कालीदास—कहिए बोस बाबू, मकान पर हैं ?

करु०—आइए पण्डितजी। ऊपर ही चले आइए।

सर०—शायद पण्डित कालीदास हैं।

करु०—हाँ। अब जरा तुम किवाड़के पीछे हो जाओ और सुनो कि वरोंके बाजारका क्या भाव है।

(पं० कालीदासका प्रवेश ।)

का०—बोस बाबू ! आज आप किसी बहुत भाग्यवानका मुँह देख कर उठे थे । आप जैसा वर चाहते हैं मैंने वैसा ही वर ठीक किया है । अब आप पहले यह बतलाइए कि आप विदाईमें मुझे क्या दीजिएगा ।

करु०—भला पूरी बात तो सुनूँ ।

का०—लड़का कालिजमें पढ़ता है । इण्ट्रेन्स पास कर चुका है । यदि कोई दोष है तो केवल यही कि उसका बाप नहीं है । देखनेमें बहुत ही सुन्दर है । उसके दो भाई भी हैं । उनके बड़े जो धन-सम्पत्ति छोड़ गए हैं वह तीन पुश्त तक बैठे खायँ तो भी नौकरी-चाकरी करनेकी जरूरत न हो । रहनेका मकान अपने घरका है, कई मकान किराए पर भी हैं, जमीन-जायदाद सब कुछ है; प्रामेसरी नोट भी हैं । उसकी माके तीन जोड़ जड़ाऊ गहने हैं । कहती हैं कि एक जोड़ बेच कर दो बहुएँ सजा कर घर ले आऊँगी ।

करु०—अच्छा, अब दाम-कामकी बातचीत बतलाइए ।

का०—इसके विषयमें आपको चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं है । मेरे मुहँसे लड़कीकी प्रशंसा सुन कर वह बुढ़िया ढुल पड़ी है । वह कहती है कि उन्हींकी लड़की है, उन्हींका दामाद है, जो कुछ वे दे देंगे उसीसे मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगी । मैं तीन हजारके अन्दर अन्दर सब निपटा दूँगा ।

करु०—पण्डितजी, मैं तो अपने आपको बेच दूँ तब भी तीन हजार रुपए न मिलेंगे ।

का०—वाह साहब, आप यह क्या कहते हैं ? वर खूब बढ़िया बरात लेकर और आतिशबाजी छुड़वाता हुआ आपके दरवाजे पर आवेगा । उस समय आपको अपनी लड़कीके तन पर कुछ गहने तो

देने होंगे। आप मेरी वात मानिए; यह सम्बन्ध मत छोड़िए। जिस तरह हो सके, उधार-उधूर करके भी लड़कीका विवाह कर दीजिए। यदि ईश्वर चाहेगा और आपके लड़की-दामाद वने रहेंगे तो फिर आपको वाकी दोनों कन्याओंके लिये चिन्ता न करनी पड़ेगी। (नेपथ्यमें सरस्वतीका दरवाजा वन्द करना) वहूजी! आपने सब सुन लिया न? अब आप बोस वावूको समझा कर राजी कर लीजिए। तब तक मैं घनश्याम वावूके मकानसे हो आऊँ। नहीं तो फिर वे पूजा पर बैठ जायँगे, फिर उनसे भेंट न हो सकेगी। यदि आप लोगोंकी राय पक्की हो तो कल ही हलदी चढ़ जाय और परसों व्याह हो जाय। यदि आप लोग यह मुहूर्त्त छोड़ देंगे तो चातुर्मास लग जायगा—चार महीने तक व्याह ही न हो सकेगा।

करु०—यदि हम लोगोंकी राय पक्की भी हो जाय तो भी मैं इतने रुपए कहाँसे लाऊँगा? तिस परसे आज कल मेरी तवीयतका जो हाल है वह तो आप देखते ही हैं। यदि मैं जीता वच गया तो फिर देखा जायगा। आप तो सब हाल जानते ही हैं।

(सरस्वतीका किवाड़ खटखटाना। करुणामयका किवाड़के पास जाकर सरस्वतीसे परामर्श करना।)

काली०—अजी साहब, यह कलकत्ता शहर है। यहाँ इन्तजाम करते कौन देर लगती है। यदि गहने न तैयार हो तो नगद रुपए रख दीजिएगा। अपनी स्त्रीके गहने ही लड़कीको पहना दीजिएगा।

करु०—अरे महाराज, सब इन्तजामोंका वड़ा इन्तजाम तो ठहरा—रुपया। और फिर न मैंने अभी तक लड़का देखा और न उन्होंने लड़की देखी तब बात कैसे पक्की होगी?

काली—उन लोगोंको तो लड़की देखनेकी कोई आवश्यकता ही नहीं है। उन लोगोंको सब बातें पहले ही मालूम हो चुकी हैं। बस

केवल एक वार आकर वे लोग लड़कीको आशीर्वाद दे जायँगे और साथ ही शगुन भी हो जायगा। हाँ, इससे पहले एक वार जाकर लड़केको देख आइए । और चार आदमियोंसे पूछ भी लीजिए—महल्लेके सभी लोग उनको जानते हैं। वह लड़का घनश्याम वाबूके लड़केके साथ ही कालेजमें पढ़ता है, आप उसीसे सब हाल जान सकते हैं ।

करु०—अच्छा, इस समय आप जाइए। फिर जैसा होगा, मैं आपसे कहला दूँगा ।

काली०—बहुत अच्छा। (नेपथ्यमें सरस्वतीसे) बहूजी, मैं आपसे कहे जाता हूँ—आप यह सम्वन्ध हाथसे न जाने दीजिएगा—न जाने दीजिएगा। नहीं तो पार्वती मिसरानीके हाथमें एक वहुत सुन्दर लड़की है। उसीके साथ उसका विवाह हो जायगा । मैंने उन्हें बहुत समझा-बुझा कर आपकी लड़कीके साथ विवाह करनेके लिये राजी किया है ।

[पं० कालीदासका प्रस्थान ।

सर०—(बाहर निकल कर) न जाने अब भी तुम क्यों असमंजसमें पड़े हो ! यह सम्वन्ध मत छोड़ो। जैसे हो, रेहन-वेहन रख कर लड़कीका व्याह कर ही दो। अब सोचते क्या हो ?

करु०—अरे भाई, मैं बहुत सी बातें सोचता हूँ। हाथमें इस समय केवल तीनसौ रुपए हैं, बाकी सब करज लेना पड़ेगा । एक नौकरी ही नौकरीका आसरा है, जिसका कोई ठिकाना भी नहीं है। तुमने समझा कि नहीं, कमसे कम दो हजार रुपयोंकी जरूरत होगी। मैं कहाँसे क्या करूँ ? देखो, यदि रामदेवी मिसरानीवाला लड़का ही ठीक हो जाय ।

सर०—वाह, तुम भी कैसी बातें करते हो ? अपनी आँखोंसे तो देख आए हो कि लड़का लँगड़ा-लूला और किसी कामका नहीं है।

करु०—अच्छा उस लड़केके बारेमें तुम्हारी क्या राय है, जिसका एक ब्याह पहले हो चुका है ?

सर०—हाँ क्यों नहीं ! घरमें नहीं दाने और अम्मा चली भुनाने ! तुम लड़कीके बाप होकर ऐसी बातें कहते हो ? क्या तुम यही चाहते हो कि लड़की जनम भर दुःख ही भोगती रहे ?

करु०—भला मेरे चाहने और न चाहनेसे क्या होगा ? एक कंगालके चाहने और न चाहनेसे क्या होता है ? यदि इस समय मकान रेहन रख कर दो हजार रुपए उधार ले लिए जायँ तो क्या तुम समझती हो कि यह रुपया इस जनममें चुक जायगा ? क्या तुम चाहती हो कि एक लड़कीके लिये ही सब कुछ हो जाय ? अब आगे लड़का हुआ है, उसे पढ़ाना-लिखाना, खिलाना-पिलाना सब कुछ चाहिए। आजकल लिखाना-पढ़ाना भी कोई हँसी-खेलवाड़ नहीं है।

सर०—तुम तो स्वयं पढ़े-लिखे और समझदार हो, मैं तुम्हें क्या समझाऊँ ? यह तो सभी लोग जानते हैं कि लड़की होती है तो उसे कुछ देना ही पड़ता है। पेटकी जनी लड़की ठहरी, अब इसे तुम दुःखके सागरमें ही डुबा देना चाहते हो ? अभी तक तो मकान है, मेरे तन पर गहने हैं। दुनियामें सब कमाना-धमाना लड़के-बालोंके लिये ही होता है या और किसीके लिये ?

करु०—तो क्या तुम यह चाहती हो कि लड़कीका ब्याह करके हम लोग सड़क-किनारे जा बैठें ?

सर०—जो भाग्यमें होगा सो देखा जायगा। पर कलको सड़क

पर जा बैठना पड़ेगा, तो क्या इसी डरसे आज हम लड़कीको पानीमें फेंक दें ? तुमसे जो कुछ हो सके सो करो ।

करु०—और तब फिर बाकी दोनों लड़कियोंका क्या होगा ? मँझली लड़कीका ब्याह भी इसीके साथ हो जाय तो अच्छी बात है । दोनोंमें दो ही बरसकी तो छोटाई बड़ाई है । हाँ, यह है कि उसकी उठान ऐसी नहीं है, इस लिये जो चाहो सो कह लो ।

सर०—उन दोनों लड़कियोंके भाग्यमें जो कुछ बदा होगा सो होगा । हिरणका ब्याह अभी दो बरस तक न भी हो तो भी कोई हर्ज नहीं है । कलके लिये घरमें अन्न न हो तो क्या इस लिये आजका परोसा हुआ भोजन भी मिट्टी कर दिया जाय ? बाबूजी कहा करते थे कि यदि अच्छे पात्रको कन्यादान की जाय तो एक ही लड़कीसे सात लड़कोंका काम निकलता है । और फिर यह भी तो नहीं है कि ऐसे ही दिन सदा बने रहेंगे । इनसे अच्छे दिन भी आ सकते हैं और बुरे दिन भी आ सकते हैं । तुम तो मर्द हो, इस तरह जी छोटा क्यों करते हो ?

करु०—मैं भी पहले इसी तरहकी बातें सोचा करता था; मैं भी लोगोंको इसी तरहके उपदेश दिया करता था । और इससे अच्छे दिन क्या पत्थर होंगे । इन दस बरसोंमें अभी तक डेढ़सौ रुपए महीना भी तनखाह नहीं हुई । तुम नहीं जानतीं, यह संसार बड़ा कठिन है— इसे बन्धु-बान्धवहीन जंगल ही समझो । यदि पहलेसे ही समझ-बूझ कर कोई काम न किया जायगा तो पीछेसे अवश्य पछताना पड़ेगा ।

सर०—अजी यह कौन जानता है कि कलको क्या होगा ? सुख-दुःख तो इस संसारमें लगा ही रहता है । चाहे अच्छा हो चाहे बुरा, धर्म्मके अनुसार सब काम करना चाहिए । अपनी सन्ता-नके शत्रु न बनो । यदि घर भी चला जाय तो तुम कुछ सोच मत

करो, लड़कीका व्याह कर दो। आगे जो कुछ भाग्यमें बदा होगा सो होगा।

करु—जो भाग्यमें बदा है वह मैं पहलेसे ही समझ रहा हूँ। भाग्यमें बदा है कि हम तुम घरसे हाथ धोकर सड़क पर जा बैठें, सिर्फ कर्ज लेकर व्याह कर देनेसे ही काम नहीं चल जायगा। यह भी जानती हो कि व्याहके साल भर बाद तक सभी तर-त्यौहारों पर कुछ-न-कुछ देना पड़ेगा। इसके लिये ही पाँचसौ रुपएसे कम नहीं चाहिए।

सर०—गृहस्थीका सब काम जरा किफायतसे चला लिया जायगा। इस लड़कीका तो काम हो जाय, फिर देखा जायगा। तर-त्यौहारों पर न दे सकेंगे तो नहीं देंगे।

करु०—अच्छी बात है। जैसी तुम्हारी मरजी। मैं मकान रेहन रखनेका इन्तजाम करता हूँ।

[दोनोंका दो ओर प्रस्थान।

दूसरा दृश्य।

स्थान—मोहितमोहनके मकानका बाहरी भाग।
मोहितमोहन और कालीदास।

काली०—अजी साहब, आप जाकर अपनी आँखोंसे देख लीजिए न। एक ठो बढ़िया गौन मँगवा कर भेज दीजिए; वही गौन पहना कर वे लड़कीको सामने लावेंगे। यदि वह आपको किसी यहूदीकी लड़की न मालूम हो तो फिर मुझसे कहिएगा।

मो०—वह कुछ लिखी पढ़ी है?

का०—वाह, घरकी दुलारी लड़की है । मेम नौकर रख कर घरमें उसको पढ़ाया-लिखाया गया है । और फिर एक्ट तो ऐसा करती है कि यदि आप देख लेंगे तो थिएटर जाना छोड़ देंगे । जिस समय वह बढ़िया साड़ी और बौडी पहन कर हारमोनियम बजाती और गाती है उस समय यदि आप उसे देख लेंगे तो कहेंगे कि गौहरजान भी इसके सामने मात है ।

मो०—वह रसिका तो है न ?

काली—वाह ! खूब नाटक पढ़ती है, उपन्यास पढ़ती है, धीरे धीरे मुस्कराती है, मुँह पर पाउडर लगाती है, खूब अच्छी तरह अँगरेजी ढंगका जूड़ा बाँधती है और रूमालमें एसेन्स लगा कर उसे नाकके पास फरफराया करती है । और फिर हाथ-कंगनको आरसी क्या ? आप स्वयं जाकर देख ही आइए न ! लेकिन हाँ, जरा आपकी मा इसमें कुछ बखेड़ा निकालती हैं, सो उन्हें समझा-बुझा कर ठीक करना आपका काम है ।

(मातंगिनीका प्रवेश ।)

मा०—पण्डितजी, मेरे मोहितका सम्बन्ध ठीक करना आपका काम नहीं है ।

मो०—किसका काम नहीं है ? क्या तुम यह सोचती हो कि जिस लड़कीको गौरा मिसरानीने ठीक किया है उसीके साथ तुम मेरा ब्याह कर दोगी ? यह नहीं हो सकेगा । जिस लड़कीको इन्होंने ठीक किया है यदि उसीके साथ ब्याह होगा तब तो करूँगा और नहीं तो फिर मैं ब्याह ही न करूँगा । बस यही एक बात मैं तुम्हें ठोंक-बजा कर कहे देता हूँ ।

काली०—बहूजी, आप जरा एक बार सुन तो लीजिए कि मैं कैसा सम्बन्ध ठीक करके आया हूँ । करुणामय बोसकी बड़ी लड़की है ।

करुणामय बोस ऐसे कुलीन हैं कि बड़े बड़े कुलीन उनके सामने सिर झुकाते हैं। और फिर दो जोड़े गहने मिलेंगे—एक जोड़ जड़ाऊ और एक जोड़ सोनेका। और फिर एक एक गहना एक एक सिलके बराबर होगा। और घड़ी, घड़ीका चेन, हीरेकी अँगूठी, पलंग-बिछौना, बरतन-भाँड़ा और दूसरे सब सामान तो हैं ही हैं।

मा०—और नगद?

काली०—बस यही तो एक झगड़ा है। वे कहते हैं कि हम तो कुलीन हैं, हमारे यहाँ व्याह करके तो वे ही जातमें ऊँचे हो जायँगे। हम रुपया क्यों दें? तो भी एक हजार रुपएका कम्पनी-कागज जरूर देंगे।

मा०—हैं, एक हजार! अरे मोहितका मन है, इस लिये मैं बहुत कम पर राजी हो रही हूँ—जाओ, उनसे कह दो कि मैं कमसे कम दो हजार लूँगी। और सोनेके सब गहने मैं दोसौ तोले तौल लूँगी। और अब सब सोनेके गहनोंकी ही चाल चल पड़ी है, चाँदीका मैं एक भी गहना नहीं लूँगी। मेरा कालिज-पास किया हुआ लड़का है, इसके लिये एक मकान भी चाहिए।

मो०—मा, तुम व्यर्थका झगड़ा करना चाहती हो तो करो, मैं कुछ नहीं कहता। तुम इस सम्बन्धको छोड़ दो और फिर मोहित-मोहन जनम भर कुँआरे ही रह जायँगे और कालिज छोड़ कर विलायत चले जायँगे। मैंने सोचा था कि एक बार और एफ० ए० का इम्त-हान दूँगा, पर वह अब होता दिखाई नहीं देता।

मा०—अच्छा अच्छा, चुप रह। बड़ा आया है! मानों मैं इसका बुरा चेतती हूँ! पहली ही दफे पास नहीं हुआ, दो दो दफे फेल हो गया; जानता है, पास-किए हुए लड़कोंका भाव आजकल क्या है! पंडितजी, आप मेरी बात सुनिए; जाकर उनसे कहिए कि दो हजार

रुपए दें । मैं क्या कहूँ, मोहित फेल ही हो गया, नहीं तो मैं बिना मकान लिए कभी न छोड़ती । मोहितको ही यह सम्बन्ध पसन्द है, इसी लिये मैं इतने कम पर राजी हो रही हूँ ।

काली०—तब फिर अब मैं क्या करूँ बहूजी, मेरी किस्मत ! वे बिलकुल अँगरेजी ढंगके आदमी हैं । एक बार जो बात उनके मुँहसे निकल गई फिर उसे वे नहीं बदलते । मैंने सोचा था कि आप इस बहूको घरमें लाकर सुखी होंगी । अब आप ही सोचिए कि दिन-पर-दिन आपकी अवस्था ढलती है या कम होती जाती है ? अब आप और कब तक चूल्हा-चौका किया करेंगी ।

मो०—तुम्हीं न कहती थीं कि रसोई बनानेका नाम सुन कर तो मेरे प्राण निकल जाते हैं ?

काली०—(अलग हट कर) अजी हो गया, आप चुपचाप रहिए न, मैं अभी उन्हें समझा-बुझा कर ठीक किए लेता हूँ ।

मा०—हाँ, यह तो आपने ठीक कहा, मुझसे तो चूल्हा नहीं फूँका जाता । मैं अकेली ठहरी, दो दिनसे मजदूरनी भी नहीं आई है । काम करते करते तो मैं चूर हो गई हूँ ।

काली०—और फिर यह भी तो देखिए कि बहू घरमें आ जायगी तो आपके हाथ दबाएगी, पैर दबाएगी, सिरमेंसे पके हुए बाल निकालेगी । बहूको घरमें लाओ, बस फिर पका-पकाया भोजन करो और लम्बी तानके सोओ । व्यर्थ एक हजार रुपएके लिये इतनी खींचतान मत करो । (अलग हट कर मोहितसे) अब वह कुछ तैयार हो रही हैं, आप भी कुछ जोर दे दीजिए; बस काम हो जाय ।

मा०—अच्छा मैं तुम्हारे कहनेसे मान लेती हूँ । जाओ डेढ़ हजार रुपए पर बात पक्की कर आओ ।

मो०—अव डेढ़ पैसे भी नहीं। मैं जाता हूँ। देखता हूँ तुम किसका व्याह करती हो।

[प्रस्थान।

काली०—नहीं बहूजी, अव इससे ज्यादा न हो सकेगा। आप व्यर्थ क्यों इतनी खींचतान करती हैं? देखिए, आपका लड़का दो वार तो इन्ट्रेन्समें फेल हो चुका है और एक वार एफ० ए० में फेल हो चुका है। तीन ठो वी० ए० पास लड़कोंके वाप उनकी खुशामद कर रहे हैं। मैं ही था जो उन्हें समझा-बुझा कर रोक आया हूँ। मैं आपसे जवान हार चूका हूँ, जिस तरह होगा मैं आपके मोहितका व्याह अवश्य करूँगा। इसी लिये मैंने करुणामय बाबूको बहुत कुछ उलटा-सीधा समझा-बुझा कर राजी किया है।

मा०—अच्छा जाओ, तुम्हारी ही वात सही। पर देखो, कुछ-न-कुछ नगद और जरूर वढ़वा लेना।

काली०—नहीं, ये सव वातें नहीं। अव कुछ वढ़े-चढ़ाएगा नहीं।

मा०—खैर, लेकिन इतना याद रखना कि मैं सोना तौल लूँगी।

काली०—इसकी आप क्यों फिकर करती हैं? मैं अपने साथ काँटा वटखरा लिए जाऊँगा।

मा०—अच्छा, जाओ। मैं क्या कहूँ, मोहित ही उस पर झुक पड़ा है, इसी लिये इतना सस्ता छोड़ दिया।

काली०—लेकिन एक वात है। कल ही मुहूर्त है। कल व्याह हो जाय।

मा०—वाह! इतनी जल्दी मैं कैसे व्याह कर सकूँगी?

काली०—यदि इतनी जल्दी न करोगी तो कुछ भी न होगा। चातुर्मास लगता है, फिर चार महीने तक व्याह ही न हो सकेगा। यदि चार महीने व्याह रुक गया तो फिर सव वात ही जाति

रहेगी । मैंने उनसे कह रखा है कि लड़कोंको पास होने पर दावत मिली थी, लड़केकी माके पास प्रामेसरी नोटोंका वक्स भरा पड़ा है। कलकत्तेमें उनके चार-पाँच किता मकान किराए पर हैं, जमीन-जायदाद है । यदि व्याहमें देर करोगी तो कोई जाकर भाँजी मार आवेगा, सारा वना वनाया काम विगड़ जायगा। यह तो मैं न जानता हूँ कि किस तरह कठिनतासे आप गृहस्थीका काम चलाती हैं और किस तरह उधार लेकर दोनों लड़कोंको पढ़ाती-लिखाती हैं । गहना-पत्तर जो कुछ था वह सब मैंने ही एक-ही-एक करके वेचा है । अब आप इसमें देर न करें । आज सन्ध्याको तिलक चढ़ जाय, कल हलदी चढ़ जाय और रातको व्याह हो जाय । आजकल सभी आपके दुश्मन हो रहे हैं, कोई जाकर भाँजी न मार आवे ।

मा०—अच्छा, जैसा आप कहते हैं वैसा ही सही । लेकिन इतनी जल्दीमें मैं क्या क्या करूँगी ?

काली०—जल्दी करनेमें तो और भी अच्छा है । ज्यादा खरच भी न होगा । आप लोगोंसे कह दीजिएगा कि वहुत जल्दीमें व्याह पक्का हो गया, मैं वहूके लिये गहने भी न वनवा सकी—लोगोंको वुला कर खिला-पिला भी न सकी । अच्छा अब मैं जाता हूँ ।

मा०—अच्छा, जाइए ।

[मातंगिनीका प्रस्थान ।

(मोहितमोहनका पुनः प्रवेश ।)

मोहित०—पण्डितजी ! आपकी वात कुछ मेरी समझमें नहीं आती ।

काली०—वतलाइए कौनसी वात आपकी समझमें नहीं आती ? जब तक मैं इधर उधरकी दो चार बातें वहूजीसे न कहता तब तक वे राजी कैसे होतीं ? और आपसे मैंने जो कुछ कहा है उसे यदि आप देखने जाना चाहें तो वड़ी खुशीसे जा सकते हैं । लेकिन एक

काम कीजिए। एक जोड़ी बढ़िया झुमका, एक जोड़ी जोशन और एक गौन खरीदके ले चलिए तब यदि वह बिलकुल मेम न मालूम पड़े तो मेरे मुँहमें दो थप्पड़ लगाइएगा। और एक बात समझ रखिए। गहने आदि देना यहाँका रवाज नहीं है, यह सब देहातीपन है। मैंने नगद रुपएका इन्तजाम किया है। लेकिन वह रुपया आप बहूजीके हाथमें मत दीजिएगा, अपने पास ही रखिएगा और उससे बढ़िया टेबुल, कुरसी, कोच आदि मोल लेकर अपना कमरा सजाइएगा। एक हारमोनियम लीजिएगा और कुछ मेमोंके पहननेके कपड़े ले लीजिएगा। फिर उसे नित्य नई पोशाक पहनाया कीजिएगा और आपके दोस्त देख देखके दाँतों उँगली दबाया करेंगे। हाँ मैं आपसे एक बात कहनेको था। इस वक्त दस रुपये उधार दे सकिएगा? घर पर लड़की बहुत बीमार है। पासमें रुपया न होनेके कारण उसका इलाज नहीं हो रहा है। ब्याहके बाद ज्यों ही मुझे विदाई मिलेगी त्यों ही मैं आपका रुपया एक आना रुपया सूद-सहित चुका दूँगा।

मोहित०—लेकिन मेरे पास तो कुछ भी नहीं है।

काली०—तो खैर, यदि सन्ध्या तक भी मिल जाय तो कोई हर्ज नहीं है। आपके ससुर आपको देखने आवेंगे। उस समय मुँह दिखाई-में एक गिनी मिलेगी, बस वही आप मुझे दे दीजिएगा। फिर मैं भी आपका ऐसा ब्याह कराए देता हूँ कि आपका सारा हाथ-खर्च तो ससुरालसे ही चल जायगा। आपके ससुर बिलकुल अँगरेजी ढंगके आदमी हैं। वे कहते थे कि व्यर्थ बहुतसी मिठाई और फल आदि भेजनेसे क्या लाभ। मैं अपने दामादको नगद महीना ही दिया करूँगा।

मोहित०—पण्डितजी, मैं गिनी तो आपको दे दूँगा। लेकिन देखिए उसमेंसे ५) मुझे जरूर फ़ेर दीजिएगा।

कालीο—हाँ हाँ साहब, यह कौन बड़ी बात है ! आप खूब पुट बदल कर तैयार रहिए। तीसरे पहर आपके ससुर आपको देखने आवेंगे। (स्वगत) इनकी मा जो कुछ बिदाई करेंगी वह तो ईश्वर ही जाने, लेकिन इस समय इनसे एक गिनी तो झटक लूँ। लोग कहते हैं कि जब तक लाख बातें न हों तब तक ब्याह नहीं होता। सो लाखों झूठी बातें तो मैं आज सवेरेसे बोल चुका हूँ। देखूँ अब मेरे भाग्यमें क्या बदा है ! और यदि करुणामय बाबूको यह सब बातें मालूम हो जाँयगी तब तो मैं उनके महल्लेमें भी आने-जानेलायक न रह जाऊँगा।

[प्रस्थान ।

मोहितο—मैं जैसी Wife चाहता था ठीक वैसी ही मुझे मिल गई। रुपया जो मुझे मिलेगा उसमेंसे एक टमटम तो जरूर ही खरीदनी पड़ेगी। उसी पर सवार होकर रोज हवा खानेके लिये ईडन गार्डन जाया करूँगा। भला ऐसी Wife पाकर भी चार आदमियोंको न दिखलाऊँगा ? ब्याह तो हो लेने दो; तब मैं अपने दोस्तोंको बतलाऊँगा कि Beautiful wife के साथ किस तरह व्यवहार करना चाहिए।

[प्रस्थान ।

तीसरा दृश्य ।

रूपचन्द मित्रके मकानका भीतरी भाग ।

लालचन्द और यशोमती ।

लालचन्दο—हायरे मेरे कलेजेमें छुरी भोंक दी—छुरी भोंक दी ।

यशोमती—अरे क्या हो गया, क्या हो गया ! लोगो दौड़ियो, देखियो, मेरे लालचन्दको क्या हो गया ?

(रूपचन्द मित्रका प्रवेश।)

रूप०—क्या है, क्या है?

लाल०—बाबूजी छुरी भोंक दी—छुरी भोंक दी।

रूप०—अरे ठीक ठीक बतलाओ न—क्या हुआ है?

लाल०—गजब हो गया—गजब हो गया। हाय करुणामय बोस!

यशो०—अरे क्या हो गया—क्या हो गया! मेरे लालको क्या हो गया?

लाल०—बाबूजी, देखते हो—देखते हो, यह लाल चिट्ठी देखते हो? यह चिट्ठी नहीं है—चिट्ठी नहीं है, यह छुरी है—छुरी। यह रंग नहीं है—रंग नहीं है, मेरे कलेजेका खून है! यह चिट्ठी करुणामय बोसके दफ्तरके छापेखानेमें छपी है और मेरे कलेजेमें घुस गई है। उन्हींके महल्लेके रामू मामाने यह चिट्ठी मुझे दी है।

रूप०—यह क्या बक रहे हो?

लाल०—बाबूजी, बाबूजी, तुम अभी तक कुछ समझ नहीं सके? अच्छा तो लो सुनो—आज करुणामय बोसकी लड़कीका व्याह है। उसीका यह निमंत्रण-पत्र है।

रूप०—तो फिर इससे तुम्हें क्या?

लाल०—बाबूजी, बाबूजी, मैं विरहकी आगमें जल रहा हूँ—विरहकी आगमें! मैंने बहुत सा इन्तजाम किया था, सब ठीक-ठाक कर चुका था, लेकिन सारा बना बनाया खेल बिगड़ गया, मिट्टी हो गया, सोनेकी चिड़िया हाथसे निकल गई।

रूप०—तुमने किस बातका इन्तजाम किया था?

लाल०—बाबूजी, मैं कुबड़ा हूँ और मेरी चाल-चलन ठीक नहीं है, इस लिये तुम रुपएका जोर लगा कर भी कहीं मेरा व्याह नहीं कर सकते—कोई नहीं ठहरता, मुझे देख कर सब भागते हैं। इसी लिये

मेरे मनमें बहुत दुःख हुआ था और तुम जानते ही हो कि इसी लिये 'मैं व्याह करने पर भी राजी नहीं होता था'। बाबूजी, मा, मेरे मनकी यह सब व्यथा जानते हो न ?

यशो०—तुम पहले व्याह करने पर राजी ही कब हुए थे ? यदि तुम व्याह करना चाहते तो क्या तुम्हारा व्याह इतने दिनों तक पड़ा रह जाता !

लाल०—हाँ हाँ, मैं सब समझता हूँ। अब तो मैं व्याह करनेके लिये तैयार हूँ। बताओ अब तुम लोग क्या करते हो ? हायरे ! मेरा कलेजा फट गया—मेरा कलेजा फट गया।

रूप०—अरे क्या हुआ, कुछ कहो तो सही।

लाल०—मैंने सब ठीक-ठाक कर रखा था। दो एक दिनके अन्दर ही मैं उसे जबरदस्ती अपनी जोड़ी पर चढ़ा कर चन्दन-नगर-वाले बागमें ले जाता। लेकिन सब बिगड़ गया—सब चौपट हो गया ! मेरे कलेजेमें छुरी लग गई—छुरी लग गई ! आज सन्ध्याको ही उसका व्याह हो जायगा।

रूप०—हैं, क्या कहा ! तुमने करुणामयकी लड़कीको गाड़ी पर बैठा कर बगीचे ले जानेका इन्तजाम किया था ?

लाल०—क्यों बाबूजी, इसमें बुरी बात कौनसी है ? लोग कहते ही हैं कि—" पिता पर पूत लीक पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा ही थोड़ा "। गौरा मिसरानी तो कहती थी कि तुम रातोरात उठा ले भागे थे ! मैं तो यहाँ तक नहीं पहुँचा। बाबूजी ! मैं उसे बगीचे ले जाता और अँगूठी बदल कर उससे व्याह कर लेता। और तब उन लोगोंको दिखलाता जो कहा करते हैं कि कुबड़ेके संग अपनी लड़की कौन व्याहेगा ! बस फिर सब लोग अपना सा मुँह लेके रह जाते। यदि मैं करुणामयकी लड़कीके साथ अँगूठी बदल कर व्याह कर लेता

और तब उसे बगलमें लेकर उनके घर जाता तब मेरा कलेजा ठंढा होता। बाबूजी, मैं बड़ा चालाक हूँ। मैं मुकद्मेके फेरमें न पड़ता। लेकिन क्या करूँ। मैंने बड़ा धोखा खाया। उसीके लिये मैंने बगीचेमें रहना छोड़ दिया था। और उनके महल्लेमें अपने किराएवाले मकानमें अड्डा जमाया था। लेकिन हाय ! मैंने बड़ा धोखा खाया—बड़ा धोखा खाया !

यशो०—अच्छा अच्छा बेटा, चुप रहो। धोखा कैसा, मैं परी जैसी एक लड़की लाकर उसके साथ तुम्हारा व्याह कर दूँगी। दस हजारकी जगह बीस हजार खर्च कर दूँगी।

लाल०—मा, तुम मुझे अपनी परी क्या दिखलाती हो ? मैं रोज सौ दोसौ परियोंको लेकर बगीचे जाया करता हूँ। लेकिन कलेजेका यह दाग तो नहीं मिटेगा—यह दाग तो नहीं मिटेगा।

यशो०—चुप रहो, चुप रहो। काहेका दाग—कैसा दाग—

लाल०—कैसा दाग ? हैं, तुम मा होकर ऐसी बात कहती हो ! मैं अभी अपनी जान दे दूँगा। यह बाबूजी गवाही हैं, इनसे पूछ लो। बाबूजी, बोलो न, चुप क्यों हो। बैठकमें दीवार काटके और उसमें अपनी कूबड़ छिपाके दुशाला ओढ़के मैं किस तरह चुपचाप भले मानुसकी तरह बैठा था ! इतनेमें करुणामय बोस आए; आते ही कहने लगे—“ बेटा, जरा उठके खड़े तो हो जाओ। ” मा, भला तुम्हीं बतलाओ कि उस समय मैं क्या करता ? बाबूजीकी अक्लिकी भी बस बलिहारी है। मेरे कूबड़की बात तो सारा शहर जानता है। उन्होंने यह नहीं समझा कि जब हम कुबड़ेको दीवारके संग सटाके बैठाएँगे तो लोग क्या कहेंगे ! बाबूजी, तुमसे कुछ भी न हो सका—धिक्कार है तुम्हें ! उस दिन करुणामय कैसा अपमान कर गए ! अब भी यदि तुममें शरम हो तो करुणामयकी और दो लड़-

कियाँ हैं । उनमेंसे एकके साथ मेरा व्याह कर दो । मा, मैं अगर बाबूजीका बाप होता और बाबूजी मेरे कुबड़े लड़के होते तो मैं अपना सब कुछ गँवा कर भी करुणामयकी लड़कीके साथ इनका व्याह कर देता । बाबूजी, मा, इस समय तुम्हीं दोनों आदमी हो । मैं साफ साफ कहे देता हूँ । करुणामय बोसकी अभी और दो लड़कियाँ हैं । उनमेंसे एकके साथ मेरा व्याह कर दो । और नहीं तो फिर आजसे मेरी उम्मैद न रखो—मैं जनम भर कुँआरा ही रहूँगा । हैं ! उन लोगोंका इतना बड़ा हौसला ! मैं क्या खूबसूरत नहीं हूँ ? कितनी ही औरतें मेरे लिये जान देती हैं ! मैं कुछ ऐसा वैसा या बदसूरत थोड़े ही हूँ ! बाबूजी, सुन लो, मैं कहे जाता हूँ । करुणामयकी एक लड़कीके साथ मेरे व्याहका इन्तजाम कर दो । और नहीं तो फिर आजसे अपने आपको निपूता समझो ।

[प्रस्थान ।

रूप०—तुमने सुना ? लड़केने जो कहा है वह झूठ नहीं है । करुणामयको आजकल बड़ा दिमाग हो गया है । मैंने पण्डितजीको कितना समझा-बुझा कर उसके पास भेजा । लेकिन उसने मेरी बात पर कुछ ध्यान ही न दिया—उससे रहा ही न गया । चटपट अपनी लड़कीका व्याह कर रहा है । अच्छा मैं भी देखता हूँ न, मेरा भी नाम है रूपचन्द मित्तर !

यशो०—लेकिन पहले यह तो देखो कि मेरा लाल कहाँ चला गया । ओ लाल—ओ लाल !

(नेपथ्यमें लाल०)—मा, यह जान बड़ी बेहया है, सहजमें नहीं निकलेगी । मैं शरमके मारे मर कर बगीचे जाता हूँ ।

यशो०—अरे सुन—सुन—

रूप०—अच्छा देखो, क्या होता है ।

[दोनोंका प्रस्थान ।

चौथा दृश्य।

करुणामयके मकानका भीतरी भाग।

करुणामय और सरस्वती।

करुणा०—जहाँ तक अपमान हो सकता था वह तो हो चुका। जनम भर मेरा कभी ऐसा अपमान नहीं हुआ। जो कुछ देना मुनासिब था वह सब तो मैंने दिया ही, इसके सिवा तुमने चोरीसे एक हार भी दे दिया। गहने भी मामूली नहीं दिये। ऐसे ऐसे गहने दिए जो लड़की कुछ दिनों तक पहने और सब चीजें जितनी जरूरी थीं वह सब भी दीं। इतना करने पर भी ऐसा अपमान? उस रमा दलालने चार आदमियोंके सामने मुझे धोखेबाज कहा। मैंने आज तक किसीकी एक भी बात नहीं सही और वेह घर घर घूमनेवाला कुत्ता मुझे धोखेबाज कह गया! न जाने इस लड़कीके लिये और क्या क्या सुनना-सहना भाग्यमें बदा है!

सर०—क्योंजी, आखिर वह है कौन? और उसने ऐसी बात क्यों कही?

करुणा०—कौन जाने कौन है; सुना है कि वह हैण्ड-नोटकी दलाली करता है और समधिनका किसी दूरके रिश्तेसे भाई लगता है। ठीक मुहूर्त पर व्याह भी न हो सका और वराती-घराती अच्छी तरह खा-पी भी न सके। भाग्यसे वहाँ चार भले आदमी बैठे थे, नहीं तो वह तो लड़केहीको लेकर चल देनेके लिये तैयार हो गया था। उसका इतना बड़ा हौसला!

सर०—खैर, जो कुछ होना था वह तो हो ही गया। यही समझ कर जाने दो कि वह समधियानेका आदमी था।

करु०—क्या कहूँ, जहाँ औरत ही सब कुछ करने-धरनेवाली है वहाँ लड़कीका ब्याह करके मैंने अच्छा काम नहीं किया। उस काली पण्डितकी बातोंमें आ जाने और तुम्हारे विगड़नेसे ही यह सब कुछ हुआ।

सर०—मैं तो ठहरी औरत, बताओ, मैं क्या करूँ ? तुम तो आप ही जाकर सब कुछ देख-सुन आए थे।

करुणा०—कुछ नहीं, यह सब भाग्यहीका दोष है। चलूँ, फिर चलूँ, देखूँ कहींसे कुछ उधार मिल जाय तो काम चले। मैंने जो कुछ रुपया बचा कर रखा था वह झगड़ेके समय दे देना पड़ा, नहीं तो लड़का उठ जाता। मैं वह रुपया नहीं देना चाहता था, लेकिन क्या करूँ, चार भले आदमियोंने कह-सुन कर दिलवा दिया। मैंने भी सोचा कि चलो, जाने दो, जहाँ इतना दिया है वहाँ थोड़ा और सही; लड़कीहीके घर जायगा न ! नहीं तो अगर मैं अड़ जाता तो जबरदस्ती ब्याह करके छोड़ता; देखता कि लड़केको कौन उठाता है !

सर०—देखो, मैं तुमसे कुछ ज्यादा नहीं कह सकती। जहाँ तक देना मुनासिब था वहाँ तक तुमने दे दिया। बस यही आजका काम और है। इसे अच्छी तरहसे कर दो। नहीं तो समधिन अगर चार आदमियोंकी बातमें आकर लड़कीको रोक लेंगी और बिदा न करेंगी तो मेरी लड़की न बचेगी। आजकलकी लड़कियाँ ससुराल जानेमें जरा भी नहीं रोतीं, लेकिन मेरी किरण एक एक आँखसे आठ आठ आँसू रोती थी, मेरा आँचल ही न छोड़ती थी। जब मैं बहुत बिगड़ी तब वह गई। मैंने अपना कलेजा पत्थर करके कहा कि अगर तुम रोओगी तो मैं तुम्हें लेने नहीं आऊँगी।

करु०—तुम्हारा दामाद भी अच्छा नहीं निकलेगा । मैंने लड़कीको उसके हाथमें सौंपते समय कहा था—"बेटा, अब सब भार तुम्हीं पर है, इस पर न जाने वह लौंडा क्या बड़बड़ाया । लेकिन मैं तो जहाँ तक समझता हूँ उसने "डैम डैम" ही कहा था । मैंने सुना था कि जब औरतें कुछ रसम करनेके लिये उसको उस कमरेमें ले गई थीं तब वहाँ भी उसने बहुत टेंटीपना किया था ।

सर०—अरे अभी वह लड़का है ।

(मंगलीका प्रवेश ।)

मंगली—मुझे कुछ खानेको दोगी ?

सर०—कौन—मंगली ?

करु०—मंगली कौन ?

सर०—वह मेरे मैकेके महल्लेकी एक लड़की है । (मंगलीसे) अरे तेरी यह दशा कैसे हो गई ? तू यहाँ कैसे आई ?

मंगली—भाग आई हूँ ।

सर०—कहाँसे भाग आई ?

मंगली—उनके घरसे । वे लोग मुझे बहुत मारते हैं और मेरे सिरके बाल काट काट देते हैं । (शरीर परके आघात—चिह्न दिखा कर) यह देखो न—देखो न, वह बड़ी पाजी है, मुझे खानेको नहीं देती ।

सर०—कौन—तेरी सास ?

मंगली—हाँ ।

सर०—तो तू अपने मैके क्यों नहीं चली गई ?

मंगली—मैके क्या जाती । मेरी मा तो मर ही गई है, बाबूजी मुझे पकड़ कर फिर वहीं भेज देते हैं ।

करु०—तुम्हें वह मारती क्यों है ?

मंगली—मारती है । मुझे पालकी पर बैठा कर सब लोग ले गए थे । ज्यों ही उन्होंने मेरा मुँह खोल कर देखा त्यों ही मेरे मुँह पर एक तमाचा लगाया । बाबूजीने जो गहने दिए थे वे उनकी निगाहमें कुछ भी न जँचे । मेरा सिर पकड़ कर उन लोगोंने दीवारसे टकरा दिया, जिससे सिर फट गया और खून बहने लगा । देखो न, अब तक दाग है ।

करु०—तुम्हारा व्याह हुए कितने दिन हुए ?

मंगली—जिस साल मेरी मा मरी थी उसी साल मेरा व्याह हुआ था । ससुरालवाले जब मुझे अपने यहाँ ले गए थे उसके बाद उन्होंने कभी मुझे मैके नहीं जाने दिया । एक बार मैं वहाँसे भाग आई थी । मेरी मा तो मर ही चुकी थी, बाबूजीने मुझे फिर वहीं भेज दिया । उस बार उन्होंने मुझे खूब मारा । मैं वहाँसे फिर भाग आई, बाबूजीने फिर मुझे वहाँ भेज दिया ।

सर०—क्यों री, तेरे बाप तेरी कुछ खातिर नहीं करते ?

मंगली—नहीं, वे मुझे बहुत गालियाँ देते हैं । माने मेरा व्याह किया था, इस लिये माको भी बहुत गालियाँ देते हैं कि तेरा व्याह किया था इसीसे हमारी नौकरी छूट गई और सारा घर चौपट हो गया । तूने घर खाया, घरवालोंको खाया, अब यहाँ और क्या खाने आती है, चल हट—यहाँसे दूर हो । वे तो मुझे फिर पकड़ कर वहाँ भेजे देते थे, पर मैं छूट कर भाग आई ।

करुणा०—क्यों जी, उन लोगोंने तुम्हारे बाल क्यों काट दिये थे ?

मंगली—मुझसे काम नहीं हो सकता था । मुझे बहुतसे काम करने पड़ते थे, जिससे हाथोंमें बहुत दरद होने लगता था और सिरमें चक्कर आने लगता था ।

करु०—तुम्हारे पति कुछ नहीं बोलते थे?

मंगली—उन्होंने तो एक दिन शराब पीकर मुझे लाठी मारी थी।

करु०—(सरस्वतीसे) सुनती हो? हाय! कौन जाने इस समय मेरी किरणकी क्या दशा होती होगी। (मंगलीसे) क्यों जी, तुम रहती कहाँ हो?

मंगली—मैं यों ही घूमती फिरती रहती हूँ और जब कोई मुझे कुछ खानेको देता है तो खा लेती हूँ।

करु०—तुमने गीत गाना कहाँसे सीखा था?

मंगली—मैं रासधारियोंके बरतन माँजा करती थी। वे लोग गाया करते थे और मैं सुना करती थी। लेकिन वे लोग बड़े खराब होते हैं, इसी लिये मैं उनके यहाँसे भाग आई थी।

सर०—तुझे उनके यहाँसे आये कितने दिन हुए?

मंगली—बहुत दिन हुए—मैं पूजाके दिनोंमें भागी थी। सब लोग छत पर भसान * देखनेके लिये गए थे, मैं पीछेके दरवाजेसे भाग आई।

सर०—अरे तेरी बातें सुन कर मेरा कलेजा फटा जाता है। क्या इस बेचारीमें जान नहीं है! इस जरासी लड़कीको लोग इतना दुःख देते थे! मेरा तो सुन कर ही कलेजा फटा जाता है।

करु०—यह सब तो तुमने सुन लिया। अब देखो, तुम्हारी किरणके साथ तुम्हारी समधिन क्या करती है?

मंगली—किरण कौन? तुम्हारी लड़की? उसका तुमने ब्याह कर दिया? तब फिर तुम रोती क्यों नहीं हो? रोओगी—रोओगी, अभी नहीं पर पीछेसे रोना पड़ेगा। मैं तुम्हारे यहाँ न खाऊँगी, अब

---

* दुर्गाकी मूर्तिका प्रवाह।

में जाती हूँ। तुम तो मा हो, तुम्हारा कलेजा तो फटेगा ही, मेरी मा तो पछाड़ खाकर गिर पड़ी थी । इसीमें उसकी जान गई । तुम्हें भी रोना पड़ेगा—जरूर रोना पड़ेगा, मैं तुम्हारे यहाँ नहीं खाऊँगी ।

मंगली गाती है—

खो बैठी गोदीका तोता, मन चिन्ता बाज पला सोता,
जो मरनेमें ही सुख होता, तो मरते कोई क्यों रोता ।
लड़की मिहनतसे मर मर कर, करती सेवा भरता न उदर
यह तुर्रा है उसके ऊपर, बिन लठ निस्तार नहीं होता ॥ १ ॥
तानोंसे जी पक जाएगा, तब बाज हृदयको खाएगा,
जो निज सन्तान डुबाएगा; उस मातु-पिताका मन रोता ॥ २ ॥

सर०—तू ठीक कहती है, लेकिन तू जाती क्यों है ? ठहर मैं तुझे खानेको दूँगी ।

मंगली—नहीं नहीं, मुझे अपनी मा याद आ गई । मुझे रोना आता है ।

[गाते गाते मंगलीका प्रस्थान ।

करुणा०—हम लोगोंमें बालिकाओं पर इतना अत्याचार होता है कि यदि दूसरी जातिवाले सुनें तो शायद उस पर विश्वास ही न करेंगे । लेकिन यह बात बहुत ही सच है कि घर घर बालिकाओंको इसी प्रकारकी यंत्रणा दी जाती है, भला लड़कीको कुमारी रखनेमें क्या दोष है ? यही न कि जाति जायगी, लड़की कुचरित्रा हो जायगी ?—हुआ करे ! हाय, इस प्रकारकी कठिन यंत्रणा बहुतसी निर्दोष बालिकाएँ सहा करती हैं । लेकिन इन सब बातोंको सोचनेसे क्या होगा ? चलूँ, चल कर चौथी भेजनेका इन्तजाम करूँ । देखूँ, कहींसे रुपया मिल जाय तो काम चले ।

सर०—देखो, ऐसी चौथी भेजना जिसमें वे लोग भी याद करें।

करु०—मुझसे जहाँ तक हो सकेगा करूँगा, आगे कौन जाने कि उनकी निगाहमें जँचेगा या नहीं !

[प्रस्थान।

सर०—अरे यह तो दाई आ रही है।

(दाईका प्रवेश।)

सर०—क्यों री, मैंने तुझे इतना समझाया कि लड़कीको छोड़ कर चली मत आइयो, पर फिर भी तूने नहीं माना और उसे अकेली छोड़ कर चली आई !

दाई— हूँ ! (पैर पसार कर बैठ जाना।)

सर०—हूँ क्या करती है, किरण अच्छी तरह है न ? समधिनको वहू पसन्द आ गई न ? वे लोग क्या कहते थे ? कह न, क्या हुआ ? अरे यह तो कुछ बोलती ही नहीं।

दाई—ठहरो, जरा साँस ले लेने दो। जरा सुस्ता लूँ, दो घूँट पानी पी लूँ तो कहूँ।

सर०—क्यों क्या हुआ ? तू चली क्यों आई ? वहाँ किसीसे लड़-झगड़ तो नहीं बैठी थी ?

दाई—चली न आती तो और क्या करती ? तुम्हारी लड़कीके पीछे मार खाती ? भला मैं लड़ूँगी ? लड़नेमें तुम्हारी समधिनसे पार पाऊँगी ? वह तो छछूँदरकी तरह इधरसे उधर नाच रही है।

सर०—अरी मरी कुछ हाल तो कह।

दाई—मैं हाल क्या कहूँ ? वह तो इधरसे उधर नाच रही है। कभी चिल्लाती है, कभी बकती है और कभी रोने लगती है।

सर०—अरे जल्दी सब हाल बता। लड़की उन्हें पसन्द न आई ?

दाई०—मैं कहूँ सब हाल—तुम सुनोगी ? ज्यों ही समधिनने पालकी खोल कर लड़कीका मुँह देखा त्यों ही वह बड़े जोरसे चिल्ला उठी। कहने लगी—" अरे यह कहाँकी कमबखत मेरे घरमें आ गई ! मैं कहाँकी यह चुड़ैल अपने घर ले आई ! मेरे मोहितके भाग्यमें यही लिखी थी ! अरे वह काली पंडित कहाँ गया, जिसने ब्याह कराया था ! जरा आकर देखो तो सही, यह मेरे लाड़ले मोहितकी बहू आई है। मालूम होता है कि किसी डोमके घरकी लड़की है। "

सर०—उसने लड़की-लड़के परसे कुछ न्यौछावर नहीं किया ?

दाई—अजी पहले सुनो तो, वह न्यौछावर करेगी ! अरे वह तो इस तरह जोर जोरसे रोने लगी कि मानो घरका कोई मर गया है। अपनी पड़ोसिनोंसे बात करे और बात करते करते चिल्ला पड़े। बहुत देरके बाद मुहल्लेकी एक औरतने लड़कीको पालकीमेंसे निकाला; लड़की लड़का दोनों अन्दर गए, मुहल्लेकी औरतें देखने आईं। तुम्हारी समधिन रह-रह कर घूँघट खोल कर लड़कीका मुँह देखे और चिल्लाने लग जाय। उसके तन परसे खींच-खींच कर गहने उतारे और पड़ोसिनोंको दिखला कर कहे—" देखोजी देखो, जरा आँखसे देखो, समधीने यह गहना दिया है। " एक एक गहना मुँहके पास ले जाय और फूँक मारे। कहे—यह तो गहना फूँकसे उड़ जायगा !

सर०—गहना और फूँकसे उड़ जायगा ! मैंने ऐसे भारी भारी गहने दिए, सो कहती थी कि फूँकसे उड़ जायगा ! और जो इतने नगद रुपए दिए उसका नाम ही नहीं !

दाई—वाह ! भला वह रुपयोंका नाम क्यों लेने लगी ! रुपएके लिये तो यों ही मा-बेटेमें झगड़ा होता था। बेटा माको पैरसे ठुकरा कर कहता था—" डैम, रुपए दे। " भला वह चुड़ैल क्यों रुपए देने

लगी ! इधर वह चिल्लाय, उधर वह चिल्लाय । जितनी उछल-कूद तुम्हारी समधिन करे उतनी ही उछल-कूद दमाद करे ।

सर०—तब ?

दाई—तब तुम्हारी समधिन बेटे और बहूको छोड़ कर मेरी तरफ़ झुकी । कहने लगी कि यह राजकुमारीजीका पहरा देने आई है । भई, मैंने तो मुँहसे चूँ तक नहीं की । मैं चुपचाप जाकर कल परसे हाथ-पैर धो आई और आकर उसी टूटे दालानमें चुपचाप बैठ गई । सारी रात बीत गई, सबेरा होनेको आया, किसीने मुँहसे यह तक न कहा कि उठ कर खालो ।

सर०—अरे कलसे तुझे किसीने खानेको भी नहीं दिया ?

दाई—आज सबेरे जरा सा दिया था । सो भी और कुछ नहीं, भुने हुए दाने । मैं उसे आँचलमें रख कर चुपचाप एक कोनेमें बैठी खा रही थी और किरण मेरे पास बैठी हुई घूँघट काढ़े रो रही थी; इतनेमें हाऊँ हाऊँ करती तुम्हारी समधिन आ पहुँची और आँखें लाल करके बोली—" क्यों री दाई, तेरे देसमें क्या किसीको कोई शरम-हया नहीं होती ? तू अभी तक बेहया बनके हमारे घरमें बैठी हुई है ! उठ—जा, निकल मेरे घरमेंसे । कंगालोंकी लड़की और उसका इतना आदर ! यह दाई संगमें आई है ! " मैं तो थर थर काँपने लग गई । चुपचाप उठ कर खड़ी हो गई । इस पर वह फिर कहने लगी—" निकल हरामजादी, मेरे घरसे निकल । " मैं जल्दी जल्दी वहाँसे चलने लगी । तुम्हारी लड़कीने मेरा आँचल पकड़ लिया । इतनेमें तुम्हारी समधिनने जोरसे लड़कीका हाथ झटक दिया । मैं तो घबरा गई, यह भी न देख सकी कि लड़कीके हाथमें कहीं चोट तो नहीं आई है और जल्दी जल्दी वहाँसे चली आई ।

सर०—(स्वगत) हे परमेश्वर ! यह तूने क्या किया ! (प्रकाश्य) क्यों री ! दमादको लड़की पसन्द आई ?

दाई—हाँ, पसन्द क्यों नहीं आवेगी ? तुम्हारा दमाद बड़ा भला आदमी है कि नहीं ! अरे वह तो बिलकुल पलटनका गोरा मालूम होता है—गोरा ! धुक् धुक् चुरुट पिया करता है और सबको डैम डैम कहा करता है। अरे वह तो क्रिस्तान होकर किसी मेमसे ब्याह करेगा, तब कहीं जाकर उसका कलेजा ठंढा होगा। उसने तो बापकी कसम खाई है कि मैं बहूका मुँह ही न देखूँगा।

सर०—हे परमेश्वर ! इस तरहका सत्यानाश भी किसीका होता है !

(एक ओरसे करुणामयका प्रवेश और दूसरी ओरसे दाईका प्रस्थान।)

करुणा०—सुनती हो, सामान तो दो आदमियों पर भेजने लायक है, पर मैं एक ही आदमी भेजूँगा। और तीनसौ रुपया नगद भी तो भेजना चाहिए। पासमें एक पैसा भी नहीं ठहरा, कहींसे कुछ उधार भी नहीं मिला। अब तुम्हीं जाकर कहींसे गहना रख कर रुपए ले आओ। मुझसे तो जहाँ तक हो सकता है, किए देता हूँ। यदि इतने पर भी तुम्हारी समधिन प्रसन्न न हो तो मैं क्या करूँ। जाओ, तुम रुपएका कुछ इन्तजाम करो।

सर०—रुपए तो मैं लाती हूँ। पर जरा इस दाईकी जबानी वहाँका कुछ हाल तो सुन लो।

करु०—मैं सब सुन चुका हूँ। बड़ी बढ़िया खबर थी। इसी लिये पार्वती मिसरानी सब हाल मुझसे पहले ही कह गई। जो होना था वह तो हो गया; अब सुनने-सुनानेसे क्या होगा ? खैर तुम रोओ मत, घर घर यही दुर्दशा है। हाय हाय ! ऐसी अबला बालिकाओंकी आहसे यह देश जल नहीं जाता—इसमें आग नहीं लग जाती—लड़-

कीके बाप जहर खाकर मर नहीं जाते—गला घोंट कर लड़कीको मार नहीं डालते ? धिक्कार है ! धिक्कार ! ऐसे सांसारिक व्यवहारको धिक्कार है ! देखो आगे चल कर क्या होता है । तुम जाओ, कहींसे कुछ रुपए ले आओ ।

(नेपथ्यमें) किशोर—बाबूजी—बाबूजी !

करुणा०—कौन, किशोर ? आओ बेटा !

(किशोरका प्रवेश ।)

किशोर—बाबूजी, आपने सुना ? मैंने इन्ट्रेन्स पास कर लिया है ।

करुणा०—हाँ बेटा सुना, बड़ी अच्छी बात है ।

किशोर—देखिए, मैं ताश खेला करता था, आपने डाँट कर कहा था कि बड़े आदमीके लड़के हो तो क्या इस लिये कुछ पढ़ो-लिखोगे नहीं ? उसी दिनसे मैं खूब मेहनत करके पढ़ने लगा हूँ और हर साल इम्तहानमें फर्स्ट होता हूँ । अब मैं आपसे काम-धंधा सीखूँगा । यह लीजिए, मेरे पास तीनसौ रुपए हैं, इन्हें कहीं सूद पर लगा दीजिए ।

करु०—बेटा किशोर, मैं तुम्हारा मतलब समझ गया । मैं तुम्हारे मकान पर रुपया उधार लेनेके लिये गया था । सो शायद तुमने कहींसे सुन लिया । इसी लिये तुम यह रुपए लेकर आए हो । बेटा, तुम अपने रुपए ले जाओ । अभी ये अपना गहना कहीं रेहन रख कर रुपए ले आवेंगी ।

किशोर—जब आपको रुपया उधार लेना ही है तब मेरे ही रुपए ले लीजिए । आप मेरे पिताके तुल्य हैं । (दोनों पैर पकड़ कर) यदि ये अपना गहना रेहन रख कर रुपया लावेंगी तो मुझे बहुत दुःख होगा । आप यह रुपए ले लीजिए ।

करुणा०—(रुपए लेकर) लेकिन बेटा, मुझे इतने रुपयोंकी तो जरूरत नहीं है ।

किशोर—बाकी रुपए आपके पास जमा रहेंगे ।

[प्रस्थान ।

करुणा०—तुमने देखा, इस संसारमें अब तक देवताओंका वास है। मैंने एक दिन उससे पढ़ने-लिखनेके लिये कहा था । उसी दिनसे वह मुझे गुरुके समान मानता है । यदि इसके साथ किरणका व्याह होता तब लड़की व्याहनेका ठीक ठीक सुख मिलता । ये रुपए रख छोड़ो, उसे लौटा देने होंगे । तुम जाओ और कहींसे रुपए ले आओ ।

[दोनोंका प्रस्थान ।

पाँचवाँ दृश्य ।

मोहितमोहनके मकानका भीतरी भाग ।

मातंगिनी, मोहितमोहन, रमानाथ, किरणमयी और दो पड़ोसिनें ।

मातंगिनी—रमा, तुम कुछ भी न निकले । मंडपमेंसे तुम लड़केको उठा भी न ला सके । मैं अगर मरद होती तो तुम्हें दिखला देती ! लड़कीके बापकी नाक काट लाती ।

पह० पड़ो०—हाँ हाँ, क्यों नहीं, जरूर ।

मातं०—अब भला तुम्हीं लोग बतलाओ कि इस बहूको मैं कैसे चार आदमियोंके सामने करूँगी ? और जरा गहनोंका हाल देख लो, ये गहने आए हैं ।

पह० पड़ो०—यही तो ।

दू० पड़ो०—लेकिन गहने तो कुछ ऐसे बुरे नहीं हैं ।

मार्तं०—बस यही अन्याय मुझसे नहीं सहा जाता। तुमने कभी ब्याह किया नहीं है तो क्या कभी ब्याह देखा भी नहीं है ?

पह० पड़ो०—तुम एक काम करो। यह सब गहने फेर दो।

मार्तं०—नहीं वहन, मैं कुछ लड़कीके बाप जैसी थोड़ी ही हूँ ! अगर उसने नीचपना किया है तो क्या मैं भी नीच हो जाऊँ ? रमा, तुम यही लड़की देखने गए थे ? जब तुम लड़कीको देखने गए थे तब क्या तुम्हारी आँखें कहीं चरने गई थीं ?

रमा०—बहन, मैं क्या करूँ ? मैंने तो पहले ही कह दिया था, कि इनके यहाँ ब्याह करना ठीक नहीं है। लेकिन तुम्हारा मोहित ही तो जिद कर बैठा।

मो०—Damn it ? मैं क्या समझता था कि यही Black Bitch होगी ?

दू० पड़ो०—लेकिन मोहितकी मा, बड़ी होने पर तुम्हारी बहू कुछ ऐसी बुरी तो नहीं होगी।

मार्तं०—तुम तो ऐसी बातें करती हो कि कुछ कहा ही नहीं जाता। और बुरी किसे कहते हैं ! भला इससे बढ़कर बुरी और क्या होगी ! (पहली पड़ोसिनसे) देखो जी, देखो, तुम्हीं देखो, दोनों आँखें तो मानो गड्ढेमें घुस गई हैं। नाक मानो किसीने दबा कर तोड़ दी है। और इस जलीके बाल तो देखो जैसे झाड़ूकी सींकें।

पह० पड़ो०—अरे तो मोहितकी मा, क्या तुम यह समझती हो कि जिस तरह तुम ब्याही आई थीं उसी तरहकी यह भी होगी ? हम लोगोंने देखा तो नहीं, पर सुना है कि जिस समय तुमने घरमें पैर रखा था उस समय मानो घरमें उजाला हो गया था।

मार्तं०—नहीं नहीं, मैं क्या कोई ऐसी सुन्दर थी ? पर नहीं, ऐसी कलमुँही और कुलच्छनी नहीं थी। (किरणसे) रोओ मत भाई,

रोओ मत, मैं आप ही जली हुई हूँ । मुझसे किसीका रोना-धोना नहीं देखा जाता । उठते रोना, बैठते रोना, नहाते रोना, खाते रोना, इस तरहका रोना अच्छा नहीं होता । चुप करो, मेरे मोहितका अमंगल मत करो ।

पह० पड़ो०—अरे बहन, सभी लोग तुम्हारी तरह हँसमुख थोड़े ही होते हैं ।

मातं०—अरे हँसमुख हो या न हो, पर क्या इस तरह दिनरात रो-रो कर जले हुएको और भी जलाया जाता है ? क्या कहूँ, जिस समय इस लड़कीको ब्याहके लाई उसी समय इसे जहर न दे सकी । यह हमारा सर्वनाश करनेके लिये आई है ।

मोहित०—Damn it-Damn it ? मैं विलायत जाऊँगा ।

मातं०—(झटकेसे किरणका हाथ पकड़ कर) जरा देखो देखो, इसके गहने देखो ।

दू० पड़ो०—अरे उसके बापने रुपए भी तो दिए हैं । गहनोंको तोड़वा कर उन्हीं रुपयोंसे नए गहने बनवा दो ।

मातं०—हैं, यह तुमसे किसने कहा कि रुपए दिए हैं ? मर गए रुपए देनेवाले । कौन बहुत रुपए दिए हैं ! खालीं डेढ़ हजार रुपए दिए हैं ।

पह० पड़ो०—अरे बहन, ऐसा अच्छा जमाई मिला, ऐसे घरमें लड़की दी और पाँच हजार रुपए भी न दिए ! खाली दो हजार रुपए देके पीछा छुड़ा लिया !

मातं०—अजी कहाँका दो हजार ? कैसा दो हजार ? खाली डेढ़ हजार ।

मोहित०—Damn it ! मा, तुम रुपए निकाल कर मुझे दो, मैं अभी विलायत जाता हूँ ।

मातं०—सारी खराबियोंकी जड़ यही रमा है।

रमा०—बहन, तुम इतना सोच क्यों करती हो? लड़कीको रोक लो। जिस समय तुमने लेन-देनकी बात-चीत पक्की की उस समय तो मुझसे पूछा नहीं, अब व्यर्थ मुझे दोष देती हो। अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है, तुम लड़कीको रोक रखो और आधा पेट खानेको दो।

दू० पड़ो०—रमानाथ! तुम भी इतने बड़े और समझदार होकर ऐसी बातें कहते हो? भला इसमें बेचारी लड़कीका क्या अपराध है? लड़कीको कष्ट क्यों दोगे? देखो इसने रोते रोते अपना हाल कैसा बुरा बना रखा है! कलसे एक दाना भी बेचारीके मुँहमें नहीं गया।

मातं०—भाई, तुम्हें इतना नखरा करनेके लिये अपने घर नहीं लाई हूँ। मेरा तन-बदन यों ही जल रहा है।

पह० पड़ो०—हाँ भाई, जला ही चाहे।

रमा०—बहन अब आगेसे तुम मेरी रायके मुताबिक सब काम करो। मैं अभी तुम्हारी सारी जलन मिटाए देता हूँ। तुम खाली लड़कीको रोक लो, बस समधी साहब आप ही सीधे हो जायँगे। अभी और डेढ़ हजार रुपए तुम्हारे सामने लाकर न रखें तो मेरा नाम रमानाथ नहीं।

मोहित०—Damn it! भला इस Dirty wife को मैं अपने घर पर रहने दूँगा?

मातं०—(रमानाथसे) यह सब तुम्हारी ही की हुई खराबी है।

रमा०—बहन, भला बतलाओ, इसमें मेरा क्या दोष है? मैंने इसमें क्या किया है? मैं तो वरको लेकर चला आ रहा था, जिस समय उन्होंने बारहसौ रुपए निकालके मेरे सामने रखे थे उस

समय मैं उठ खड़ा हुआ था । गोधूलीका व्याहका मुहूर्त्त था, मैंने झगड़ते झगड़ते रातके तीन बजा दिए, तब कहीं जाकर कन्या-दान होने दिया । पर मैं क्या करता ? तुमने जिन लोगोंको बराती बना कर मेरे साथ भेजा था उन्हीं लोगोंने मुझे पकड़ रखा—वर लेकर मुझे वहाँसे आने न दिया । तिस पर भी मैंने उनसे और तीनसौ रुपए वसूल करके ही छोड़े ।

पह० पड़ो०—अरे, बस खाली तीनसौ !

मातं०—अरे यह भी किसी कामका आदमी है ? इसे तो चूड़ियाँ पहन कर घरमें बैठना चाहिए था ।

रमा०—घबराओ मत, चौथी आने दो तब न बतलाता हूँ कि मैं कैसा बहादुर हूँ ।

दू० पड़ो०—क्यों जी, समधियानेसे लोग चौथी लेकर आ रहे हैं, तुमने उन्हें कुछ खिलाने-पिलानेका बन्दोबस्त नहीं किया ?

पह० पड़ो०—वाह जी, तुम भी कैसी बातें करती हो ! तुम क्या यह चाहती हो कि यह बेचारी अपने घरकी जमा बेच डाले । अपने पाससे रुपए खर्च करके घी-मैदा मँगावे ? और पूरियाँ बना कर तैयार रखे ? जिसमें वे लोग आवें और आते ही नवाब बन कर खाने लग जायँ ? देने-लेनेका तो यह हाल है ! और तुम चलीं चौथीवालोंको खिलाने !

मातं०—बहन, बस न्यायकी बात तो मैं तुम्हारे ही मुँहसे सुनती हूँ ।

दू० पड़ो०—वाह जी, तुम लोग भी कैसी बातें करती हो ! घरमें चार आदमी चौथी लेकर आवेंगे । उन्हें कुछ खिलाओ-पिलाओगी नहीं तो तुम्हारी निन्दा नहीं होगी ?

पह० प०—क्यों, इसमें निन्दा काहेकी ? लड़कीके बापने ऐसा अच्छा घर-वर पाया, फिर भी वह लड़केके नाम अपना मकान नहीं लिख सका—इससे उसकी निन्दा नहीं हुई ? और ये बेचारी अगर अपने पासका रुपया खर्च करके उन लोगोंको खिला-पिला न सकेंगी तो इनकी निन्दा होगी ?

रमा०—(नेपथ्यमें कुछ शोर सुन कर) मालूम होता है कि लोग चौथी लेकर आ रहे हैं। अब जरा बात-चीतका मजा आवेगा ।

[रमानाथका प्रस्थान ।

मोहित—Damn it—Damn it !

[मोहितका प्रस्थान ।

मातं०—बहन, जरा चलो, देखो, इस बार कलमुँहेने क्या चौंका लगाया है। अगर इतने पर भी तुम खिलानेके लिये कहोगी, तो मैं चुपचाप सिर झुका कर अपने हाथसे पूरियाँ बना कर तुम्हें दूँगी ।

[मातंगिनीका प्रस्थान ।

पह० प०—क्यों जी, तुम भी ऐसी औरतको समझाने लग गई थीं ! मेरे जेठका वकीलकी लड़कीके साथ जो ब्याह हुआ है न, उसीमें उन्हें पचीस हजार रुपए मिले थे । वही इसने सुन रखा है, इसी लिये वह भी अपने इस सनिचरहे लड़केके लिये उतना ही रुपया चाहती है ।

दू० प०—बहन, तुम सच कहती हो; यह बड़ी चाण्डाल है । हाय हाय, सुना है, इस लड़कीको उसने दिन भर कुछ भी खानेको नहीं दिया और जो कोई आता है उसे इसका मुँह दिखा कर इसी तरह ताने मारा करती है। ऐसी सुन्दर लड़की और इस चुड़ैलको पसन्द नहीं आती ।

पह० प०—चलो, जरा तमाशा तो देखें, यह चण्डी क्या करती है!

दू० पड़ो०—करेगी क्या; सब चीजें फेर देगी।

पह० प०—ऊँह! ऐसी ही फेर देनेवाली। अरे यह तो उसमेंसे एक तिनका भी न फेरेगी। सब चीजें घरमें रख लेगी और लोगोंको गालियाँ देकर घरसे निकाल देगी। और फिर घरमें आकर बेचारी इस लड़की पर सारा गुस्सा निकालेगी।

[दोनोंका प्रस्थान।

(मंगलीका प्रवेश।)

मंगली—क्यों बहन, तुम अकेली बैठी इस तरह रोती क्यों हो? रोओ मत, रोओ मत! तुम्हारी सासका कलेजा तो पत्थरका है। तुम रोओगी तब भी यह तुम्हें मारेगी और हँसोगी तब भी मारेगी।

किरण०—बहन, तुम कौन हो? देखो यह तो मुझे मार डालेगी। दिन भर ताने मारा करती है! मैं खाने बैठी थी—हाथ पकड़ कर, खींच कर इसने मुझे थाली परसे उठा दिया। और बड़े जोरसे मुझे सिर पर एक थप्पड़ भी मारा था—जिससे सिर अब तक झन्ना रहा रहा है। मैं तो चक्कर खाकर गिर पड़ी थी। बहन, तुम किसी तरह जाकर मेरी माको यह सब हाल कहो—मेरे बाबूजीको खबर दो।

मंग०—उन लोगोंको जाकर कहनेसे क्या होगा? तुम भाग जाओ। घर पर तुम्हारी मा हैं ही, तुम भाग कर चली जाओ। अगर तुम्हें घरका रास्ता न मालूम हो तो मैं तुम्हें ले चल कर घर पहुँचा आऊँगी। मैं तुम्हारे घर गई थी, वहाँ तुम्हारी माकी जो दशा मैंने देखी उससे मुझे बहुत दुःख हुआ। इसीसे मैं तुम्हें देखने आई हूँ। मैं तो भिखारिणी बन कर यहाँ गीत गाने आई हूँ। वह देखो सामनेसे तुम्हारी सास आ रही हैं—अच्छा, अब मैं गीत गाती हूँ। तुम यह मत कहना कि यह मुझे देखने आई है। चुप रहो, रोओ मत।

नेपथ्यमें मातंगिनी—(चौथी लानेवालोंके लिये) निकालो, निकालो । मोहित, इन सबको चाबुक मार कर घरसे बाहर निकाल दो !

मंगली गाती है—

खालो विष या तो कसो गले पै डोरी ।
कलिमें कन्याओ अमर सास हैं तोरी ।
घर-बार-बगीचे बेच दिया सब दैजा,
लेनेवालोंको हुआ न तब भी हैजा ।
उस पर थप्पड़-लप्पड़ सहती हैं गोरी,
कलिमें कन्याओं अमर सास हैं तोरी ।
रोरो कर छाती शीतल कर लो अपनी,
दिन रात उठत बैठत साँसत सह सजनी,
सासोंके लड़के अच्छे बुरी बहोरी,
कलिमें कन्याओं अमर सास हैं तोरी ॥

(मातंगिनीका पुनः प्रवेश ।)

मातं०—तू कौन है ?—कौन है ?

मंग०—जी, मैं भिखारिणी हूँ । कुछ भीख दो, नहीं तो मेरा एक गीत ही सुन लो । मैं गाती हूँ—

मातं०—निकल, निकल, यहाँसे निकल । मालूम होता है कि लड़कीके बापने ही इसको यहाँ भेजा है ।

मंगली फिर वही गीत गाती है—

मातं०—देखो, देखो, समधीने इसे घरमें घुस कर गालियाँ देनेके लिये यहाँ भेजा है ।

मंग०—ही ही ही ।

[मंगलीका जल्दीसे प्रस्थान ।

(दोनों पड़ोसिनोंका पुनः प्रवेश ।)

पह० पड़ो०—वाहजी मोहितकी मा । तुम्हें भी खूब समधी मिले ।

मात०—बहन, देखो अगर इसमें मेरा कोई अन्याय हो तो मेरे मुँहमें कालिख लगाओ और नहीं तो उन लोगोंके मुँहमें कालिख पोतो । जो चीजें आई थीं वह सब तो तुम लोगोंने देख ही लीं, अब जरा इस लड़कीका मुँह भी देखो । (किरणका घूँघट खोल कर) देखो, देखो, पूरी चुड़ैल मालूम होती है कि नहीं । इस तरहका मुँह बनाना और इस तरहका रोना तो मैंने अपनी उमरमें आज तक कभी देखा ही नहीं ।

दू० पड़ो०—अच्छा बहन, जाने दो, क्या करोगी ! अब तुम अपनी रसम करो, लड़के-लड़कीको खीर खिलाओ । अपने लड़केका कल्याण करो ।

मात०—जी चाहता है कि मारे तमाचोंके उसका मुहँ तोड़ दूँ ।

(किरणके मुहँ पर थप्पड़ मारना ।)

किरण०—अरे मुझे मारो मत—मारो मत !

मात०—देखो, देखो, जरा चण्डालकी लड़की चण्डालिनीको देखो । मैंने इसे मारा है ! मैं इस बुढ़ापेमें अपने सिर पर झूठ-मूठका कलंक लेनेके लिये इस बहूको घरमें लाई हूँ । इसके मुँहमें आग लगे । मैंने इसे मारा है—मैंने इसे मारा है ।

किरण०—(डरके मारे रोना बन्द करती हुई) नहीं, जी, नहीं ।

(मोहितमोहन और रमानाथका पुनः प्रवेश ।)

मोहित०—Damn it, Damn it ! मैं तो इससे लाचार हो गया ! अब तो मैं क्रिस्तान हो जाऊँगा और मेमसे ब्याह करूँगा; और नहीं तो लड़ाई पर चला जाऊँगा । रामू मामा, मैं आज ही इसी गाड़ीसे जाऊँगा ।

रमा०—अच्छा बेटा, अच्छा, जरा ठहरो! जाओगे तो सही! (मातंगिनीसे) बहन, तुम बहूको रोक लो—बहूको रोक लो! देखो मैं अभी उनसे दो हजार रुपए गिना लेता हूँ कि नहीं! बहूको रोक लो—बहूको रोक लो। चाहे कोई लाख कहे, पर तुम बहूको विदा मत करना।

मोहित—०वाह मामाजी! तुम भी भला ऐसी बातें कहते हो? यह Dirty nigger मेरे मकान पर रहेगी! इसे मैं अपनी wife कहूँगा? Damn it-Damn it! मा, अगर तुम भला चाहती हो तो इसे अभी विदा कर दो। मुझे तुमने यहाँ किस लिये बुलाया है? जल्दी बतलाओ; मैं चला जाऊँगा। मुझे Party में जाना है। जब मैं लौट कर आऊँ तब मुझे यह यहाँ न दिखाई दे—चली जाय!

मातं०—रमा, अब तुम कंगन खोलनेका प्रबन्ध करो, नहीं तो लड़केका अमंगल होगा। तुम मोहितको समझाओ। लोग ठीक कहते हैं कि जब कुलच्छनी बहू घरमें आती है तब लड़का अपने हाथमें नहीं रह जाता।

रमा०—बेटा जरा ठहर जाओ, जरा सब्र करो। जानते हो, सब्रका फल मीठा होता है? मैं अभी तुम्हें मीठा फल दिखाता हूँ और दो हजार रुपए तुम्हें दिलवाता हूँ।

मोहित०—वह किस तरह?

रमा०—देखते रहो। (मातंगिनीसे) बहन, मैं यह सब सामान फ़ेर दूँ?

मातं०—अरे भाई, इसको फेरनेसे क्या होगा? रहने दो।

रमा०—अच्छा, रहने दो। पर अब तुम वर-कन्याके कंगन खोलनेका प्रबन्ध करो। समधियानेके लोगोंके साथ लड़ते लड़ते तो मुझे

भूख लग आई है । बहन, रात हो चली, अब तुम सब इन्तजाम करो । बस तुम बहूको रोक लो, मैं अभी दो हजार रुपए वसूल करता हूँ। क्या कहूँ, मैं तो मारे अफसोसके हाथ मल-मल कर रह जाता हूँ। अच्छा तुम लोग चौथीका इन्तजाम करो । खीर आई ? अच्छा, रखो। बेटा तुम बैठ जाओ; जरा ठण्ढे हो । मैं अभी तुम्हारे विलायत जानेके लिये रुपयोंका इन्तजाम करता हूँ। बैठो, इस पीढ़े पर बैठ जाओ । लाओ, लड़कीको भी बैठाओ ।

(मातंगिनीका बड़े जोरसे किरणका हाथ पकड़ कर खींचना ।)

किरण०—(डर कर) नहीं नहीं, मुझे मारो मत, मैं उठती हूँ।

मातं०—सुनी तुम लोगोंने इस कम्बख्तकी बात ! मैंने इसे मारा है ? चल हट ! कहाँकी बला मेरे घर आई !

(किरणको धक्का देना ।)

किरण०—(गिरकर) अरे मैं मरी ?

मोहित०—मामा जी, देखा इस मरीका ! (खीरकी थाली किरणके ऊपर फेंक कर ।) Damn it—Damn it !

[प्रस्थान ।

मातं०—अरे रमा, देखो, देखो, इसे क्या हो गया है । यह कहीं इसी तरह मर तो न जायगी !

रमा०—इसके मुँह पर पानीका छींटा दो, पानीका छींटा दो ।

[रमाका जाने लगना ।

मातं०—चले कहाँ ? तुम चले कहाँ ! देखो, देखो, कहीं मर तो नहीं गई ?

रमा०—दीआ लाकर देखता हूँ । (स्वगत) "यः पलायति सजीवति !" मैं तो भाग कर अपनी जान बचाऊँ। कहीं मेरे हाथमें भी हथ-

कड़ी न पड़ जाय। चूल्हेमें जाय ऐसा व्याह और भाड़में जाय ऐसी चौथी !

[प्रस्थान।

किरण०—(उठ कर डरती हुई) नहीं नहीं, मुझे मारो मत—मारो मत !

(फिर गिर पड़ना ।)

मात०—ओ रमा ! ओ रमा ! अरे यह तो उठ कर फिर गिर पड़ी !

दू०पड़ो०—अजी, इसके मुँहमें जरा पानी दो। डरो मत बेटी, डरो मत। लो, जरा सा पानी पी लो। तुम्हारे बाप आकर अभी तुम्हें ले जायँगे।

(किरणमयीको गोदमें ले लेना।)

पह० पड़ो०—(मुँहमें जल देकर) डरो मत—डरो मत।

दू० पड़ो०—मोहितकी मा, तुम भी कैसी हो ! आज दो दिनसे इस अनजान लड़कीको इतना कष्ट दे रही हो ! तुम्हारे कुलमें और भी कभी ऐसी लड़की आई थी ? और भी कभी तुमने सोनेके इतने गहने देखे हैं ? और भी कभी डेढ़ हजार रुपया इकट्ठा आँखोंसे देखा है ? अपने इसी नालायक लड़केका व्याह करके रानी बनना चाहती हो ! इतनी बड़ी हुई, तुम्हें जरा भी अकल न आई ? अभी इस अनजान लड़कीको कुछ हो जाय तो बीबी, सारे घरके हाथमें हथकड़ी पड़ जाय। ऐसी अन्धेरे घरका उजाला बहू आई है—सो तुम्हें पसन्द नहीं आती !

(किरणमयीका काँपना।)

पह० प०—डरो मत बेटी, डरो मत।

दू० प०—देखो न इसके गलेमें पानी भी नहीं उतरता। ऐसा मारा है कि पाँचों उँगलियोंका निशान पड़ गया है ! बहूको इस तरह सता

फर और रुपए लोगी ? अभी मा-बेटा दोनों थानेमें चले जाओगे। जानती हो, हाथमें हथकड़ी पड़ जायँगी !

किरण०—हाय मा, तुम कहाँ हो ! मैं मरी !

मातं०—(चिल्ला कर) अजी कहाँ हो ! कहाँ चले गए ! जरा आओ, देखो, देखो, यह बहू घरमें लाकर तुमने मेरी कैसी खराबी की है। रमा ! रमा ! यह कम्बख्त कहाँ चला गया ! इस चुड़ैलको अभी विदा करो—निकालो, घरसे निकालो ! रमा ! रमा !

[प्रस्थान ।

दूसरा अंक।

पहला दृश्य।

रूपचन्दके मकानका भीतरी भाग।
रूपचन्द, लालचन्द और यशोमती।

लाल०—बाबूजी, बाबूजी, तुम्हारे ही हाथोंमें मेरे प्राण हैं। तुम चाहो तो मैं बच सकता हूँ, और तुम चाहो तो मैं मर सकता हूँ।

रूप०—क्या कहा ?

लाल०—बाबूजी, जिस तरह हो सके, करुणामयकी लड़की मुझे दिलवा दो। मेरा मरना जीना तुम्हारे ही हाथमें है। तुम नाराज न होना, मुझे बड़ा कष्ट होगा।

रूप०—अबे उल्लूके पट्ठे, जरा साफ साफ कह।

लाल०—करुणामयकी मझली लड़की बहुत अच्छी है, देखनेमें भी खूब मजेकी है। उसके साथ मेरा ब्याह ठीक कर दो।

यशो०—अरे जब मेरा लाल इतना कहता है तब वहीं क्यों नहीं इसका ब्याह कर देते ? व्यर्थ इधर उधर चार जगह बातें क्यों करते हो ?

रूप०—तुम भी पागल हो गई हो ? मैंने पण्डितको भेजा, रुपएकी बातचीत की, लेकिन करुणामय राजी हों तब तो।

लाल०—बाबूजी, इस बार बंसी डाली है, बस उसे खींचनेकी देर है। रामू मामाने चारा-वारा डाल कर सब ठीक कर रखा है।

रूप०—रमानाथने क्या उन्हें राजी कर लिया है ?

लाल०--नहीं बाबूजी, उन्हें फेरमें फँसा कर राजी करना पड़ेगा। रामू मामाने दलाली करके तुम्हारा शिकार ठीक कर रखा है। जिस मोहित घोषने अपना मकान तुम्हारे यहाँ रेहन रखा है उसका एक भाई और है; लेकिन उसने यही कह कर रेहन नामेकी रजिस्टरी कराई है कि मैं अपनी माका एक ही लड़का हूँ, मेरा कोई भाई नहीं है। पहले तुम उसको फँसाओ।

रूप०—उसे व्यर्थ फँसानेसे क्या लाभ होगा ?

लाल०—बाबूजी, तुम भी रह-रह कर निरे बेवकूफ हो जाते हो, इसीसे मेरा जी जल जाता है। तुम जानते नहीं, मोहित घोषका करुणामयकी बड़ी लड़कीके साथ ब्याह हुआ है ? अब तुम अदालतसे उसके नाम वारन्ट निकलवाओ। बस करुणामय आप ही " बाप बाप " चिल्लाते हुए लड़की देनेके लिये आवेंगे।

रूप०—हैं ! वही लौंडा उनका दमाद है ?

लाल०—और नहीं तो क्या ! वह हमारा बाप लगता है, या दादा, जो हम रामू मामाकी खुशामद करके उसको बगीचे ले जाते हैं, शराब पिलाते हैं, मोती जानके साथमें सुलाते हैं। मोती जानके फेरमें उसे पागल कर देते हैं। अगर हम लोग ऐसा न करते तो उसे क्या गरज पड़ी थी जो जाल करके तुमसे रुपए उधार लेता ! रण्डीकी मुहब्बतमें फँस कर ही उसने उधार लिया है। वह इधर उधर रोता फिरता था। मोती उसे घरमें नहीं घुसने देती थी, इसी लिये उसने रुपया उधार लिया था।

रूप०—ठीक—ठीक, तब तो करुणामयको ले लिया है।

लाल०—और नहीं तो मैं तुमसे क्या कहता हूँ ? मा, देखो, मैं काने-कंजोंसे भी बढ़कर होशियार हूँ या नहीं ! बाबूजी बहुत जाल रच-रच कर लोगोंका माल मारा करते हैं, लेकिन बाबूजी ! तुम्हीं

कहो, ईमानसे कहना कि तुम्हारी भी ऐसी बुद्धि हो सकती है ? माके सामने कबूल करो कि तुम्हारा लाल कैसा धूर्त्त है ! अब तो तुम समझ गए न कि जब तुम मरोगे तब मैं तुम्हारी सम्पत्तिकी रक्षा कर सकूँगा ?

रूप०—अच्छा अच्छा, तुम जाओ, मैं वारन्ट निकलवाऊँगा।

लाल०—मा, अब जाके बाबूजी ठीक बापकी तरह हुए हैं। अब इस बातको भूल मत जाना।

रूप०—जब लड़का इतनी जिद ही करता है तब जाने दो; नहीं तो मैंने सोचा था कि उसे डरा-धमका कर मकान ही ले लूँगा। लेकिन खैर—

लाल०—अजी जाने भी दो, तुम जीते रहोगे तो ऐसे दोसौ मकान ले लोगे। विश्वामित्र गोत्र और मित्तर उपाधिकी बात पूरी कर दो।

यशो०—मेरा लाल भी खूब है, क्या तरकीब निकाली है ! वाहवा वाह !

लाल०—मा, बताओ तो सही तुम्हारा लाल कैसा है ?

यशो०—वाहरे मेरे लाल, वाह ! (ठोड़ी पकड़ कर प्यार करना।)

लाल०—मा ! मैं चाँदका टुकड़ा बहू तुम्हारे घरमें लाता हूँ। बाबूजी ! तुम जल्दीसे सब ठीक-ठाक करो, नहीं तो मैंने सुना है कि वहाँ ब्याहकी बातचीत पक्की हो रही है। अगर देर करोगे तो मामला हाथसे निकल जायगा।

[सबका प्रस्थान।

दूसरा दृश्य ।

करुणामयके मकानका भीतरी भाग ।

करुणामय और सरस्वती ।

करुणा०—देखोजी, अब मैं लाचार हूँ। बहुत कुछ ढूँढ़-खोज कर तो मैंने कुँआरे लड़केके साथ लड़कीका व्याह किया और फल यह हुआ कि लड़की विधवाकी तरह गले पड़ी ।

(हिरणमयीका प्रवेश ।)

हिरण०—मा, बाबूजीके लिये खानेको परोसूँ ?

सर०—अरे क्या तू थाली छोड़ कर उठ आई ?

हिरण०—नहीं मा, मैं खा चुकी हूँ ।

सर०—वाह, तूने मुझे बुला कर कुछ मीठा भी न लिया ? कुछ खीर भी न माँगी ? इन्होंने बुलाया था, इस लिये मैं इधर चली आई और जो कुछ मैं दे आई थी वही खाकर तू उठ आई ? आज घरमें चार तरहकी चीजें बनी हैं, सो भी तेरे भाग्यमें नहीं हैं ।

हिरण०—मेरा पेट भर गया है; अब मैं जाकर बाबूजीके लिये परोसती हूँ ।

सर०—अच्छा जाओ ।

[हिरणमयीका प्रस्थान ।

सर०—देखा, यह भी लड़की बड़ी विलक्षण है ? बचपनसे ही इसकी कुछ ऐसी आदत है कि कभी कुछ खानेको माँगती ही नहीं ।

करु०—अच्छी बात है, पराए घर जायगी, न जाने भाग्यमें क्या लिखा है ।

सर०—हाँ तो इस बार तुमने पूरा हाल-चाल ले लिया है न ?

करुणा०—अबकी पण्डित पुरोहितकी तो कुछ बातचीत है ही नहीं। तुम्हें तो मैं पहले ही सब कुछ बतला चुका हूँ। वरको मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। वह सरकारी दफ्तरमें काम करता है; डेढ़सौ रुपया महीना पाता है और हर साल तरक्की भी होती जायगी। पर हाँ, दोष इतना ही है कि उसकी पहली स्त्रीके दो लड़के हैं। लेकिन फिर क्या किया जाय! कुछ देना-लेना नहीं होगा, पर फिर भी पाँचसौ रुपए लग जायँगे। लेकिन यह भी देखता हूँ कि बिना दो बारा रेहनके काम न चलेगा। अभी पहले हीवाले रेहनके सूदका एक पैसा भी नहीं दे सका। साल भरसे किरण बीमार है, वे लोग कुछ खोज-खबर लें चाहे न लें, पर मुझे तो सब कुछ करना पड़ता है। इधर तुम भी बीमार हो गई थीं, बताओ कहाँसे रुपए आवें। अब बिना उधार लिए तो काम चलेगा नहीं।

सर०—वरकी उमर कितनी है? मैं तो समझती हूँ कि कुछ ज्यादा ही होगी?

करुणा०—अरे जो उमर दूसरे ब्याहवाले वरोंकी होती है वही है। बस चालीसके अन्दर अन्दर ही समझो। सुनता हूँ कि वह है बहुत भला आदमी। मैं तो जो कुछ उससे कहता हूँ उसी पर वह राजी हो जाता है।

सर०—लेकिन इतनी जल्दी क्यों हो रही है?

करुणा०—वह ब्याह करके बड़े लाटके साथ शिमले जायगा।

सर०—क्या तुमने दमादको निमंत्रण नहीं दिया था?

करु०—वाह, दमादको कैसे न निमंत्रण देता? मैंने हरीके साथ नलिनको भेजा था, लेकिन मोहितसे भेंट नहीं हुई। मैंने सुना कि तुम्हारी समधिनने लड़कीसे यह भी न कहा कि पानी तो पी लो।

सर०—बातचीत पक्की करने कौन आया था ?

करु०—रिश्तेमें उसका एक बड़ा भाई होता है, वही आया था। वह भी बहुत भला आदमी है। हम लोगोंने खिलाने-पिलानेका कोई बहुत अच्छा इन्तजाम तो नहीं किया था, पर उसने बहुत ही तारीफ की। कहने लगा कि बड़े बड़े राजा-बाबुओंके घर भी खाने-पीनेका ऐसा इन्तजाम नहीं होता। तुम्हारी लड़की देख कर भी वह बहुत प्रसन्न हुआ था। कहता था कि यह बिलकुल राजकन्या है—राजकन्या। मैं जब वरको देखने गया था तब एक मोहर दे आया था। वह जब यहाँ आया तब लड़कीको दो मोहरें दे गया।

सर०—बड़ी जल्दी हुई। कल ही हल्दी चढ़ेगी।

करुणा०—हम लोगोंको कुछ ज्यादा झगड़ा नहीं करना पड़ेगा। गहने मन्द्रे में पाँचसौ रुपए नगद रख दूँगा।

सर०—लेकिन समय जो बहुत कम है।

करुणा०—चौथीके दूसरे दिन ही वरको शिमले जाना होगा।

(दाईका प्रवेश।)

दाई—अजी बाहर दमाद आए हुए हैं।

सर०—सच ?

दाई—हाँ जी हाँ, मैं क्या झूठा बोलती हूँ या उन्हें पहचानती नहीं ? वह क्या खड़े मुँहमें चुरुट लगाए भकाभक धूँआ उड़ा रहे हैं।

करुणा०—आखिर इतनी रातको वह क्या समझ कर आया ?

सर०—हजार हो, फिर भी कुछ समझ आ गई है। उसकी मा ही बुरी है। हम लोगोंने दो बारा उसको बुलानेके लिये नहीं भेजा, इसी लिये शायद वह आप आया।

करुणा०—अरे ठीक समय पर आता तो चार आदमी देखते भी। खैर मैं जाता हूँ, उसे अन्दर भेज देता हूँ। दाई, जरा तुम दीआ ले आओ और चलकर उसे संग लिवा लाओ।

सर०—तुम भी जल्दी आना, रात हो गई है, खाना-पीना होगा।

[करुणामयके पीछे दाईका प्रस्थान।

सर०—लड़की तो दिन-रात सोच-फिकरमें ही पड़ी रहती है; जरा चल कर उसे बना-सँवार दूँ।

[प्रस्थान।

(हाथमें दीआ लिए हुए आगे आगे दाईका और पीछे पीछे मोहितमोहनका प्रवेश।)

दाई—बस बाबू, यहीं बैठ जाओ। भला इतने दिनों पर आज बहूकी याद तो आई।

मोहित०—Damn it, उसे भेज दो।

दाई—अभी बैठो कुछ खा-पी लो। अभी बहुत रात पड़ी है, वह आवेगी न?

मोहित०—नहीं खाने-पीनेकी जरूरत नहीं, उसे भेज दो।

दाई—किरण! इधर आओ, देखो बाबू आए हुए हैं; इन्हें बहुत जल्दी है।

[प्रस्थान।

मोहित०—मोती! मोती! जरासा सब्र करो। इसके गहने उतार कर गुलाम अभी हाजिर होता है। मोती! मोती! मेरी जान मोती! मैं तुम्हारा Health पान करता हूँ। (जेबसे बोतल निकाल कर शराब पीना)।

(आगे आगे दाईका और पीछे पीछे हाथमें खानेको लिए हुए किरणमयी और सरस्वतीका प्रवेश।)

दाई—लो, मैं इन्हें ले आई हूँ। अब रातको यहाँ सोओ।

सर०—लो अब तुम इन्हें खिलाओ पिलाओ । लजाना नहीं, पास बैठ कर अच्छी तरह खिलाना । मैं जाती हूँ; उन्हें भी खिलाना पिलाना है ।

[सरस्वतीका प्रस्थान ।

(घूँघट काढ़े हुए किरणका मोहितके सामने खानेको रखना ।)

मोहित०—Damn it—Damn it ! तुम्हारे गहने क्या हुए ? खानेको उठा ले जाओ—गहना पहन कर आओ । दाईको यहाँसे हटा दो ।

दाई—आज तो बड़े भाग्यका दिन है ।

[दाईका प्रस्थान ।

मोहित०—खड़ी क्यों हो ? जाओ गहने पहन कर खूब सजबज कर आओ । मुझे इस तरह अच्छा नहीं मालूम होता ।

किरण०—मेरे पास गहना तो कोई है ही नहीं । उन्होंने मुझे भेजते समय सब गहने उतार लिए थे । हाँ माने अपने हाथके दोनों कड़े मुझे पहना दिए थे ।

मोहित०—खाली दोनों कड़े, और कोई गहना नहीं ? अच्छा जाओ, वही पहन आओ ।

किरण०—माके पास भी तो कोई गहना नहीं । उनके सब गहने भी तो रेहन पड़ गए हैं ।

मोहित०—Damn it ! तब फिर क्या होगा ! मोती ! मोती ! तुम बड़ी ही निर्दय हो ! ओह ! मेरे तो प्राण निकले जाते हैं ।

किरण०—तुम इस तरहकी बातें क्यों करते हो ?

मोहित०—क्यों, मैं क्या करता हूँ ? यह सब तुम लोगोंकी धोखेबाजी है—सब धोखेबाज हैं ! गहना नहीं है—तुम्हारे पास गहना नहीं है ? अच्छा तो फिर मैं जाता हूँ । ओह ! मोती ! मोती !

अब तो मुझसे कष्ट नहीं सहा जाता! मोती! मोती! तुमने मुझे वनवास दिया! तुम्हें छोड़ कर मैं कहाँ चला आया! अच्छा, मैं जाता हूँ—जाता हूँ। लाओ दो, कड़ेकी जोड़ी ही दो। लाओ देखूँ—मैं तुम्हें ऐसे ही कड़े बनवा दूँगा। लाओ—दो।

(उठ कर फिर गिर पड़ना।)

किरण०—मा! मा! जल्दी आओ!

(जल्दीसे सरस्वतीका और उसके पीछे पीछे दाईका प्रवेश।)

सर०—क्या है? क्या है?

किरण०—देखो, इन्हें क्या हो गया है?

मोहित०—(हाथ बढ़ा कर) दो—दो, नहीं तो हाथ मोड़ कर उतार लूँगा! मोती! मोती! तुम कहाँ हो?

सर०—अरे, इसको क्या हो गया! किसीने इसे कुछ खिला तो नहीं दिया। ये इस तरहकी बातें क्यों करता है—गिर क्यों पड़ा है! दाई! तुम जाओ, जल्दीसे उनको बुला लाओ।

दाई—अरे इन्हें कुछ सरदी-गरमी लग गई है! तुम इनके मुहँमें पानी दो और जरा पंखा झलो।

[दाईका प्रस्थान।

सर०—बेटा मोहित! बेटा मोहित!

मोहित०—Damn it! इसे गहना पहना दो—अभी गहना पहना दो! मा, तुम रुपए देतीं हो तो दो, नहीं तो मैं अभी सन्दूक तोड़ता हूँ—अभी तोड़ता हूँ। रुपए निकालो। गहना पहना दो—इसको गहना पहना दो—अभी पहना दो। लाओ, देखूँ, कड़े देखूँ। मैं इसी तरहके कड़े बनवा दूँगा। दो, दो, जल्दी दो। मोती! मोती!

(करुणामयका प्रवेश)

करुणा०—(शराबकी दुर्गन्ध पाकर) अह ! तुम इसे क्या देख नहीं हो ! जब किरण बीमार हुई थी तब तुम बहुत सोच किया कर ती थीं—बहुत देवी-देवताओंकी मन्नतें माना करती थी, कालीजीके मन्दिरमें तुमने अपना कलेजा चीर कर खून निकाला था । अब फिर मन्नतें मानो—फिर वहीं जाकर अपने कलेजेका खून निकालो । मनाओ मनाओ ।जाकर मनाओ कि किरण मर जाय, तीनों लड़कियाँ मर जायँ, तीनों साथ मर जायँ । तुम जानती हो, इस समय मैं क्या उचित समझता हूँ ? जब हम लोगोंने कन्याओंको जन्म दिया है तब हम लोगोंको तुषाग्निमें जल मरना चाहिए । बस हम लोगोंके लिये यही प्रायश्चित्त है और कोई प्रायश्चित्त नहीं है । हाय, मैंने भी कैसा अनर्थ किया ! मकान रेहन रखा, अपमान सहा, और सब कुछ करके एक शराबीके हाथ लड़कीको सौंपा । किरणकी सास बुरी थी, बुरी न होती तो उसे इतना कष्ट देती ! हाय मैंने यह क्या किया ! लड़कीके हाथ-पैर बाँध कर उसे यंत्रणाके समुद्रमें फेंक दिया। न जाने परमेश्वरने मेरे भाग्यमें और क्या लिखा है ।

सर०—नहीं नहीं, लड़केको किसीने कुछ खिला दिया है, इसीसे इसका यह हाल हो रहा है । तुम जल्दी डाक्टर बुलानेके लिये आदमी भेजो ! हाय, मै क्या करूँ ! पराया लड़का इतने दिनोंके बाद आज मेरे घर क्यों चला आया ! अब तुम खड़े क्यों हो ? देखते नहीं हो, इसका दम अटक रहा है ।

मोहित०—मोती ! मोती ! (हाथ फैलाना) ।

करुणा०—तुम देखती क्या हो ! यह नशेमें बिलकुल बेहोश है । किसी रण्डीके यहाँसे शराब पीकर आया है, उसीको ढूँढ़ रहा है । देखती नहीं हो, किस तरह अण्टाचित पड़ा है ! इसके सिर पर पानी

डालो, पंखा झलो और कल सवेरा होते ही गाड़ी पर चढ़ा कर घर भेज दो। अब तुम समझ लो कि तुम्हारी लड़की विधवा हो गई! विधवासे भी गई बीती हो गई! जानती हो, अब हम लोगोंको क्या करना चाहिए? किरणको ले चल कर गंगाजीमें डुबा देना चाहिए—नहीं तो रोजका कण्टक लगा रहेगा। ओह! अब तो मुझसे यहाँ नहीं ठहरा जाता! मेरा सिर घूमता है। मैं जाता हूँ। तुम डरो मत, यह मरेगा नहीं। तुम्हारी किरणके भाग्यमें ऐसा लिखा ही नहीं है।

सर०—दाई! दाई! जरा आकर इसके सिर पर पानी डालो। वे तो बिगड़ कर चले गए हैं। तुम्हीं जाकर मधुसून बाबू डाक्टरको बुला लाओ। इसकी तबीयत अच्छी नहीं है।

दाई—अजी कहाँकी बात! इन्होंने शराब पी है शराब! देखती नहीं हो, कितनी बदबू आ रही है! मेरी मकानवालीका आदमी भी शराब पीकर इसी तरह किया करता है।

सर०—अरे तो क्या सचमुच मेरी किरणका सर्वनाश हो गया? सचमुच मेरी किरण शराबीके हाथमें पड़ गई! सचमुच पतिके रहते हुए वह विधवा हो गई! हे काली माई! यह तुमने क्या किया! मैंने कितना खुशी खुशी तुम्हें प्रसाद चढ़ाया था—कितना खुशी खुशी किरणका ब्याह किया था! तुम्हें अपने कलेजेका खून चढ़ा कर किरणको फिरसे पाया था! मैंने सोचा था कि ब्याह करके मैं लड़कीके बदले लड़का लूँगी, लेकिन यह क्या अनर्थ हो गया! किरण पेटमें ही क्यों न मर गई! मैं आप ही क्यों न मर गई! मुझे यह दुख देखना पड़ा।

मोहित०—कुछ परवाह नहीं, गहना लाओ—जल्दी लाओ!

(जल्दीसे उठना और मोती मोती कह कर दौड़ना।)

(पीछे पीछे सरस्वती और दाईका जल्दीसे जाना। नेपथ्यमें गिरनेका शब्द।)

नेपथ्यमें सर०—दाई! जाओ, जल्दी उन्हें बुला लाओ।

तीसरा दृश्य ।

करुणामयके मकानका बाहरी भाग ।

(हाथमें झाडू लिए हुए दाईका प्रवेश ।)

दाई—सारी रात कै करता रहा । मारे दुर्गंधके सारा घर भर गया है । अभी बरतन रहने दूँ, चलूँ पहले बाबूके कमरेमें झाड़ू दे आऊँ । इस किरणको जरा भी घिन नहीं मालूम हुई । वह कै करता था ! और यह अपने दोनों हाथों पर रोपती थी । कितना चिल्लाता था ! कान नहीं दिया जाता था । वह क्या गया, बला गई । अगर मेरा ऐसा दमाद होता तो मैं उसका मुँह फूँक देती ।

[प्रस्थान ।

(करुणामयका प्रवेश ।)

करुणा०—छी, छी, मैंने भी देख-सुन कर कैसे पात्रको लड़की दी ! अब तो यही इच्छा होती है कि लड़की विधवा हो जाय ।

(सरस्वतीका प्रवेश ।)

सर०—समधिन आई हैं ।

करु०—क्यों ? क्या लड़का घर नहीं पहुँचा ?

(मातंगिनीका प्रवेश ।)

मातं०—भाई अब तो मुझे लाज रह गई है और न शरम । मेरा तो सत्यानाश हो गया—सब चौका लग गया—मोहितने मुझे भिखारिन बना डाला । रूपचन्द मित्तरके हाथ दो हजार रुपए पर मकान बेंच डाला ।

करुणा०—वह कैसे ?

मातं०—अजी कैसे क्या, रमाने मुझको खबर दी है । उसने मुझे

चौपट कर दिया—कहींका न रखा। अब तुम्हीं मुझे बचाओ तो मैं बचूँ, नहीं तो भिखारिन तो हो ही गई हूँ।

करु०—भला मुझसे इसमें क्या हो सकता है?

मातं०—तुम सब कुछ कर सकते हो। अब तो मेरा मरना जीना सब तुम्हारे हाथमें है। लड़केने जाकर रूपचन्द मित्तरके हाथ मकान बेच डाला है और कचहरीमें जाकर कहा है कि मैं अपनी माका एक ही लड़का हूँ। सारी सम्पत्ति मुझको ही मिलनेको है। अब तो रूपचन्द मित्तरको रुपया भी दे दिया जाय तो भी मकान नहीं मिल सकता।

करु०—रुपएका कुछ इन्तजाम किया है?

मातं०—सब तुम्हींको करना पड़ेगा। तुमने जो कुछ दिया था उससे तो देना-लेना चुकाया गया। जिस कठिनतासे मैं गृहस्थी चलाती हूँ—वह या तो मेरा जी जानता है और या ऊपर परमेश्वर जानता है। उधार लेकर तो दोनों लड़कोंको पढ़ा-लिखा कर बड़ा किया और आदमी बनाया है।

करु०—(स्वगत) आदमी काहेको बनाया है भूत बनाया है। (प्रकाश्य) मुझे तो अब तुम काट डालो तो भी खून नहीं है और कूट डालो तो भी मांस नहीं है।

मातं०—रमाने कहा है कि तुम्हीं मुझे बचा सकते हो। तुम्हारा रुपया पैसा कुछ भी नहीं लगेगा और सब काम भी बन जायगा।

करु०—वह कैसे? रमानाथने क्या कहा है?

[सरस्वतीका प्रस्थान।

(रमानाथका प्रवेश।)

रमा०—महाशय, क्या कहूँ! कुछ कहनेकी बात नहीं है। मैं कैसे वह बात आपसे कहूँ!

करुणा०—तो भी सुनें ।

(लालचन्दका प्रवेश ।)

लाल०—बाबूजी, आप सुनिएगा सुनिएगा ? आप अपनी मझली लड़कीका विवाह मुझसे कर दीजिए। मैं मकान छोड़ देता हूँ और दो जोड़ जड़ाऊ गहने भी देता हूँ। मैं आपकी लड़कीके शरीर पर हाथ भी नहीं लगाऊँगा। मैं बागमें रहनेवाला आदमी हूँ, सिर्फ उसके गलेमें माला पहना कर बगीचे चला जाऊँगा।

करुणा०—ये ही बाबू रूपचन्दके सुपुत्र हैं ?

लाल०—हाँ बाबूजी, मैं ही उनका एक मात्र लड़का हूँ। आपका नाम करुणामय है। आप करुणा-पूर्वक एक बार मेरी ओर देखिए। मैं अगर कूबड़ ढाँक कर बैठ जाऊँ तो मुझसे बढ़कर खूबसूरत आपका बड़ा दमाद न निकलेगा।

मातं०—हाँ हाँ, इसका कहना मान लो, इसमें हर्ज ही क्या है ? नहीं तो मैं कहींकी न रहूँगी।

करुणा०—तुमने अपने लड़केको जन्मते ही नहीं मार डाला, मेरे लिये जीता रख छोड़ा ! मैं न तो अपने दमादको चाहता हूँ और न यह चाहता हूँ कि लड़कीका घर-बार हो। कल तिलक हो चुका है। उस सम्बन्धको तोड़ कर मैं इस कुबड़ेको अपनी लड़की दूँगा ! चार भले आदमियोंमें मैं मुहँ दिखलाने लायक न रह जाऊँगा। हाँ, एक लड़की और कुँआरी रह जायगी सो गलेमें पत्थर बाँध कर उसे गंगाजीमें फेंक आऊँगा।

लाल०—बाबूजी, घर आई हुई लक्ष्मीको लात न मारिए। मैं नगद भी कुछ देता हूँ और बाबूजीसे कह कर इस बातका भी कुछ बन्दोबस्त करा देता हूँ कि जिसमें हर महीने आपको कुछ मिला करे।

करुणा०—तुम मेरे घरमेंसे निकल जाओ।

लाल०—वाह बाबूजी, मैं निकलूँगा क्यों? मैं तो आपका दमाद बनने आया हूँ, मैं क्यों निकलूँगा? और फिर आपने अपनी बड़ी लड़की कौन बड़े सुपात्रको दी है? एक पल्ले पर मेरा कूवड़ रखिए और दूसरे पर अपने दमादकी बुद्धि रखिए और तब तोल कर देखिए कि दोनोंमें कौन भारी है? उसके घरमें जो कुछ चक्की-चूल्हा था वह सब तो मेरे हाथमें आ गया है; अब उसके पास रखा क्या है! और अगर आप यह सम्बन्ध कर दीजिए तो सब तरहसे आपके लिये अच्छा ही अच्छा है और बुराई कुछ भी नहीं है।

मातं०—भाई, तुम किसी तरह मेरी रक्षा करो।

लाल०—अजी तुम चुप भी रहो, मैंने रुपएका सुर अलापना शुरू किया है। भला इसमें तुम्हारा यह बेढंगा सुर कैसे लगेगा?

करुणा०—क्या बाबू रमानाथ यह सम्बन्ध लाए हैं?

रमा०—जी नहीं, मैं तो नहीं लाया, पर फिर भी इतना अवश्य है कि यदि यह सम्बन्ध हो जाता तो हर तरहसे अच्छा ही था।

करुणा०—अच्छा तो फिर तुम लोग मेरे मकानसे निकल जाओ।

लाल०—वाह साहब! आप इतना बिगड़ते क्यों हैं? अन्तमें आपको ही सिर झुका कर मेरे पास आना पड़ेगा; मैं इस तरह छोड़ने-वाला असामी नहीं हूँ।

करुणा०—जाओ, यहाँ इस तरहकी बेहूदा बातें मत करो।

लाल०—बाबूजी, इसमें वाहियातपना कैसा! मैं कुछ यह तो कहता ही नहीं कि आप इसी समय अपनी लड़की दे दीजिए। आप खाली ब्याह करनेके लिये राजी हो जाइए और मैं आनन्दसे घर चला जाऊँ और तिलककी तैयारी हो।

करुणा०—(पास पड़ी हुई लाठी उठा कर) जाओ—निकलो।

लाल०—मैं जाता हूँ बाबूजी—जाता हूँ । आप इतना बिगड़ते क्यों हैं ?

करुणा०—निकल जाओ, सब लोग निकल जाओ ।

रमा०—अच्छा साहब, कोई हरज नहीं है । मैं भी आपका यह हाथ-पैर हिलाना देख लूँगा ।

लाल०—नहीं भाई, इस समय देखने दिखानेकी कोई जरूरत नहीं है । जब देखना तब देखना, अभी चुपचाप चले चलो ।

[रमानाथ और लालचन्दका प्रस्थान ।

मातं०—यह तुमने क्या किया ? बड़ा अनर्थ हो जायगा । मैंने सुना है कि वे मोहितको पुलिसके सपुर्द कर देंगे, तुम्हारी बड़ी लड़कीके लिये कहीं पैर रखनेका भी ठिकाना न रह जायगा ।

करुणा०—यह तो मैंने उसी दिन समझ लिया था जिस दिन उसका व्याह हुआ था । कल लड़कीके बदनके गहने चुरानेके लिये तुम्हारा लड़का यहाँ आया था; पर बहुत ही निराश हो कर चला गया । और आज तुम आई हो यह सम्बन्ध तोड़ने । मेरी बड़ी लड़की विधवा हो चुकी, अब तुम घर जाओ ।

मातं०—अरे मेरा मोहित बड़ा लाड़ला—बहुत साधका पाला हुआ है । सुनती हूँ, वे लोग उसे थानेमें भेज देंगे, तब फिर मुझे मोहित न मिल सकेगा । उपाय रहते तुम अपनी लड़की विधवा मत करो ।

करुणा०—अरे भाई, मैं तिलक दे चुका हूँ । इस समय हल्दीकी तैयारी है और सन्ध्याको बरात आवेगी । तुम आधा मकान छोड़ दो, जहाँ तक हो सकेगा मैं रूपचन्द मित्तरको समझाऊँ-बुझाऊँगा, उसके हाथ-पैर जोडूँगा । अगर वह न सुने तो लाचारी है, लेकिन तुम दया करो, मैं यह सम्बन्ध नहीं तोड़ सकता ।

मातं०—अरे बापरे, कैसे नीचोंसे काम पड़ा है! यह लड़की-दमाद्का भी भला नहीं चाहता! कैसा चमार है! हाय! अब क्या होगा! मैंने क्यों इस नीचके घर अपने लड़केका ब्याह किया!

करुणा०—भाई, तुम सीधी तरहसे अपने घर आओ, तुम औरत ठहरीं, मैं तुमसे ज्यादा और क्या कहूँ! मेरा काहेका दमाद और कैसा दमाद? जिस दिन मैंने तुम्हारे लड़केके साथ अपनी लड़कीका ब्याह किया उसी दिनसे मेरी लड़की विधवा हो गई।

[करुणामयका प्रस्थान।

मातं०—इतना अहंकार—इतना अहंकार! अरे इतना अहंकार तो ईश्वरसे भी न सहा जायगा!

[मातंगिनीका प्रस्थान।

चौथा दृश्य।

करुणामयके मकानका भीतरी भाग।

किरणमयी और मंगली।

मंगली—तुम रोती हो तो रोओ; मैं भी रोई हूँ—खूब रोई हूँ। लेकिन अब मैंने समझा कि रोनेसे क्या होगा? मैं ही रोऊँगी, और तो कोई नहीं रोएगा न! इसी लिये मैं अब नहीं रोती, आनन्दसे गीत गाती फिरती हूँ।

किरण०—बहन! मेरे समान और भी कोई दुखिया है? और भी कोई पतिके रहते इस तरह विधवा हुई है? मेरा तो सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। कल मेरे स्वामी आए थे; मैं सुन कर फूली न समाई। बड़ी आशासे मैं उनके पास गई, मैंने समझा कि इतने दिनों पर उन्होंने इस दासीको याद तो किया, अब वे मुझे अपने चरणोंमें

स्थान देंगे, लेकिन उनके व्यवहारसे तो मेरा कलेजा चूर चूर हो गया, तो भी मैंने अपने आपको समझाया कि मैंने आँखोंसे उन्हें देखा तो, उनकी बातें तो सुनीं ? उन्होंने मुझे अपने पैरसे ठुकरा दिया ? पर क्या हुआ; मैं हूँ तो उनकी दासी ही; कभी-न-कभी उनसे फिर भेंट होगी, फिर बातें होंगी, कभी तो मैं उनकी सेवा कर सकूँगी ? और न भी कर सकूँ तो भी एक दिन तो मैंने उन्हें देख लिया है, बस उन्हींका स्मरण करूँगी—उन्हींका ध्यान करूँगी। लेकिन बहन, सवेरे उठ कर मैंने सुना कि लोग उन्हें पकड़ कर थानेमें ले जायँगे और उन्हें चोर डाकुओंके साथ रक्खेंगे। वे सदा अपनी माके बहुत दुलारे रहे हैं, थानेमें जाकर वे कैसे बचेंगे ? मेरी सारी आशाओं पर पानी फिर गया, अब उनके दर्शन मुझे न होंगे।

मंगली—तुमने अपनी मासे यह हाल कहा था ?

किरण०—मा जानती हैं, बाबूजी भी जानते हैं, लेकिन उपाय क्या है ? बाबूजी कहते हैं कि मेरी लड़की विधवा हो गई। वे बहनके ब्याहमें फँसे हुए हैं; मेरे दुःखकी बात तो उन्होंने एक बार भी अच्छी तरह नहीं सुनी। मैं तो समझती हूँ कि संसारमें कोई ऐसा नहीं है जो मेरे दुःखसे दुखी हो। भला मैं न रोऊँगी तो और कौन रोएगा।

मंगली—रोओ, रोओ,—खूब रोओ। क्यों जी, तुम्हारे स्वामीको पकड़ ले जायँगे ? तब तो तुम मुझसे भी बढ़कर दुखिया हो। मैं भला अपने स्वामीके दर्शन तो करती हूँ, उनके साथ बातें तो करती हूँ, भीख माँग कर जो कुछ मिलता है उसमेंसे उन्हें भी कुछ देती हूँ। हाय ! तुम्हारे स्वामीको पकड़ ले जायँगे। तुम रोओ—रोओ !

किरण०—तुम्हारे भी स्वामी हैं ? तुम्हें उनके दर्शन होते हैं ? तब तो तुम बहुत ही सुखी हो। मैं तुम्हें कंगाल समझती थी; पर तुम कंगाल नहीं हो, मैं ही कंगाल हूँ।

मंगली—तुम सचमुच कंगाल हो। तुम मेरी तरह इधर उधर घूम फिर नहीं सकतीं, अपने स्वामीके दर्शन नहीं कर सकतीं, अपने मनका दुःख किसीसे नहीं कह सकतीं, तुम्हें मन-ही-मन कुढ़ना पड़ता है। तुम कहीं रहती हो, तुम्हारे पति कहीं रहते हैं। तुम रोओ—रोओ। अब मैं तुम्हें रोनेके लिये मना नहीं करूँगी, बल्कि तुम्हारे साथ साथ मैं भी रोऊँगी। मैं तुम्हारे पतिको रोज देख आया करूँगी और उनका हाल तुम्हें सुना जाया करूँगी। तुम रोओ—रोओ। तुमने ठीक कहा था, तुम्हारा जन्म रोनेके लिये ही हुआ है।

किरण०—आहा, तुम्हारे पति हैं और तुमसे बात-चीत करते हैं! तब फिर तुम क्यों इस तरह इधर-उधर घूमा करती हो! अपने स्वामीके पास क्यों नहीं रहतीं?

मंगली—मेरे पति क्या मुझे पहचानते हैं? मुझे तो उन्होंने ब्याहके समय मंडपमें ही देखा था और एक दिन शराबके नशेमें लाठी मारी थी।

किरण०—क्यों जी तुम अपनी ससुरालमें क्यों नहीं रहतीं?

मंगली—मेरी ससुराल है ही कहाँ? घर-बार तो शराबके पीछे बिक गया। मेरी सास मर ही चुकी हैं। और वे दूसरेके मकानमें रहते और इधर उधर घूमा करते हैं।

किरण०—तब तुमने उन्हें किस तरह पहचाना?

मंगली—किस तरह पहचाना! तुम भी ऐसी बात कहती हो? तुमने अपने पतिको किस तरह पहचाना? जिस दिन तुम्हारा ब्याह हुआ था उस दिन तुम यह सोच सोच कर कैसी सुखी होती थीं कि हमारे पति बहुत अच्छे हैं! मैं उनके पास बैठी और मैंने उनका मुँह देखा। अब तो तुम समझ गईं कि मैंने उन्हें कैसे पहचाना? उस बातको याद करके सुख होता है—सोच कर सुख होता है—

पतिके घरमें जो दुःख मिला था उसमें भी सुख था, पतिने जो मुझे लाठी मारी थी उसमें भी सुख था, पतिसे ही सारा सुख है । भला उस सुखको कौन भूल सकेगा?

किरण०—तुम ठीक कहती हो। अब तो मेरे मनमें यही होता है कि बाबूजी क्यों मुझे यहाँ ले आए! यदि मैं ससुरालमें मर जाती तो भी मेरे लिये अच्छा ही था; तो भी मैं अपने पतिके दर्शन तो कर सकती! तो भी मैं उनकी सेवा तो कर सकती! सास मुझे दुःख देती तो दिया करती—पर वह दुःख मेरे इस दुःखसे बढ़कर तो न होता! यदि मैं वहीं रहती तो कभी-न-कभी तो वे मेरी ओर देखते, कभी-न-कभी तो मुझ पर दया करते, कभी-न-कभी तो मुझे अपनी दासी समझ कर अपने चरणोंमें स्थान देते! यदि मैं घर पर रहती तो वे इतना अधिक तो न बिगड़ जाते! मैं सोचती हूँ कि बाबूजी मुझे क्यों ले आए! उन्होंने मुझे कौन सुखमें रखा है और आगे कौन सुखमें रखेंगे! यदि मेरे पति कैद हो जायँगे तो मैं किस तरह अपने मुँहमें अन्न डालूँगी! हे ईश्वर, यह क्या हो गया—और आगे क्या होगा!

मंगली—सुनो बहन, मेरी माने एक बात कही थी; आज मैं वही बात तुमसे कहती हूँ। सुनो, माने कहा था कि जब तुझ पर बहुत दुःख पड़े तब तू मधुसूदनको पुकारियो। मैं पहले भी उन्हीं मधुसूदनको पुकारा करती थी और अब भी उन्हींको पुकारती हूँ। मधुसूदन मुझे गीत सिखाते हैं, वही गीत गाकर मैं अपने मनमें सदा प्रसन्न रहती हूँ। मैं अपने पतिको घूम घूम कर ढूँढ़ा करती थी; मधुसूदनने एक दिन मुझे उनके दर्शन करा दिए । तुम भी मधुसूदनको पुकारो, क्योंकि और तो कोई तुम्हारा है ही नहीं । जो अपने पतिको न देख सके, समझ लेना चाहिए कि उसका कोई नहीं

है, केवल मधुसूदन ही है। तुम उन्हींको पुकारो, उन्हींके आगे रोओ। देखो, मुझे रह-रह कर आशा होती है कि किसी-न-किसी दिन मेरे पति मेरी सुधि लेंगे, किसी-न-किसी दिन मेरा घर बसेगा। तुम भी उन्हींको पुकारो, तुम्हारे मनमें भी यह आशा बँधेगी। मधुसूदन किसीके सामने नहीं आते, पर जो कुछ कहना होता है आकर मन-ही-मन कह जाते हैं और मन-ही-मन आशा बँधाते हैं। बहन, चाहे और किसीको आशा बँधावें या न बँधावें, पर मुझे अवश्य बँधाते हैं। मैं उनके नाम पर गीत बनाती हूँ और जब मनमें बहुत दुःख होता है तब एकान्तमें बैठ कर वही गीत उन्हें सुनाती हूँ।

किरण०—बहन, तुम इतना होने पर भी बहुत सुखी हो। तुम्हारे मनमें फिर भी आशा तो है, मैं तो निराशाके समुद्रमें पड़ी हुई हूँ। मैं जिधर देखती हूँ, उधर ही मुझे देख कर मेरी मा भी कुढ़ती हैं और बाबूजी भी कुढ़ते हैं। सब तरफ कलंक—सब तरफ स्वामीकी निन्दा ही सुनाई पड़ती है। लोग हँसते हैं और घृणा करते हैं। घर मुझे बिलकुल जंगल मालूम होता है। (नेपथ्यमें बाजोंकी आवाज सुन कर) वह देखो, बाजे बज रहे हैं। मुझे तो अपने विवाहके समयका बाजा याद आ गया! आज भी वही बाजा बज रहा है, परन्तु मेरे स्वामी कहाँ हैं? वे तो इस समय विपत्तिके समुद्रमें पड़े हुए हैं। मंगली, अब मैं अपने दुःखसे कातर नहीं हूँ। यदि कोई इस विपत्ति सागरसे मेरे स्वामीका उद्धार करे तो मैं सदा उसकी दासी होकर रहूँ। लेकिन मुझे तो किसी तरफ कोई आसरा नहीं दिखाई देता। व्यर्थ ही मेरा जन्म हुआ। मैं जिस दिन मरूँगी, उस दिन भी कौन जाने मुझे शान्ति मिलेगी या नहीं।

मंगली—मैं जाती हूँ और तुम्हारे स्वामीको देख आती हूँ। मैं तुम्हें रोज आकर उनकी खबर दिया करूँगी। मैं मधु-

सूदनको तुम्हारा सारा हाल सुनाऊँगी । कहूँगी कि—"मधु-सूदन! मेरी ही तरह एक और भी दुखिया है। उसका दुःख दूर करनेका कोई उपाय करो। अब बताओ, इससे अधिक मैं तुम्हारे लिये और क्या कर सकती हूँ? मैं तुम्हारा दुःख सुना करूँगी और तुम्हारे साथ बैठ कर रोऊँगी । तुम जाओ, तुम्हारी ही बहन है न। न जाने उसके भाग्यमें क्या लिखा है? अच्छा तुम जाओ, उसीका सुख देख कर सुखी हो। तुम्हारा अपना सुख तो चला गया; अब क्या करोगी? तुम जाओ, नहीं तो लोग तुम्हारी निंदा करेंगे। तुम्हारे बाबूजी बिगड़ेंगे, तुम्हारी मा बिगड़ेंगी । जब ब्याह हो जाय तब तुम अपनी माके आगे अपना सारा दुखड़ा रोना । अगर कोई उपाय होगा तो तुम्हारे बाबूजी करेंगे । मा-बाप पर मनमें नाराज मत होना। वे लोग गरीब हैं। तुम्हारे बाबूजी रोज कमा कर लाते और रोज खाते हैं। बताओ, तब तुम क्या करोगी? जाओ, आँसू पोंछ डालो और अपनी बहनका ब्याह देखो । मैं फिर तुम्हारे पास आऊँगी ।

[किरणमयीका प्रस्थान ।

मंगलीका गाना—

यह गीत नहीं रोनेकी धुनि है, तान नहीं रोनेका सिसका ।
पितु-मातु तो दान करें कन्या, पर दान नहीं बलिदान है उसका ॥
फिर बाप कहाँ औ मातु कहाँ, उस प्यारी वधूकी वो चाह कहाँ ।
धन देकर बेच दिया मानो, अधिकार दुलार सभी खिसका ॥
जिसके घर अबला आह भरे, उसमें कमला नहीं पैर धरे ।
जिस देशमें नारि-नयन बरसे, धनधान्य सुभाग कहाँ उसका ॥

[मंगलीका प्रस्थान ।

पाँचवाँ दृश्य।

रास्ता।

इन्स्पेक्टर और मंगलीका प्रवेश।

इन्स०—क्यों री पगली, तुझे कैसे मालूम हुआ?

मंगली—मैं मोहितकी खबर जो रखती हूँ। उसका ब्याह किरणसे हुआ है न!

इन्स०—किरण कौन?

मंग०—वह बड़ी दुखिया है। मेरी जैसी पगली तो फिर भी अच्छी होती है। उसके सामने उसके पतिको लोग पकड़ ले जायँगे तब तो वह यों ही मर जायगी।

इन्स०—लेकिन उसका स्वामी तो उसके पास जाता ही नहीं। वह तो रात दिन वेश्याको लिए पड़ा रहता है।

मंग०—इससे क्या होता है? वह तो हिन्दूके घरकी लड़की है। यदि पति उसे न चाहे तो क्या वह भी पतिको न चाहे? अगर तुम इतना भी नहीं जानते तो फिर पुलिसमें क्या काम करते हो? तुम कैसे हिन्दू हो? क्या तुम नहीं जानते कि हिन्दू स्त्रियोंके लिये संसारमें पतिके सिवा और कुछ है ही नहीं? हिन्दू स्त्रियोंको पतिको देखनेमें सुख मिलता है, उसका ध्यान करनेमें सुख मिलता है, उसके साथ बात करनेमें सुख मिलता है; यदि वह गाली दे या मारे तो उसमें भी उसे सुख ही मिलता है। उसके लिये स्वामी ही सारा सुख है। हिन्दू स्त्रीके लिये स्वामीके सिवा संसारमें और क्या है? जिसका पति न हो उसका मर जाना ही अच्छा है। यदि पति बुरा भी हो तो भी वह पति ही तो है।

इन्स०—पगली, तुझे इतनी बातें कैसे आईं ?

मंग०—क्यों, क्या मैं स्त्री नहीं हूँ ? क्या मेरा ब्याह नहीं हुआ ? क्या मैंने पतिको नहीं देखा है ? क्या मैंने उनके साथ बातें नहीं की हैं ? यदि पति बुरा भी हो तो क्या वह पराया हो जाता है ? नहीं नहीं, बाबूजी, तुम किरणको बचाओ । वह बड़ी ही दुखी है, वह मर जायगी ।

इन्स०—अच्छा, तुम जाओ । आज तुमने कुछ खाया है कि नहीं ?

मंग०—नहीं ।

इन्स०—जाओ, मेरे घर खा आओ । तुमने दिन भर कुछ खाया क्यों नहीं ?

मंग०—मैं यों ही घूमा करती हूँ । तुम मोहितको छोड़ दोगे तो मैं किरणको जाकर खबर दूँगी, उसके मुँह पर थोड़ी हँसी देखूँगी, तब खाऊँगी । नहीं तो मुझसे खाया न जायगा ।

इन्स०—तुम कुछ चिन्ता मत करो । मैं सब बदमाशोंको पकड़ कर थानेमें ले जाऊँगा ।

मंग०—नहीं नहीं, तुम रमानाथको न पकड़ना ।

इन्स०—क्यों इसमें तुम्हारा क्या हर्ज है ? क्या उसकी स्त्री भी रोएगी ?

मंग०—हाँ हाँ, वह भी मर जायगी ।

इन्स०—अच्छा, जाओ । मैं उसे भी न पकड़ूँगा ।

मंग०—नहीं पकड़ोगे न ?

इन्स०—(स्वगत) मैं नहीं जानता था कि इस पगलीमें इतने गुण हैं । इसी लिये न सरोज इसको इतना मानती है । (प्रकाश्य) अच्छा पगली, तुम सरोजको चाहती हो ?

मंग०—तुम्हारी स्त्री सरोजको ? मैं तो उसे बहुत चाहती हूँ। उससे भी बढ़कर मैं तुम्हारे लड़केको चाहती हूँ। तुम्हारे लड़केको जब मैं गोदमें लेती हूँ तब मुझे यही मालूम होता है कि यह मेरा ही लड़का है।

इन्स०—अच्छा जाओ। तुम कुछ चिन्ता न करना। मैं जाता हूँ।

[एक ओर इन्सपेक्टरका और दूसरी ओर मंगलीका प्रस्थान।

छठा दृश्य।

करुणामयके मकानका चौक।

करुणामय, मुकुन्दलाल (वर), वराती, घराती और पुरोहित आदि।

करुणा०—अच्छा तो लग्नका समय हो रहा है, सब लोग चलें कन्यादान हो।

सब—हाँ हाँ, अवश्य।

पुरोहित—अच्छा तो आप वरको उठाइए।

(करुणामयका वरको उठाना।)

(रमानाथ और लालचन्दका प्रवेश।)

लाल०—अरे जरा ठहर जाइए साहब। पहले वरका तो ठीक हो लेने दीजिए। (मुकुन्दलालसे) भाई, यहाँ तुम वर नहीं हो मैं वर हूँ।

सब—हैं ! यह क्या ?

लाल०—बोस बाबू, उस दिन आप बहुत रंग बाँधते थे, अब आप इन्हें विदा कीजिए और लड़की मुझे दीजिए। और नहीं तो फिर देखिए, अभी आपके बड़े दामादके हाथमें हथकड़ी पड़ती है। जमादार साहब, जरा इधर आइए।

(मोहितमोहनको हथकड़ी पहनाए हुए जमादार और सिपाहियोंका प्रवेश ।)

जमा०—साहब ! हम इन्हें थानेमें ले जायँगे । रातको इनकी जमानत नहीं होगी, आप इन्हें यहाँ क्यों लिवा लाए हैं ?

मोहित०—(करुणामयसे) बाबूजी, आप मेरी रक्षा कीजिए, मुझे बचाइए । मैं गिरफ्तार हो गया हूँ, ये लोग मुझे थानेमें ले जायँगे । जमादारके हाथ-पैर जोड़ कर मैं उन्हें यहाँ लाया हूँ ।

करुणा०—हैं ! यह क्या अनर्थ हो गया ? जमादार साहब ! यदि आपने इसे गिरफ्तार किया है तो फिर यहाँ क्यों ले आए ?

जमा०—साहब यह बहुत रोते-गाते थे । मैं भले आदमियोंको ज्यादा तंग नहीं करता । यह कहने लगे कि मैं अपनी स्त्रीसे भेंट करूँगा, इसी लिये मैं इन्हें यहाँ ले आया ।

करुणा०—आपने अच्छा ही किया, लेकिन अब आप इसे ले जाइए ।

मोहित०—बाबूजी, मेरी रक्षा कीजिए—मुझे बचाइए ।

करुणा०—मैंने सब समझ लिया । जमादार साहब, आप इसे ले जाइए । इस समय मेरी लड़कीका व्याह है, क्यों व्यर्थ बीचमें गड़बड़ करते हैं ?

लाल०—वाह साहब ! आप अपने दमादको फँसा देंगे ? सीधी तरहसे काम क्यों नहीं निकालते ? इस घुने हुए कुन्देको विदा कीजिए । मैं चल कर मंडपमें बैठता हूँ, सब झगड़ा आप ही मिट जायगा ।

करुणा०—साहब, आप लोग मेरी इज्जत बचाइए, इन लोगोंको किसी तरह विदा कीजिए । मुझसे खड़ा नहीं रहा जाता, मेरा सिर घूमता है । हे परमेश्वर !

(करुणामयका गिरने लगना और किशोरका उन्हें पकड़ लेना ।)

किशोर—बाबूजी, आप शान्त हों ।

करुणा०—बेटा किशोर, इन लोगोंको विदा करो और इस कष्टसे मुझे बचाओ।

लाल०—बाबूजी, आप भी कैसे बेवकूफ हैं! इस सूखे हुए कुन्देको फूलकी माला पहना रहे हैं। आप मुझे क्यों नहीं पसन्द करते? यह कूबड़ तो कपड़ेसे ढका हुआ है। उसे छोड़ कर और सब तरहसे तो मैं ठीक ही हूँ।

मोहित०—बाबूजी, आप मेरी रक्षा कीजिए, अपनी कन्याको विधवा मत कीजिए। अगर मैं थानेमें जाऊँगा तो मर जाऊँगा। आप अगर लालचन्दके साथ अपनी कन्याका विवाह कर दें तो यह मुझे छोड़ देंगे। और आपको भी पाँच हजार रुपए देंगे।

लाल०—बाबूजी, देखिए, यह नगद पाँच किता नोट हैं, और फिर मैं आपकी लड़कीको भी जड़ाऊ गहनोंसे लाद दूँगा।

करुणा०—किशोर, पानी!

किशोर—अरे भाई पानी लाओ—पानी लाओ।

(माथे पर हाथ रख कर करुणामयका बैठना, एक आदमीका पानी लाना और उन्हें पिलाना।)

रमा०—बोस बाबू, आप जरा ठंडे होइए और सब बातोंको अच्छी तरह समझ बूझ लीजिए। क्यों व्यर्थ सब तरफसे अपनी खराबी करते हैं! (वरसे) बाबू साहब, आप भी जरा समझ बूझ लीजिए। एक भला आदमी बिना गृहस्थीका हो रहा है और आपके तो लड़के बाले मौजूद हैं। आप इस व्याहका ध्यान छोड़ दीजिए। और यदि इस उमरमें आप व्याह नहीं करेंगे तो क्या हो जायगा? अगर आप नहीं मानेंगे तो बोस बाबूकी बड़ी खराबी होगी। आप तो समझदार हैं, आरामसे अपने घर जाकर बैठिए।

वर—भाई अगर मेरे चले जानेसे इनका भला हो तो मैं जानेके लिये तैयार हूँ ।

लाल०—हाँ साहब, क्यों नहीं ! मैं देखता हूँ कि आप बड़े समझ-दार हैं—आपमें अक्ल है । आप तो बुड्ढे हो चले हैं, आप क्यों मुझे वंचित करके यह ब्याह करने आए हैं ? मेरी जोड़ी तैयार है, उसी पर सवार होकर आप चले जाइए और जाकर घर पर आरा-मसे सोइए ।

रमा०—हाँ साहब, आपको मुनासिब तो यही है । बोस बाबू संकोचके मारे कुछ कह नहीं सकते । आप तो देखते ही हैं कि उन पर कैसी आफत आई है ।

वर—भाई, मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है । यदि वे अपनी कन्या किसी दूसरेको देना चाहें तो बड़ी प्रसन्नतासे दे सकते हैं ।

करुणा०—(उठ कर) वाह जी, तुम भी कैसी बातें करते हो ? तुम वाग्दत्ता कन्याको छोड़ कर चले जाना चाहते हो ? मैं कन्यादान करूँ या न करूँ, पर मेरी कन्या तुम्हारी पत्नी हो चुकी ।

(लालचन्दका गाल पर हाथ रख कर बैठ जाना ।)

करुणा०—ओ चाण्डाल ! ओ नराधम ! तू मुझे यह डर दिखलाता है कि मेरा दामाद जेल चला जायगा ? तू मुझे रुपएका लोभ दिख-लाता है ? तू मुझे ऐसा नराधम समझता है कि मैं अपनी वाग्दत्ता कन्या किसी दूसरेको दे दूँगा ? दामादकी कौन कहे, यदि मेरी मृत्यु भी हो जाय, मेरा सारा परिवार मेरी आँखोंके सामने जला दिया जाय, मेरा सर्वनाश हो जाय, नराधम ! तो भी क्या तू सम-झता है कि मैं तेरे जैसे पापीको अपनी कन्या दूँगा ? चल—दूर हो ।

लाल०—रामू मामा ! मैंने तो पहले ही कह दिया था कि यह बड़े बेढ़ब आदमी हैं ।

करुणा०—जमादार तुम अपने असामीको ले जाओ।

जमा०—चलो भाई अब मैं यहाँ नहीं ठहर सकता। यह तुम्हारी जमानत नहीं करेंगे।

मोहित०—बाबूजी मेरी रक्षा कीजिए—मुझे बचाइए।

जमा०—चलो।

(मोहितको लेकर जमादारका चलने लगना।)

(किरणमयीका तेजीके साथ आना।)

किरण०—जमादार साहब! जमादार साहब! आप मेरे स्वामीको छोड़ दीजिए। लाल बाबू! लाल बाबू! आप एक अबलाकी रक्षा कीजिए, इस दुखिया पर दया कीजिए। मैं जन्मभर आपके घर दासी हो कर रहूँगी। मैं घर घर भीख माँगूँगी और अपने स्वामीका देना चुकाऊँगी।

लाल०—अरे भाई, तुम मुझसे इतनी बातें क्यों कहती हो? यही सब बातें अपने बाबूजीसे क्यों नहीं कहतीं? तुम्हीं देखो—ईमानसे कहो, कि इस कुन्देसे बढ़कर मैं सुन्दर नहीं हूँ? तुम्हीं अपने बाबूजीको समझा-बुझा कर इस मामलेको तै करा दो। मैं एक पैसा भी नहीं चाहता। मैं तुम्हें भी एक जोड़ गहना दूँगा, तुम्हारी माँको भी एक गहना दूँगा और तुम्हारे बाबूजीको यह देखो—करकराते नोट।

करुणा०—हे परमेश्वर! यह क्या हो गया!

किरण०—जमादार साहब! जमादार साहब! आप मेरे स्वामीको छोड़ दीजिए। मैं जनमकी दुखिया हूँ; आप मुझ पर कृपा कीजिए। जमादार साहब! आप निठुर न होइए। छोड़ दीजिए—मेरे स्वामीको छोड़ दीजिए, आप मेरे जीवनदाता हैं।

जमा०—नहीं भाई इन्हें कैसे छोड़ सकता हूँ ? मैं सरकारी नौकर ठहरा, असामीको नहीं छोड़ सकता । तुम इन्हें जाने दो । चलो, भाई चलो ।

[मोहितमोहनको लेकर जमादार और सिपाहियोंका प्रस्थान ।

किरण०—लाल बाबू !-लाल बाबू ! आप मुझ पर दया कीजिए, मेरे स्वामीको छुड़वा दीजिए । हाय ! यह तो उन्हें ले चले !

(किरणमयीका मूर्च्छित होकर गिर पड़ना ।)

किशोर—दाई ! दाई ! कह दो कि लोग इन्हें उठा कर अन्दर ले जायँ । (वरसे) महाशय, आप यह सब आफत तो देख ही रहे हैं । (पुरोहितसे) पण्डितजी, आप इन लोगोंको मण्डपमें ले चलिए । (करुणामयसे) बाबूजी ! बाबूजी ! आप शान्त हों ।

पुरोहित—(करुणामयसे) चलिए, चलिए । चल कर कन्यादान कीजिए, नहीं तो मुहूर्त्त निकल जायगा ।

[करुणामय और वरको लेकर कुछ वरातियोंका प्रस्थान ।

(सरस्वती, मंगली और दाईका प्रवेश ।)

सर०—उठो बेटी, उठो, अब क्या करोगी !

मंग०—उठो न, यहाँ पड़े रहनेसे क्या होगा ?

किरण०—हाय, ले गए—उन्हें पकड़ कर ले गए ।

सर०—चलो बेटी चलो । हमारे करम ऐसे ही थे ।

[सरस्वती आदिका किरणमयीको लेकर प्रस्थान ।

लाल०—रामू मामा ! यहाँ तो सब गुड़ गोवर हो गया ।

(मोहितमोहनको लिए हुए इन्सपेक्टर, जमादार और सिपाहियोंका पुनः प्रवेश और उन्हें देख कर लालचन्द और रमानाथका खिसकने लगना ।)

इन्स०—लाल बाबू ! जरा ठहरिए । यदि बोस बाबू आपके साथ अपनी कन्याका विवाह कर दें तब तो आप इन्हें छुड़ा देंगे न ?

लाल०—हाँ हाँ, क्यों नहीं छुड़ा दूँगा !

करुणा०—जमादार तुम अपने असामीको ले जाओ ।

जमा०—चलो भाई अब मैं यहाँ नहीं ठहर सकता । यह तुम्हारी जमानत नहीं करेंगे ।

मोहित०—बाबूजी मेरी रक्षा कीजिए—मुझे बचाइए ।

जमा०—चलो ।

(मोहितको लेकर जमादारका चलने लगना ।)

(किरणमयीका तेजीके साथ आना ।)

किरण०—जमादार साहब ! जमादार साहब ! आप मेरे स्वामीको छोड़ दीजिए । लाल बाबू ! लाल बाबू ! आप एक अबलाकी रक्षा कीजिए, इस दुखिया पर दया कीजिए । मैं जन्मभर आपके घर दासी हो कर रहूँगी । मैं घर घर भीख माँगूँगी और अपने स्वामीका देना चुकाऊँगी ।

लाल०—अरे भाई, तुम मुझसे इतनी बातें क्यों कहती हो ? यही सब बातें अपने बाबूजीसे क्यों नहीं कहतीं ? तुम्हीं देखो—ईमानसे कहो, कि इस कुन्देसे बढ़कर मैं सुन्दर नहीं हूँ ? तुम्हीं अपने बाबूजीको समझा-बुझा कर इस मामलेको तै करा दो । मैं एक पैसा भी नहीं चाहता । मैं तुम्हें भी एक जोड़ गहना दूँगा, तुम्हारी माँको भी एक गहना दूँगा और तुम्हारे बाबूजीको यह देखो—कर कराते नोटा ।

करुणा०—हे परमेश्वर ! यह क्या हो गया !

किरण०—जमादार साहब ! जमादार साहब ! आप मेरे स्वामीको छोड़ दीजिए । मैं जनमकी दुखिया हूँ; आप मुझ पर कृपा कीजिए । जमादार साहब ! आप निष्ठुर न होइए । छोड़ दीजिए—मेरे स्वामीको छोड़ दीजिए, आप मेरे जीवनदाता हैं ।

जमा०—नहीं भाई इन्हें कैसे छोड़ सकता हूँ ? मैं सरकारी नौकर ठहरा, असामीको नहीं छोड़ सकता । तुम इन्हें जाने दो । चलो, भाई चलो ।

[मोहितमोहनको लेकर जमादार और सिपाहियोंका प्रस्थान ।

किरण०—लाल बाबू ! लाल बाबू ! आप मुझ पर दया कीजिए, मेरे स्वामीको छुड़वा दीजिए । हाय ! यह तो उन्हें ले चले !

(किरणमयीका मूर्च्छित होकर गिर पड़ना ।)

किशोर—दाई ! दाई ! कह दो कि लोग इन्हें उठा कर अन्दर ले जायँ । (वरसे) महाशय, आप यह सब आफत तो देख ही रहे हैं। (पुरोहितसे) पण्डितजी, आप इन लोगोंको मण्डपमें ले चलिए । (करुणामयसे) बाबूजी ! बाबूजी ! आप शान्त हों ।

पुरोहित—(करुणामयसे) चलिए, चलिए । चल कर कन्यादान कीजिए, नहीं तो मुहूर्त्त निकल जायगा ।

[करुणामय और वरको लेकर कुछ वरातियोंका प्रस्थान ।

(सरस्वती, मंगली और दाईका प्रवेश ।)

सर०—उठो बेटी, उठो, अब क्या करोगी !

मंग०—उठो न, यहाँ पड़े रहनेसे क्या होगा ?

किरण०—हाय, ले गए—उन्हें पकड़ कर ले गए ।

सर०—चलो बेटी चलो । हमारे करम ऐसे ही थे ।

[सरस्वती आदिका किरणमयीको लेकर प्रस्थान ।

लाल०—रामू मामा ! यहाँ तो सब गुड़ गोवर हो गया ।

(मोहितमोहनको लिए हुए इन्सपेक्टर, जमादार और सिपाहियोंका पुनः प्रवेश और उन्हें देख कर लालचन्द और रमानाथका खिसकने लगना ।)

इन्०—लाल बाबू ! जरा ठहरिए । यदि बोस बाबू आपके साथ अपनी कन्याका विवाह कर दें तब तो आप इन्हें छुड़ा देंगे न ?

लाल०—हाँ हाँ, क्यों नहीं छुड़ा दूँगा !

इन्०—लेकिन साहब, मैं इन्हें कैसे छोड़ूँगा? मैंने वारण्टसे इन्हें पकड़ा है। मैं तो इन्हें लेजा कर कल अदालतमें पेश करूँगा तब आप क्या करेंगे?

लाल०—वाह साहब! आप सब कुछ कर सकते हैं। आप इन्हें छोड़ दीजिएगा, मैं आपकी भी मुट्ठी गरम कर दूँगा।

इन्०—वह कैसे?

लाल०—यह लीजिए, हजार रुपएका नोट।

इन्०—आप मुझे हजार रुपए देंगे?

लाल०—बस ब्याह करा दीजिए और यह नगद ले लीजिए।

इन्०—देखिए साहब! आप सब लोग गवाह रहिएगा। यह मुझे घूँस दे रहे हैं। जमादार! इनको पकड़ो।

मंग०—(रमानाथको खींच कर) तुम भागो।

इन्०—यह कौन भागता है?

(रमानाथका भागना।)

इन्०—अच्छा उसे जाने दो।

पह० बराती—रमानाथ! रमानाथ! कहाँ जाते हो? तुम तो ब्याह करने आए हो न? तुम चले जाओगे तो यहाँ सब काम कौन करेगा?

लाल०—दोहाई कोतवाल साहबकी, मुझे न पकड़िए, मैं चोर नहीं हूँ।

दूस० बराती—वाह तुम चोर काहेको हो, तुम तो वर हो।

लाल०—अरे भाई, यहाँ वर कौन साला है! मैंने झखमारी, तोबः की, मैं नाक रगड़ता हूँ, थूँक कर चाटता हूँ। अब मैं ऐसा काम नहीं करूँगा। मुझे मत पकड़ो, मैं चोर नहीं हूँ।

इन्०—आप तो चोरसे भी बढ़कर हैं। आप पुलिसको घूँस देकर असामी छुड़ाना चाहते हैं। जमादार! इनको ले चलो।

लाल०—अरे बापरे! यह तो बड़ी आफत आई! रामू मामा! रामू मामा! बड़ी आफत आई—बड़ी आफत आई! दोहाई कोत-

चाल साहबकी! मैं व्याह नहीं करना चाहता। मुझे वावूजीके पास ले चलो। मैं अफीम खाता हूँ। वहाँ तो मैं यों ही मर जाऊँगा।

इन्०—अच्छा, इन्हें रूपचन्दके पास ले जाओ, मैं आता हूँ।

[लालचन्द और मोहितमोहनको लेकर जमादार और सिपाहियोंका प्रस्थान।

किशोर—क्यों साहव! इनके छूटनेका कोई उपाय भी है या नहीं?

इन्०—इन्हें अदालतमें पेश होना पड़ेगा। इसके वाप रूपचन्दको फौजदारी सपुर्द होनेका डर दिखा कर दोनोंको छुड़वा दिया जायगा।

किशोर—क्या, आपको सव हाल मालूम है?

इन्०—हाँ, इसी पगली मंगलीने मुझसे सव हाल कहा है। उसीके कहनेसे मैंने रमानाथको छोड़ दिया। वह न होती तो रमाको भी मैं जरूर फँसाता। वह वड़ा भारी वदमाश है। लेकिन उस पगलीने उसे छोड़ देनेके लिये वहुत जोर दिया। उसने मुझसे पहले ही वचन ले लिया था, इसी लिये मैंने रमासे कुछ नहीं कहा।

(वर, कन्या, करुणामय और पुरोहित आदिका प्रवेश।)

पुरो०—अच्छा अव आप वर और कन्याको अन्दर स्त्रियोंमें ले जाइए।

किशोर—(करुणामयसे) अच्छा वावूजी अव आप कुछ पानी पीजिए। मैं सव लोगोंके खिलाने-पिलानेका प्रवन्ध करता हूँ।

करुणा०—अरे भाई, मैं अभी पानी क्या पीऊँगा।

(नेपथ्यमें रोनेकी आवाज और जल्दीसे दाईका प्रवेश।)

दाई—वावूजी! वावूजी! जल्दी चलिए। किरणको न जाने क्या हो गया है।

करुणा०—हे परमेश्वर! अव तो मुझसे नहीं सहा जाता।

(मूर्च्छित होकर गिर पड़ना।)

सव—अरे यह क्या अनर्थ हुआ!

तीसरा अंक।

पहला दृश्य।

रास्ता।

(मोहित और रमानाथका प्रवेश।)

रमा०—भाई, अगर तुम मेरी बात मानो तो मैं इन सब सालोंको फँसा दूँ।

मोहित०—मैं देखता हूँ कि तुम फिर मुझे पुलिसके फेरमें फँसाना चाहते हो। तुम्हारी बातोंमें आकर मैंने अपना मकान रेहन रखा, जिससे जेल जाते जाते बचा। फिर तुम्हारे और काली पण्डितके कहनेमें आकर अदालतमें इस बातका हलफ-नामा दाखिल किया कि मेरा कोई भाई नहीं है, अपने मकानका मैं ही मालिक हूँ। उस बातको याद करके अब भी मेरा कलेजा काँप उठता है।

रमा०—भाई यह तो समयका फेर है; इसमें तुम्हारा क्या दोष? मोतीके पीछे तुम्हारी जान निकलती थी, तुम्हें रुपया चाहिए था। तुमने मुझसे कहा कि जिस तरहसे हो सके रूपएका इन्तज़ाम करो, तो मैंने उसका ठीक ठीक इन्तजाम कर दिया। भला मुझे यह क्या मालूम था कि तुम्हारे ससुर इतने नीच हैं। उस दिन अगर वे लालचन्दके साथ तुम्हारी सालीका व्याह कर देते तो सारा झगड़ा मिट जाता। मकानका मकान बच रहता और ऊपरसे जो रुपया मिलता वह अलग। भला यह कौन जानता था कि वह ऐसी नीचता करेंगे। और अपनी आँखोंसे दमादको जेल जाते हुए देखेंगे। लेकिन भाई, ईश्वर जैसेको तैसा फल देता है। जैसे

मेंढ़के साथ उन्होंने अपनी लड़कीका व्याह किया वैसे उसका फल भी भोग रहे हैं। आजकलमें लड़की विधवा हुआ चाहती है। उनके दमादका अब तब लगा हुआ है। उस सालेको बहुमूत्र हुआ है। साल भरसे आधी तनखाह पर छुट्टी लेकर घर बैठा है। ऊपरसे उरुस्तम्भ हो गया है; न जाने कब आँखें उलट दे।

मोहित०—बहुत अच्छा हुआ—बहुत अच्छा हुआ। अजी हमारे ससुर भी पूरे पाजी हैं, मैंने "बाबूजी" कहा, उनके पैर पकड़े पर उन्होंने कुछ सुना ही नहीं, जमादारसे साफ कह दिया कि ले जाओ।

रमा०—अगर तुम मेरी बात मानो तो मैं उन्हें इसका पूरा पूरा मजा चखा दूँ। अगर तुम कहो तो मैं सब सालोंको फँसा दूँ। लालचन्दको फँसा दूँ, तुम्हारे भाईका व्याह रोक दूँ, तुम्हारी माको भी फँसाऊँ और करुणामयकी तो वह दुर्गत करूँ कि उनका जी मान जाय।

मोहित०—अच्छा वह बात बतलाओ, क्योंकि अबकी बिना अच्छी तरह समझे बूझे तुम्हारी बातोंमें नहीं आऊँगा।

रमा०—नहीं नहीं, पहले तुम सुन लो, खूब अच्छी तरह समझ लो और तब अगर तुम्हें ठीक जान पड़े तब मेरी बात मानो। तुम कोई बेवकूफ तो हो ही नहीं, लिखे-पढ़े हो, सब समझते बूझते हो, देखो मैं कैसी तरकीब बतलाता हूँ!

मोहित०—अच्छा तो बतलाओ, मुझे क्या करना होगा?

रमा०—तुम अपनी औरतको निकाल लाओ।

मोहित०—मैं अपनी औरतको निकाल लाऊँ!

रमा०—वाह, इतने पर भी न समझे! अच्छा तो लो, अच्छी तरह समझा कर कहता हूँ। सुनो, तुम अपनी औरतको निकाल लाओ और लालचन्दके बगीचेमें ले चलो और उससे कहो कि एक नई रण्डी निकल कर आई है। बस फिर उससे कुल वसूल किया जाय।

मोहित०—क्यों जी, अगर उससे यह कहा जाय कि एक गृहस्थ औरत निकल कर आई है तब तो और भी ज्यादा रुपया वसूल होगा न ?

रमा०—नहीं, इससे तो मामला बिगड़ जायगा। फिर वह फन्देमें नहीं आवेगा। वह बहुत डरता है। वह धनिया मल्लिक एक गृहस्थकी औरतको निकाल लाया था, जिससे उस पर मुकद्दमा चल गया था। उसका सब हाल उसने सुना है इसी लिये वह खटक जायगा। जब तुम कहोगे कि नई रण्डी निकल कर आई है तभी सब काम ठीक होगा।

मोहित०—लेकिन वह फँसेगा किस तरह ?

रमा०—तुम निकाल लाना, मैं उसे बगीचे ले जाऊँगा। तब तुम जाकर पुलिसमें खबर कर देना कि यह जबरदस्ती मेरी औरतको भगाए लिए जाता है; बस वह आप ही रुपए देगा। तुम्हारे ससुरके मुँहमें भी कालिख लगेगी और जब तुम्हारे भाईकी ससुरालके लोग सुनेंगे कि तुम्हारी औरत निकल गई है तब तुम्हारे भाईका ब्याह भी रुक जायगा।

मोहित०—वाहजी, रामू मामा वाह! खूब तरकीब निकाली! इससे तो दस हजार रुपये वसूल होंगे और जब रुपए मिल जायँगे तब देखना कि मैं मोतीको कैसा छकाता हूँ! उसके मकानके ठीक सामने एक दूसरी रण्डी लाकर रखूँगा और वह दिन-रात देख-देख कर जला करेगी।

रमा०—दस हजार, अरे मैं तो उससे पचास हजार वसूल करूँगा पचास हजार। लेकिन भाई एक बात है। तुम किसी बात पर कायम नहीं रहते।

मोहित०—तुम जानते नहीं! मैं मरद हूँ—मरद। मैं जो कुछ कहता हूँ वही करता हूँ। लेकिन भाई एक बात तो बतलाओ। मेरी

औरत मेरे साथ निकल किस तरह आवेगी? सभी लोग तो जानते हैं कि न मेरा घर है और न बार है। मैं दिनरात ललुआ सालेके बगीचेमें पड़ा रहता हूँ और उसीकी मुसाहिबी करता हूँ।

रमा०—इसकी तुम जरा भी चिन्ता न करो। अगर तुम उसे जहन्नुममें भी ले जाना चाहोगे तो वह तुम्हारे साथ वहाँ भी जायगी।

मोहित०—यह तुमने कैसे जाना?

रमा०—वाह! अजी मैंने उसे उस दिन देखा था जिस दिन तुम्हारी मझली सालीका व्याह था। जब तुम चले गए थे तब वह बेहोश होकर गिर पड़ी थी। साल भर तक जब वह बीमार थी तब जंगली पगली रोज उसके पास जाया करती थी। उसीसे मैंने सुना है कि तुम्हें देखनेके लिये उसकी जान निकलती है।

मोहित०—सच?

रमा०—सच नहीं तो क्या झूठ? अरे तुम क्या कोई ऐसे वैसे खूबसूरत हो? यों चार आदमी तुम्हें जानते नहीं इस लिये चाहे जो हो जाय। ज्यों ही तुम उसे जरा आवाज दोगे त्यों ही वह निकल आवेगी। अब बतलाओ, तुम्हें यह बात मंजूर है?

मोहित०—हाँ हाँ, बिलकुल मंजूर है। लेकिन मैं उसे निकाल कर लाऊँगा कहाँ?

रमा०—तुम दोनों आदमी रातको घरसे निकल पड़ना। मैं पहलेसे ही ललुआ सालेको ठीक करके थोड़ी दूर पर एक पालकी लिए हुए खड़ा रहूँगा। बस मैं उसे पालकी पर बैठा कर बगीचे ले जाऊँगा और उधर तुम थानेमें जाकर खबर कर देना। बस फिर क्या है! मार ली बाजी! लेकिन भाई एक बात है—पीछेसे रमा मामाको न भूल जाना।

मोहित०—नहीं नहीं; मैं ऐसा नीच नहीं हूँ। तुमने मुझे दो हजार रुपए दिलवा दिए थे, उसमेंसे मैंने दलालीके पाँचसौ रुपए दिए थे कि नहीं?

रमा०—उसमेंसे आधा तो वही काली पण्डित ले गया था।

मोहित०—और फिर पीछेसे मोतीसे भी तो तुमने दोसौ रुपए लिए थे। तुम क्या समझते हो कि मुझको उसकी खबर नहीं है?

रमा०—हाँ हाँ, क्यों नहीं, ऐसी ही तो मोती देनेवाली है। अच्छा इन सब बातोंको छोड़ो और उधर जाकर सब ठीक ठाक करो। अब मैं जाता हूँ।

[प्रस्थान।

मोहित०—अरे मैं इन बेटाको भी दुरुस्त कर दूँगा। इन्हें भी पुलिसमें गिरफ्तार करा दूँगा। और तब ससुरजीसे कहूँगा कि लड़कीको और घरमें रोक रखो। बस रुपया एक बार मिल जाय तब मैं फिर मोतीको भी मजा दिखलाऊँगा।

[प्रस्थान।

दूसरा दृश्य।

मुकुन्दलालके मकानका एक कमरा।

रोगी मुकुन्दलाल पड़े हुए हैं। पासमें हिरणमयी और एक पड़ोसिन बैठी है।

हिरण०—कुछ खानेको तो इनका जी ही नहीं चाहता।

पड़ो०—नहीं नहीं, जबरदस्ती खिलाओ। इन्हें पेशाबकी बीमारी है, घंटे घंटे पर खिलाना चाहिए।

हिरण०—जरा दूध पीलो।

मुकुंद०—(रुँधे हुए गलेसे) नहीं नहीं, मैं दूध नहीं पीऊँगा। कई दिनसे कहता हूँ, कोई एक अनार नहीं ला देता।

पड़ो०—वाह जी, तुम इन्हें एक अनार भी नहीं मँगवा देतीं ?

हिरण०—बहन, भला मुझे कौन अनार लाकर देगा ? सारी रात इन्होंने तड़प तड़प कर बिताई है। सवेरे मैंने सौतके लड़कोंसे कहा कि जरा जाकर डाक्टरको खबर दो तो वे मुझसे लड़नेको तैयार हुए। सवेरेसे दोनों बाहर गए हुए हैं और अभी तक नहीं लौटे। मैंने कल्लू-बहूको हाथ-पैर जोड़ कर डाक्टरके यहाँ भेजा है। कल सन्ध्याको डाक्टर आए थे पर मैं उनकी फीस नहीं दे सकी। कह गए कि जब तक मेरा रुपया नहीं मिलेगा तब तक मैं नहीं आऊँगा। जो कम्पाउण्डर घाव धोता है उसका भी अभी तक पता नहीं है। वह कहता है कि ऊरुस्तम्भ धोनेका एक रुपया रोज लिया करूँगा। मैंने बहुत मिन्नत खुशामद करके आठ आने रोज पर ठीक किया था। कल वह गाड़ी करके आया था, लेकिन मैं उसका गाड़ी-भाड़ा नहीं दे सकी थी। इस लिये मैं सोचती हूँ कि कहीं इसी लिये तो वह आज नहीं आया।

पड़ो०—हैं! कम्पाउण्डरका गाड़ी-भाड़ा कैसा ?

हिरण०—वह कहता था कि मेरे सिरमें दरद था; मैं तो नहीं आता पर यह रोग बहुत कड़ा है इसी लिये चला आया।

मुकुन्द०—खोल दो, खोल दो, बहुत कटकटाता है। यह सब लोग गड़बड़ क्यों कर रहे हैं ? यहाँसे हटा दो।

हिरण०—बहन, यह सारी रात इसी तरह बड़बड़ाया करते हैं। कहते हैं—यह कौन आया, वह कौन आया। रह-रह कर चिल्ला उठते हैं कि मैं नहीं चिराऊँगा; नहीं कटाऊँगा।

(कल्लू-बहूका प्रवेश।)

कल्लू०—भाई डाक्टर साहब तो नहीं आए। कहने लगे कि जब तक मेरा रुपया नहीं मिलेगा तब तक मैं नहीं जाऊँगा।

हिरण०—बहन, भला बतलाओ मैं क्या करूँ? मेरे हाथमें एक पैसा भी नहीं ठहरा। डेढ़सौ रुपए पर कड़े बंधक रख कर चीरा दिलवाया। बाबूजीके पास भी मैं नहीं जा सकती। मैं इन्हें किसके भरोसे छोड़ कर जाऊँ!

पड़ो०—अच्छा मैं पालकी मँगवा देती हूँ और यहीं बैठती हूँ; तुम अपने मैके हो आओ।

हिरण—नहीं बहन, मैं ही इस अड्डे परसे पालकी कर लूँगी। अब मेरा मान और अपमान क्या! यह यदि उठ बैठें तब तो बात है नहीं तो मैं भिखारिन तो हो ही चुकी हूँ।

पड़ो०—नहीं जी, उठ बैठेंगे; तुम घबराओ मत। तुम जाओ, मैके हो आओ।

(मृगांक और शशांकका प्रवेश।)

पड़ो०—क्यों जी डाक्टर आए?

मृ०—डाक्टरका क्या होगा? यह क्या बचेगा? इस राक्षसीने आकर घर खाया है, इसे भी खायगी। लाओ खानेको परोसो।

हिरण०—भला मैं खानेको कब पकाती? मैं तो इन्हींके पास तबसे बैठी हुई हूँ।

श०—अच्छी बात है। आज हम लोग बरतन-भाँड़े तोड़ डालते हैं और चल कर होटलमें खाते हैं; तब देखते हैं न कि तुम अपने चूल्हे-चौकेका क्या इन्तजाम करती हो? (मृगांकसे) चलो, दाल रस्तेमें फेंक दें और चलें।

[प्रस्थान।

पड़ो०—वाहजी, तुम लोग कैसे लड़के हो! तुम्हारे बापकी तो यह हालत है और तुम लोग लड़ते हो ?

मू०—रहने दो, रहने दो, तुम्हारी सिफारिशकी जरूरत नहीं! मैं जानता हूँ, यह इसे बिना खाए नहीं छोड़ेगी।

मुकुन्द०—अरे यह कौन चिल्लाता है, कौन शोर करता है? अरे बापरे मैं मरा!

(शशांकका पुनः प्रवेश ।)

श०—भइया, यह तो मजेमें खा-पी कर बैठी है, चलो हम लोग होटलमें चलें, तब फिर आकर इससे समझ लेंगे।

[दोनोंका प्रस्थान ।

मुकुन्द०—अरे बापरे! मैं मरा! खोल दो, खोल दो। (हिचकी लेकर) पानी।

पड़ो०—बहन, तुम जल्दी जाकर अपने मैकेसे हो आओ। रुपए ले आओ, अभी डाक्टरको बुलाना होगा।

हिरण०—अच्छा तो तुम बैठो, मैं जाती हूँ।

[प्रस्थान ।

(मुकुन्दलालका हिचकियाँ लेना ।)

पड़ो०—जिस रोगीको चीरा दिया जाता है वह जब हिचकियाँ लेने लगता है तब नहीं बचता।

मुकुन्द०—दरवाजा बन्द करो, दरवाजा बन्द करो। सब लोग घुसे आ रहे हैं, घुसे आ रहे हैं, दरवाजा बन्द करो, बन्द करो।

पड़ो०—कहाँ, कोई तो नहीं है? अच्छा, मैं दरवाजा बन्द कर देती हूँ।

मुकुन्द०—अरे यह सब जंगलेके रास्ते आ रहे हैं।

पड़ो०—दरवाजा बन्द करके मैंने उन लोगोंको भगा दिया। (स्वगत) अब ज्यादा देर नहीं मालूम होती।

तीसरा दृश्य।

करुणामयके मकानका बाहरी भाग।

करुणामय, मोदी, ग्वाला और हलवाई।

मोदी—साहब, जिन जिन लोगोंने नालिश की है वे सब तो महीने महीने किस्त पाते हैं पर मैं भलमनसत करता हूँ, कुछ बोलता नहीं, सो आप मेरे रुपए देनेका नाम ही नहीं लेते।

करुणा०—भाई, आजकल मैं बहुत तरद्दुदमें हूँ, तुम जानते हो, मैं हमेशा नगद दाम देकर तुम्हारी दूकानसे सब सामान लिया करता था; लेकिन दो लड़कियोंका ब्याह करके मैं आफतमें पड़ गया हूँ। तुम लोग जरा सबर करो।

ग्वा०—वाह साहब! और कितने दिनों तक सबर करेंगे? पहले ब्याहमें ही मैंने जो दूध-दही दिया था अभी तो उसीका दाम मुझे नहीं मिला। साहब! आपको रुपया देना हो तो दीजिए; अब मुझसे तगादा नहीं हो सकता। दौड़ते दौड़ते तो पैरकी एड़ियाँ घिस गईं। नहीं तो पीछेसे मुझे दोष मत दीजिएगा। यह मत कहिएगा कि एक छोटे आदमीने नालिश कर दी।

करुणा०—भाई मैं बहुत जल्दी तुम सब लोगोंका रुपया चुका दूँगा। तुम लोग चिन्ता न करो; जरा सबर करो मैं मकान बेच कर कौड़ी कौड़ी अदा कर दूँगा।

हल०—साहब, आजकल भलमनसतका जमाना ही नहीं है। मैं भी किस्त करा लेता। लेकिन मैं बेवकूफ था। मैंने सोचा कि क्या भले आदमी पर नालिश करूँ, तभी आप हमारी दफः कहते हैं कि सबर करो, सबर करो।

मोदी—साहब, अब मैं रुपया बाकी नहीं रख सकता । मुझसे यह न हो सकेगा कि रोज रोज काम-धंधा छोड़ कर आपके यहाँ दौड़ा करूँ । आप चाहे मकान बेचें और चाहे इलाका; उसमेंसे हम लोगोंको कुछ हिस्सा तो बाँट देंगे ही नहीं ।

करुणा०—भाई तुम लोग थोड़े दिन और सबर करो । क्या कहूँ, आजकल मैं बहुत मुसीबतमें फँस गया हूँ ।

ग्वाला—अच्छा साहब अच्छा, हम लोगोंने सब मतलब समझ लिया । चलो जी, हम लोग अपना काम देखें । अब मैं तो कभी तगादा करने नहीं आऊँगा ।

[करुणामयके अतिरिक्त सबका प्रस्थान ।

करुणा०—जी चाहता है कि कपड़े फाड़ कर फेंक दूँ और संन्यासी होकर कहीं चला जाऊँ । अब इन तुच्छ आदमियोंका आँखें निकालना तो मुझसे नहीं देखा जाता । जो तनखाह मिलती है उसमें पूरा ही नहीं पड़ता । आफिसके दरबान तकका तो मैं देनदार हो गया हूँ । सूद ही सूद चुकानेमें सारी तनखाह खतम हो जाती है । एक पैसा भी बच कर घर नहीं आता । इधर पेट नहीं मानता—खाने-पीनेको भी कुछ चाहिए ही । मुंसिफीसे एक समन आज आया तो एक कल आया । अगर दफ्तरके साहबको यह बात मालूम हो जाय तो नौकरी भी छूट जाय । इस कम्बख्त मकानको भी मैं न बेच सका । और दो महीने तक मैंने अगर इसे न बेचा तो जिनके यहाँ रेहन है वे महाजन ही नीलाम कराके ले लेंगे । अगर मैं किसी तरह मकान बेच डालता तो इन झंझटोंसे बहुत कुछ छुट्टी पा जाता और इधर उधर कहीं किराएका मकान लेकर दिन बिताता । अगर आज लड़केको स्कूलकी फीस न दूँगा तो स्कूलसे उसका नाम ही कट जायगा । और अगर कल किस्तका रुपया न दे सका तो कल ही कपड़ेवाला वारंट निकलवा देगा ।

(हिरणमयीका प्रवेश।)

हिरण०—(प्रणाम करके) बाबूजी, मैं आई हूँ।

करुणा०—बहुत अच्छा किया, कहो, तुम्हारा क्या हुक्म है?

हिरण०—बाबूजी, तुम ऐसी बातें करोगे तो मैं कहाँ जाऊँगी? मुझे तो चारों तरफ अँधेरा दिखाई देता है। कल उनका उरुस्तम्भ चिरवाया गया था तबसे वे बेहोश पड़े हैं। आज डाक्टर बुलवानेके लिये मेरे पास रुपया नहीं था। दूधवालेने दूध देना बन्द कर दिया है। नगदसे दूध मँगवा कर उन्हें पिलाती हूँ। साल भरसे उन्होंने छुट्टी ली है। पहले आधा महीना मिलता था, पीछेसे वह भी बन्द हो गया। मकान बेच कर तो उनकी चिकित्सा कराई और हवा-पानी बदलवा कर यहाँ ले आई। मकान सौतके नाम था, उसके लड़कोंने झगड़ा किया, जिससे वह मकान आधे ही दाममें निकल गया। मैं तो गहना बंदक रख रख कर काम चलाती हूँ। कल हाथके कड़े बंधक रखे, तब कहीं जाकर डाक्टरकी बिदाई की।

करुणा०—क्यों डाक्टरको घर क्यों बुलवाया? उन्हींको अस्पतालमें लेजा कर क्यों न रखा? अब मुझसे क्या करनेके लिये कहती हो? मेरा भी तो सब घर-बार गया—कर्जसे बाल बाल बँध गया, रोज एक दो समन आते हैं; इसी फेरमें न मालूम कब नौकरी छूट जाय। साहबने कहा है कि अगर अबकी समन आया तो नौकरीसे बरखास्त कर दिए जाओगे। साल भर तक किरण बीमार थी। कभी तुम्हारी मा बीमार होती है, कभी तुम्हारा भाई बीमार होता है। सुनता हूँ, दामाद बेहोश पड़े हुए हैं। तुम्हारी सौतके तो सयाने सयाने लड़के हैं; उन्हींसे क्यों नहीं कहतीं?

हिरण०—बाबूजी, मैं क्या कहूँ। क्या वे लोग कभी मेरा मुँह देखते हैं? या कभी एक बार मुझसे यह भी पूछते हैं कि तुम किस

तरह हो ? बात बात पर लड़नेके लिये तैयार हो जाते हैं। बाबूजी, अगर उन्हीं लोगोंसे कुछ हो सकता होता तो मैं तुम्हारे पास काहेको आती !

करुणा०—लेकिन बेटी, मुझसे तो कुछ भी न हो सकेगा। कल किस्तके २५) देने पड़ेंगे। अगर न दे सका तो जेल चला जाऊँगा। अब तुम्हीं बताओ कि कहाँसे तुम्हारे लिये कोई इन्तजाम करूँ ? लो यह छ रुपए हैं, ले जाओ। लड़केकी स्कूलकी तीन महीनेकी फीस बाकी है, कहीं उसका नाम न कट जाय ! अच्छा तुम यह रुपए तो ले जाओ—फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

हिरण०—बाबूजी, जरा सन्ध्याको तुम एक बार चले आना; तुम्हारे आनेसे उनको कुछ भरोसा हो जायगा। मैं जाती हूँ, मिसरानीको बैठा कर चली आई थी।

[प्रणाम करके प्रस्थान।

करुणा०—क्या कहूँ, चारों तरफ आफत ही आफत है। अब तीसरी लड़की सयानी हो रही है। यदि उसका व्याह न होगा तो जातिसे निकाल दिया जाऊँगा। वाहरे जाति ! मैं मर ही क्यों न गया !

(नलिनका प्रवेश।)

नलिन—बाबूजी, स्कूलकी फीस दो।

करुणा०—नहीं नहीं, अब स्कूल जानेकी ज़रूरत नहीं।

नलिन—तुमने तो कहा था कि आज स्कूलकी फीस देंगे। बाबूजी, फीस दे दो नहीं तो जब छुट्टी हो जाती है तो मुझे स्कूलमें रोक रखते हैं और मारने आते हैं। पहले तो कहते थे कि जुरमाना होगा जुरमाना होगा, पर आज अगर फीस नहीं दी जायगी तो नाम ही कट जायगा।

करुणा०—वाहवा वाह! कैसा देश है और कैसा यहाँका विद्यादान है! देशहितैषी लोग स्कूल खोल कर देशका मुख उज्ज्वल करते हैं! लड़कोंको कैद करके फीस वसूल करते हैं! कैसी पूरी दूकानदारी है! यह देश स्वतंत्र होगा! चारों तरफ अन्धकार है—चारों तरफ हाहाकार है। साधारण गृहस्थका काम कैसे चल सकता है! जो भला आदमी है वह अपनी भलमनसत कैसे छोड़े! हम लोगोंसे अच्छे मजदूर ही हैं। उनमें स्त्री और पुरुष दोनों रोजगार करते हैं। अगर वे बीमार होते हैं तो अस्पतालमें चले जाते हैं, भीख माँग कर खा लेते हैं। हम लोग ठहरे भले आदमी, हम लोगोंसे तो यह सब हो ही न सकेगा। और अगर करें भी तो जाति जायगी—समाजमें निन्दा होगी। चाहे घरमें भूखे पड़े रहो, सारा परिवार उपवास करे, पर ज्यों ही किसी स्त्रीने चौखटके बाहर पैर रखा त्यों ही लगी उसकी निन्दा होने। तिस पर घर घर वंश-रक्षा हो रही है! लड़का पूरे चौदह बरसका भी न हो और उसका ब्याह हो जाय और बीस बरस तक पहुँचते पहुँचते वंश-वृद्धि होने लगे! लोग भूखों मरते हैं पर उनको खानेको नहीं मिलता, तन ढाँकनेको कपड़ा नहीं मिलता, घर घर कंगाली सवार है, कैसा सुखका समाज है!

नलिन—बाबूजी, फीस दो।

करुणा०—बेटा, अब तुम स्कूल जाना बन्द करो। तुम आजसे समझ लो कि कंगालके लड़के हो, फिर कंगालके लड़कोंके लिये पढ़ना-लिखना कैसा! मैं कंगाल, तुम कंगाल, तुम्हारी मा कंगाल और तुम्हारी बहन भी कंगाल। जब तक मैं दो मुट्ठी अन्न ला सकूँ तब तक तुम लोग थोड़ा थोड़ा खाओ और चुपचाप आरामसे सोओ। वाह! मैं भी खूब बाप बना हूँ। जैसा बाप होना चाहिए वैसा ही बाप बना हूँ। मकान तक न रह जायगा कि जिसमें कोई रह तो

सके । बेटा ! मैं कोई उपाय नहीं कर सकता, अब तुम्हें स्कूल न जाना होगा ।

नलिन—ऊँ ऊँ ऊँ, बाबूजीने स्कूल छुड़ा दिया ।

[रोते रोते प्रस्थान ।

करुणा०—अगर व्याह न करो तो खराबी है । घर-बार कहाँसे आवे, बाप-दादाका नाम कैसे चले ? अगर लड़कीका व्याह न करो तो धर्म भ्रष्ट हो । कैसी अच्छी प्रथा है—कैसी अच्छी व्यवस्था है ! कन्याका व्याह न करो तो चौदह पुरखा नरकमें जायँ, जैसे हो वैसे व्याह करो, चाहे मकान बेच कर करो, चाहे कर्ज लेकर करो, चाहे भीख माँग कर करो और चाहे चोरी करके करो—और फिर पीछेसे बाल-बच्चों समेत अन्न बिना भूखों मरो । पर यह नहीं हो सकता कि व्याह न करो । नहीं तो पुण्यात्मा समाज जातिसे निकाल देगा और घृणा करेगा । समाजके लिये कैसा उपयुक्त काम है !

(किरणमयीका प्रवेश ।)

किरण०—बाबूजी, नलिन रोता है । मा कहती है कि उसे स्कूल क्यों नहीं जाने दिया ?

करुणा०—हाँ भाई, मुझसे भूल हुई, गलती हुई । मेरी उसके जैसी समझ नहीं है—बुद्धि नहीं है । जानती हो, मैंने क्यों स्कूल जानेसे रोक दिया ? तुम लोगोंने मेरे घर जन्म लिया है इस लिये, तुम लोग जनमती ही मर नहीं गई इस लिये, मुझे दाना दाना अन्न इकट्ठा करना पड़ता है इस लिये, तुम ससुरालसे आकर यहाँ दोनों समय ठूँसती हो इस लिये, और किस लिये ? और बतलाऊँ किस लिये ? अब भी क्या उसको और कोई साध बाकी है, लड़केको पढ़ा-लिखा कर आदमी बनावेगी, बहूको घरमें लावेगी, लड़केकी गृहस्थी बनावेगी, नाती-पोते खेलावेगी ? उससे कह दो कि इन सब बातोंका ध्यान

छोड़ दे'। उससे कह दो कि अब यही समझ ले कि जो दिन बीत जाय वही अच्छा है। वह नहीं जानती कि मैंने क्यों लड़केका स्कूल छुड़ा दिया, लड़कियोंका ब्याह किया था, इस लिये! समझीं?

[प्रस्थान।

किरण०—छी छी, क्या मुझे संसारमें और कहीं जगह नहीं है? मुट्ठी भर अन्नके लिये इतनी दुर्दशा! स्वामी मुझसे मिलना चाहते हैं। यदि वे सचमुच ही मुझे दर्शन देंगे तो मैं उनके पैर पकड़ कर रोऊँगी और कहूँगी कि—"मुझे ले चलो, अगर तुम्हारा घर-बार न रह गया हो तो मैं परदेसमें चल कर भीख माँग कर तुम्हें खिलाऊँगी और पेड़के नीचे रहूँगी।" छी छी मैकेमें रह कर खाना भी कितना बुरा है! बाबूजीने क्यों मेरा ब्याह किया? किसीके घर वे मुझे दासी बना कर क्यों न रख आए? चौथीके दिन जिस समय सासने मुझे मारा था मैं उसी समय क्यों न मर गई? यदि मैं मर जाती तो यह सब झगड़ा तो मिट जाता! आज इतनी दुर्दशा तो न सहनी पड़ती! खाली दो मुट्ठी अन्नके लिये इतनी बातें!

[प्रस्थान।

चौथा दृश्य।

करुणामयके मकानकी खिड़की।

सरस्वती और नलिन।

सर०—नलिन, कहाँ जाता है?

नलिन—क्यों, खेलने जाता हूँ। निधिरामने ठीक कहा है, मैं खेलूँगा और घूमूँगा; जो मेरे मनमें आवेगा सो करूँगा।

नर०—नहीं नहीं, बाहर मत जाइयो ।

नलिन—क्यों, बाहर क्यों न जाऊँ ? मैं पढ़ूँगा नहीं, लिखूँगा नहीं, स्कूल न जाऊँगा तो क्या घरसे बाहर भी न निकलूँगा ? मेरी जो खुशी होगी सो करूँगा ।

नर०—नहीं नहीं, बाहर मत जाइयो । मैं कल तुझे स्कूलकी फ़ीस दूँगी ।

नलिन—नहीं, मैं स्कूल नहीं जाऊँगा । जैसे सच्चे बाबूजी हैं वैसी ही सच्ची तुम भी हो । रोज कहा करती हो कि कल महीना दूँगी, कल महीना दूँगी । और मुझे वहाँ स्कूलमें रोक रखते हैं, धमकाते हैं, मारते हैं ।

नर०—तो फिर किताब लेकर कहाँ जाता है ? जब खेलने जाता है तब किताबका क्या करेगा ?

नलिन—यह किताब क्या बाबूजीने खरीद दी थी या तुमने खरीद दी थी ? मैंने इनाममें पाई थी । मैं इसे लेजा कर बेचूँगा और गेंद-बल्ला खरीदूँगा ।

[प्रस्थान ।

नर०—हाय, मेरे कैसे भाग्य फूट गए! मेरे बेटेको पढ़ने लिखनेका कितना शौक था; पर वह कुछ भी लिख-पढ़ न सका । पहले तो वह जानता ही न था कि खेलना किसको कहते हैं । दिन-रात किताब ही पढ़ा करता था । साल साल उसे इनाम मिला करता था । उसी लड़केका आज स्कूल छुड़ा दिया गया ! ऐसा भी किसीका भाग्य फूटता है !

[प्रस्थान ।

(किरणमयी और मंगलीका प्रवेश ।)

किरण०—क्योंजी, तुम लौट क्यों आईं ?

मंगली—आज रातको नहीं कल सवेरे तुम उनसे भेंट करना।

किरण०—क्यों ?

मंग०—मैंने जब तुम्हारे स्वामीका पत्र लाकर तुम्हें दिया था तब मैं मनमें बहुत प्रसन्न हुई थी। मुझे यह तो मालूम ही नहीं था कि पत्रमें क्या लिखा है। तुमने जब कहा कि वे तुमसे भेंट करना चाहते हैं तब मैं और भी प्रसन्न हुई थी। पर अब मेरा मन कुछ हिचकता है। तुम्हारे स्वामी यहीं आकर तुमसे क्यों नहीं भेंट करते ?

किरण०—मंगली तुम नहीं जानतीं। उन्हें बहुत दुःख पहुँचा है। जानती तो हो, जिस दिन मेरी बहनका व्याह था उस दिन इस घरमें उनका बहुत अपमान हुआ था।

मंग०—लेकिन वे दिनके समय क्यों नहीं भेंट करते ? रातके समय मुझे तो बहुत डर लगता है।

किरण०—नहीं नहीं, तुम नहीं जानतीं, वे इस महल्लेमें किसीका सामना करना नहीं चाहते और फिर मैं तो अपने स्वामीसे ही भेंट करूँगी न ? इसके लिये रात हो तो क्या, और दिन हो तो क्या ? उन्होंने जिस तरह कातर होकर पत्र लिखा है उसे देख कर क्या मैं शान्त रह सकती हूँ ? मैं तो तुम्हें पढ़ कर सुनाना चाहती थी पर तुम्हींने नहीं सुना। यदि तुम पत्र सुन लेतीं तो तुम भी व्याकुल हो जातीं और फिर इस तरह मुझे मना न करतीं।

मंग०—अच्छा, पढ़ो—मैं सुनूँ।

किरण०—(पत्र पढ़ती है)—

" प्राणेश्वरी !

तुम अमूल्य रत्न हो। लेकिन मैं मूर्ख था; पहले मैंने तुम्हें न पहचाना। तुम्हारी बहनके व्याहके दिन मुझे मालूम हुआ कि तुम्हारे समान पति-परायणा स्त्रियाँ बहुत ही कम हुआ करती हैं। मैंने बहुत

ही दुखी होनेके कारण आज तक तुम्हारी खोज-खबर नहीं ली थी । मैंने सोचा था कि जब मेरे अच्छे दिन आवेंगे तभी मैं तुमसे भेंट करूँगा । अब मेरे अच्छे दिन आ रहे हैं, इसी वास्ते मैं तुमसे भेंट करनेके लिये व्याकुल हो रहा हूँ । तुम्हारे पिताके घरमें मैं पैर नहीं रख सकता, क्योंकि वहाँ मेरा बहुत ही अपमान हुआ था । यदि मैं दिनके समय तुमसे भेंट करनेके लिये आऊँ तो तुम्हारे महल्लेके लोगोंका सामना होगा । सम्भव है कि कोई कुछ दिल्लगी कर बैठे ! इसी लिये मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम रातके समय एक बार घरसे बाहर निकल कर मुझसे भेंट कर लो । भेंट होने पर मैं तुमसे अपने मनकी बात कहूँगा, तुम्हारे पैर पकड़ कर तुमसे क्षमा माँगूँगा और तुम्हारे गले लग कर रोऊँगा । मुझे विश्वास है कि तुम मेरी यह बात मान लोगी और अपनी खिड़कीके बाहर आकर दर्शन दोगी ।

तुम्हारा—

मोहित ।

पुनश्च—कोई तुम्हारे साथ न आवे । ”

किरण०—भला बहन, अब तुम्हीं बतलाओ कि मैं उनसे बिना भेंट किए कैसे रह सकती हूँ ?

मंग०—लेकिन क्यों जी, उन्होंने तुम्हारे बाबूजीको चिट्ठी लिख कर तुम्हें क्यों न बुलवाया ?

किरण०—तुम समझती नहीं हो । वे बहुत नाराज हैं, बाबूजीको वे कभी पत्र नहीं लिखेंगे ।

मंग०—तो फिर मैं तुम्हारे संग चलूँगी ।

किरण०—वाह, यह भी कभी हो सकता है ? उन्होंने मना किया है । अगर मैं उनकी बात न मानूँगी तो वे नाराज होंगे और बिगड़ कर चले जायँगे । तुम नहीं जानतीं कि मेरा जी अन्दरसे कैसा

हो रहा है। रह-रह कर यही सोचती हूँ कि सूर्य क्यों नहीं अस्त हो जाता, रात क्यों नहीं हो जाती ? कितनी देरमें उनके दर्शन होंगे ? मंगली ! तुम मुझे उनके साथ भेंट करनेसे मना करती हो ? तुम भिखारिणी होकर इधर उधर घूमती और अपने स्वामीके दर्शन करती हो, भीख माँग कर जो कुछ मिलता है वह स्वामीके आगे रखती हो और उनके साथ बातें करके स्वर्गका आनन्द लेती हो। तुम अपने ही मनसे मेरे मनकी दशा नहीं समझतीं ? तुम मुझे मना न करो, इस विषयमें मैं तुम्हारी बात नहीं मानूँगी। यदि तुम्हारी तरह मुझे भी गली गली भटकना पड़े, पर मुझे भीख माँग कर अपने स्वामीकी सेवा करनेका सौभाग्य प्राप्त हो और वे आँख उठा कर केवल मेरी ओर देख लिया करें तो भी मैं अपने आपको सबसे बढ़कर सुखी समझूँगी। तुम मेरे लिये चिन्ता करती हो ? क्या चिन्ता करती हो ? तुम जाओ, जरा भी चिन्ता न करो। मेरे स्वामीसे कह दो कि मैं उनके आसरे चोर-दरवाजेके पास खड़ी रहूँगी। मेरी ओरसे नम्रता-पूर्वक उनसे यही कह देना जिसमें मुझे निराश न होना पड़े, वे आवें और मुझे दर्शन दें। उनसे कह देना कि मैं आजन्म उनकी दासी रहूँगी। वे मेरे सर्वस्व हैं, इष्ट देवता हैं। वे मुझे ठुकरावें नहीं, अपने चरणोंमें स्थान दें।

मंग०—देखो मई ! मैं एक बात कहती हूँ। यदि तुम मेरी ही तरह हो सको, यदि मेरी तरह सब बातोंका त्याग कर सको, यदि घृणा, लज्जा और भयको तिलाञ्जलि दे सको, यदि गली गली मारी मारी फिर सको तब तो तुम छिप कर उनके साथ रातके समय भेंट करो। परन्तु यदि तुम अपने घरमें रहना चाहती हो, लोगोंके घृणा करनेसे डरती हो, यदि अपने सिर पर कलंक लेनेसे हिचकती हो तो तुम रातके समय छिप कर उनसे भेंट न करो। लुक-छिप कर जो

काम किया जाता है वह अच्छा नहीं होता । मैं बराबर इधर उधर घूमा करती हूँ और बहुतसी बातें देखा करती हूँ। मैंने देखा है कि जो काम लुक-छिप कर किया जाता है वह कभी अच्छा नहीं होता। देखो, यदि तुम्हें मेरी तरह होनेमें जरा भी भय न हो तभी तुम उनसे भेंट करना ।

मंगली गाती है—

कलंक जिनका मुकुटमणी है, सरल हृदयसे सभी वे सहते ।
छिपा हुआ प्रेम उनको सोहे, जो भयसे जनताके आह भरते ॥
मिले अनादर तो करके आदर, रखें हृदयमें पकड़के दिलबर ।
सदा ही भावोंकी भौंरमें पड़, हृदयके भावोंमें मग्न रहते ॥
हुआ जो है प्रेमका दिवाना, न उसने डर जगका कुछ भी माना ।
डुबाते हैं वासनाको जो जन, सभी समय वे समान रहते ॥

(नेपथ्यमें रोनेकी आवाज ।)

किरण०—हैं यह क्या! मा रो क्यों रही हैं! शायद मेरे बहनोईका देहान्त हो गया । बहन, जरा जाकर मैं देखूँ ।

[किरणमयीका प्रस्थान ।

मंग०—मैं समझ गई, समझ गई । जिस दिन उस लड़कीका ब्याह हुआ था उसी दिन मेरा कलेजा काँप उठा था । मेरा मन कहता था कि एक और अबलाका भाग्य फूटा चाहता है सो सचमुच वही हुआ । मैंने देखा तो था कि उसके स्वामी बिछौने पर पड़े हुए थे, उसकी सौतके लड़के लड़ाई झगड़ा करते थे, घरमें खानेको नहीं था, सभी कुछ तो मैं देख चुकी हूँ । मालूम होता है कि आज वह भी विधवा हो गई । हाय! क्या अबलाके भाग्यमें कहीं सुख नहीं है! घर घर दुःख, घर घर हाहाकार । घर घर यही दशा है कि मेला अपने पेटकी जनी हुई लड़कीको अन्न नहीं दे सकते । क्या यह

कम्बख्त ब्याह भारतवर्षसे न उठेगा ? हे मधुसूदन ! क्या दुःखका भार उठानेके लिये संसारमें और कोई नहीं है ? क्या इसी लिये तुमने हिन्दू-कन्याओंके सिर पर दुःखका सारा बोझ लाद दिया है ? हाय ! इतने दुःखोंके होते हुए भी यदि पति जीवित रहे तो स्त्रियोंके लिये बड़ा भारी सुख है। लेकिन कम्बख्त यमसे यह भी नहीं देखा जाता।

[प्रस्थान।

पाँचवाँ दृश्य।

मुकुन्दलालके मकानका कमरा।

हिरणमयी और पड़ोसिन।

पड़ो०—बहन, आखिर अब तुम क्या करोगी ? चुप रहो, तुम्हारे भाग्यमें यही लिखा था। रोनेसे वे लौट तो आवेंगे नहीं।

हिरण०—बहन, जो कुछ मेरे भाग्यमें लिखा था वह तो हो ही गया। लेकिन अब मैं यह सोचती हूँ कि कहाँ जाऊँगी, क्या करूँगी ? रहनेके लिये जगह नहीं है, तन पर कोई गहना नहीं है, पासमें एक पैसा नहीं है, सभी कुछ तो तुम जानती हो। उनकी दवामें ही सब कुछ लग गया। मुझे तो सब तरफ अँधेरा ही दिखाई देता है। अब मैं क्या करूँगी ?

पड़ो०—तुम इतनी चिन्ता क्यों करती हो ? तुम्हारी सौतके लड़के तो हैं ही, क्या वे तुम्हें यों ही छोड़ देंगे ? जब बाप जीते थे तब वे नौकरी चाकरी कुछ भी नहीं करते थे, इधर उधर घूमा करते थे। लेकिन अब गृहस्थीका सारा भार उन्हीं पर आ पड़ा है, वे आप ही ठीक हो जायँगे।

हिरण०—बहन, कल तो तुमने अपनी आँखोंसे ही देख लिया कि बात बात पर वे लड़नेके लिये तैयार होते हैं और कहते हैं कि "हमारा सब कुछ तू खा गई, हमारा सब कुछ तूने ले लिया।" वे तो शायद यही समझते हैं कि मेरे पास रुपयोंका सन्दूक भरा हुआ है। सवेरे चाचा मुझे घरसे निकालने आते हैं।

पड़ो०—बहन, तुम चिन्ता न करो, तुम्हारे बाप-मा हैं ही। जिन्होंने पेटमें जगह दी है क्या वे चौकेमें जगह न देंगे!

हिरण०—बहन, तुम नहीं जानतीं कि मेरे बाबूजीकी आजकल क्या दशा है। वे कर्जसे लदे हुए हैं। बड़ी लड़की उनके गले पड़ी है, और छोटी लड़कीका वे ब्याह नहीं कर सकते। मैं यही सोचती हूँ कि किस मुँहसे उनके घर जाकर रहूँगी।

पड़ो०—(स्वगत) हाय! इस तरह भाग्य फूट जाने पर ऊपरसे यह और दुर्दशा! (प्रकाश्य) लेकिन फिर भी बहन, रोनेसे क्या होगा? तुमने अपने बाबूजीको खबर दी है?

हिरण०—मैंने कल्लू-बहूको खबर देनेके लिये भेजा है।

पड़ो०—अच्छा तो मैं अब जाती हूँ। तुम चिन्ता न करो। किसी तरह दिन बीत ही जायँगे। तुम इस तरह न किया करो। कलसे तुम यों ही पड़ी हुई हो। तुमने कुछ खाया तक नहीं है। जाओ नहा-धोकर कुछ खाने-पीनेका बन्दोबस्त करो। दोनों लड़के आते होंगे। जैसे हो उन्हें अपना कर लो। (स्वगत) हाय, न जाने इस बेचारीके भाग्यमें अभी और क्या लिखा है! (प्रकाश्य) अच्छा तो मैं अब जाती हूँ।

[प्रस्थान।

हिरण०—हाय! देखो यह बेचारी गरीब अनाथा मेरी खबर लेनेके लिये आई है, लेकिन महल्लेके और किसी आदमीने बात तक न पूछी!

महल्लेमें जिन लोगोंको कोई नहीं पूछता वे तो कंधे पर उठा कर घाट तक ले गए, लेकिन जिन्हें लोग महल्लेमें भले आदमी कहते हैं उन्होंने चूँ तक न की। हाय! अब आगे क्या होगा! इस मकानका छः महीनेका किराया पहलेसे दिया हुआ है, जिसमेंसे तीन महीने तो बीत गए। अभी तीन महीने तक मैं इस मकानमें और रह सकती हूँ। यह तो इस महल्लेका हाल है! बिना पहले किराया लिए हुए कोई अपना मकान ही किराए पर नहीं देता, परन्तु क्या अब भी वे दोनों लड़के न सँभलेंगे। देखूँ यदि कोई उपाय हो सके तो मैं यहीं पड़ी रहूँ। मैं इन दोनोंके लिये रसोई बना दिया करूँगी, इनका चूल्हा-चौका कर दिया करूँगी। क्या इतने पर भी ये मुझे मुट्ठीभर अन्न खानेको न देंगे? यही करेंगे न कि दो चार गालियाँ देंगे—दिया करें। मैं इन्हींके यहाँ पड़ी रहूँगी। वे दोनों आ रहे हैं, जरा उनकी मिन्नत-खुशामद कर देखूँ।

(मृगांक और शशांकका प्रवेश।)

मृ०—लाओ, जो कुछ तुम्हारे पास हो सो निकालो।

हिरण०—भइयां, मेरे पास तो कुछ भी नहीं है।

मृ०—अच्छा तो शशांक, तुम सन्दूक तोड़ो।

श०—भइया, तुम भी बस वही रहे, अरे इसने सब कुछ अपने बापके घर भेज-दिया है। मैंने दूसरी ताली लगा कर सन्दूक खोल कर देखा था। उसमें दो-चार फटे हुए कपड़े और एक पुराने दुशालेके सिवा और कुछ भी नहीं है।

हिरण०—भइया, क्यों ऐसी बातें करते हो, यहाँ क्या रखा है?

मृ०—बताओ, सब बरतन-भाँड़े कहाँ गए?

हिरण०—वही बरतन रेहन रख कर तो कल अन्तिम-संस्कारका प्रबंध किया था।

मृ०—अच्छा, सन्दूक खोलो ।

हि०—भइया, मैं तो अपने बाबूजीके पाससे छः रुपए लाई थी सो सब खर्च हो गए, यह देखो खाली तीन आने पैसे बचे हैं ।

(हिरणमयीका सन्दूक खोल कर दिखलाना और
मृगांकका इसमेंसे पैसे निकाल लेना ।)

श०—भइया, सुना न ! इसी बीचमें यह अपने बापके घर रुपए लेने भी गई थी । मैंने तो तुमसे पहले ही कह दिया, बाबूजीको इसने बेवकूफ बना रखा था । इसने सब कुछ अपने मैके भेज दिया है ।

मृ०—अरे यह पाजी है, बदमाश है, चोर है, डाकू है । इसने हम लोगोंका सब कुछ लूट लिया । चलो, इसे पुलिसके सपुर्द करें ।

श०—देखो भई, अगर तुम अपना भला चाहो तो जो कुछ तुमने यहाँसे हटाया बढ़ाया हो वह सब सीधी तरहसे ले आओ, नहीं तो फिर बहुत बुरा होगा ।

हिरण०—भइया, तुम लोग यह कैसी बातें कर रहे हो ? मैं तो आप ही मर रही हूँ, मुझे क्यों सता रहे हो ? मैंने तो आप ही अपना सब कुछ गँवा दिया है । अपने गहने आदि बेच कर उनकी बीमारीमें लगा दिए हैं ।

मृ०—अरे राक्षसी ! तूने अपना सर्वस्व खोया है ? तूने बाबूजीको खाया है, घर खाया है, रुपया पैसा सब कुछ अपने बापके घर भेज दिया है और तिस पर कहती है कि मैंने अपना सब कुछ गँवा दिया है । चल—निकल यहाँसे ।

हिरण०—मैं कहाँ जाऊँ ?

श०—मैं क्या जानूँ ?

मृ०—जिसका घर भरा है उसीके पास जा। निकल—अभी निकल।

हि०—हाय मा! तुमने क्यों अभागिनीको पेटमें जगह दी थी! देखो, यह लोग अब मुझे घरसे निकाल रहे हैं। हे परमेश्वर! अब क्या होगा!

दोनों—चल, निकल।

हि०—जरा ठहर जाओ, मैंने अपने बाबूजीको कहलवाया है। वे आ जायँ तो मैं जाऊँ।

मृ०—जरा तुम अच्छी तरह घरमें देखो कि इसने कहाँ क्या लुकाया छिपाया है। बापके आने पर यह सब चीजें निकालेगी।

श०—ठहरो, पहले इसे घरसे निकाल दूँ। (हिरणसे) निकल, नहीं तो अभी धक्का देता हूँ।

मृ०—चल, निकल, नहीं तो अभी मार खायगी।

हि०—अच्छा भइया, मैं जाती हूँ।

(टँगने परसे चादर उतारना।)

मृ०—चादर क्यों लेती है? रख इसे।

हि०—हाय! मैं खाली धोती पहन कर घरसे बाहर निकलूँ?

दोनों—निकल, निकल। (मारनेके लिये हाथ उठाना।)

हिरण०—मारते क्यों हो भइया, मैं तो आप ही जा रही हूँ।

[प्रस्थान।

छठा दृश्य ।

शहरके बाहरका एक रास्ता ।
(लालचन्द, रमानाथ और काली पंडितका प्रवेश ।)

लाल०—रामू मामा ! तुमने क्या कहा ?

रमा०—भइया, तुम्हारी गोहर तो उसकी मजदूरनी भी होनेके लायक नहीं है । क्या उसका चेहरा है, क्या उसका रंग है । लेकिन बात सिर्फ इतनी ही है कि जरा अभी नई नई घरसे निकल कर आई है, इसी लिये कुछ लजाती है ।

काली०—लेकिन हमारे बाबू साहब भी बड़े होशियार हैं । यह उसकी सारी लज्जा निकाल देंगे ।

लाल०—क्यों भाई, वह बिलकुल एकदमसे नकचढ़ी और बदमिजाज तो नहीं है ? जो औरत बिलकुल नाक-भौं सिकोड़ कर बैठ जाय और मुँहसे बोले तक नहीं उससे मेरी तबीयत बहुत नाराज होती है ।

रमा०—अजी वह घूँघटमेंसे तिरछी नजरसे देखेगी और धीरे धीरे मुस्कराएगी, वह सोनागाछीमें परीके मकान पर है । मैं तुमसे जहाँ कहता हूँ वहाँ चलो ।

काली०—वाह जी रमानाथ ! तुम भी कैसी बातें करते हो ? तुम इन्हें परीके मकान पर ले जाओगे ? जिस सालेने उस औरतको निकाला है वह बड़ा भारी पाजी है । कहीं कोई झगड़ा फसाद न खड़ा कर दे !

लाल०—नहीं नहीं; रामू मामा ! कोई ऐसा काम न करना, जिसमें झगड़ा खड़ा हो । घर पर अपनी बैठकमें भी नहीं चलना चाहिए,

वहाँ किशोर बहुत उपद्रव करता है। तुम उसे मेरे बगीचेमें ले आओ। वह मुझे पसन्द हो जाय, फिर मैं आज ही गौहरको जवाब दे दूँगा। अरे, वह साली बहुत नखरा करती है।

रमा०—लेकिन भाई! अगर आज मैं तुमको खुश कर दूँगा तो दोसौ रुपए इनाम लूँगा।

लाल०—क्यों भाई, क्या मैं इनाम देनेमें कभी पीछे हटता हूँ? लेकिन हाँ, जैसी औरत कालिन्दी लाई थी वैसी औरत देख कर कौन इनाम देगा?

काली०—अजी अबकी बार काली पण्डितने इसमें हाथ डाला है। माल देख लेना—माल!

लाल०—अच्छा भाई काली पंडित! अब की तुम्हारी ही पण्डिताई देखी जाय। करुणामयकी दो लड़कियोंके ब्याहका भार तुम पर देकर तो मैं उस मामलेसे ही हाथ धो बैठा!

काली०—अरे भाई, मैं एक बात कहना तो बिलकुल भूल ही गया था। आज उनका वह जमाई मर गया।

लाल०—हैं! क्या कहा? मर गया?

काली०—हाँ हाँ जी, मर गया।

लाल०—रामू मामा! तुमने देखा न उस सालेका पाजीपन! अरे जब उसे मरना ही था तब उसने मेरे मुँहका कौर क्यों छीन लिया?

रमा०—अरे वह पाजी था—पाजी।

लाल०—रामू मामा! तुम्हीं बतलाओ कि ब्याहके दिन मैंने उसे कितना समझाया था! मैंने उससे कितना कहा कि भाई अब तुम बहुत दिनों तक नहीं ठहरोगे। क्यों व्यर्थ मेरे काममें बाधा डालते हो? बीचमेंसे हट कर मेरे लिये रास्ता साफ़ कर दो; पर उसने कुछ सुना ही नहीं।

काली०—हैं ! तुमने इतना समझाया और उसने कुछ सुना ही नहीं ?

लाल०—मैंने करुणामयको भी बहुत समझाया कि क्यों इस काठके उल्लूके गलेमें फूलकी माला डलवाते हो ? मेरे कूबड़का ध्यान छोड़ दो और समझ लो कि कन्या सुपात्रके घर पहुँच गई । लेकिन उसने भी मेरी बात न सुनी ।

काली०—उसीका न यह नतीजा है कि एक और लड़की गले पड़ी !

लाल०—क्यों ? उसकी सौतके लड़के तो हैं ही ।

काल०—इसी लिये तो और भी मजा है । वे तो दिनमें दोसौ वार धक्का देकर उसे घरसे निकालनेके लिये खड़े होते हैं ।

लाल०—देखा न, वह कैसा पाजी था ! अरे जब उस कम्बख्तको मरना ही था तब क्यों न उस कन्या बेचारीको एक सुपात्रके घर आने दिया ? वह कम्बख्त अगर उस दिन सेहरा पहन कर वहाँ न आ जाता, तो क्या मजाल थी कि वह माल हाथसे निकल जाता ! मैं तो उसे भी रुपए दे रहा था । समझे, काली पण्डित ?

काली०—अरे, वह सब उसकी बदमाशी थी, आजकलका जमाना ही ऐसा है ।

लाल०—जी तो यही चाहता है कि चल कर उस कम्बख्तको दो चार फटकार सुना आऊँ । कहूँ कि क्यों बच्चा ! मैंने तुमसे पहले ही कहा था न ! तुम आप तो मरे ही, मेरा मजा भी मिट्टी कर गए !

काली०—अरे, वह बेवकूफ कभी समझानेसे समझ सकता है ?

लाल०—अजी जाय, मरे न, हम लोगोंको क्या पड़ी है ! अच्छा काली पण्डित ! तुम्हारी ब्याहकी दलाली तो देख ली गई । पर अब तुम्हारी औरतकी दलाली देखी जाती है ।

काली०—अजी माल देख लेना—माल ।

लाल०—अच्छा, माल भी देखा ही जायगा । अभी हीराके साथ पालकी आती होगी । बहुत दिनसे तुम मुझे आशामें रख रहे हो । आज यदि वह न आई तो देखना मजा !

काली०—भाई ! मैं क्या करूँ ? जिसने उसे निकाला है वह दिन-रात उसके पास बैठा रहता है । आज परी उसको घरसे निकाल देगी और औरतको साथ लेकर यहाँ आ जायगी ।

लाल०—अच्छा, आज तुम लोगोंकी सारी कार्रवाई देखी जाती है ।

[प्रस्थान ।

काली०—क्यों जी, कहीं हम लोग तो किसी आफतमें न फँस जायँगे ?

रमा०—हम लोगों पर क्यों आफत आने लगी ? हम लोग उसे बगीचेके अन्दर करके खसक जायँगे और तब पुलिस लेकर मोहित पहुँच जायगा ।

काली०—लेकिन देखो भाई, इनामके रुपयोंका हिस्सा लगानेमें कहीं मुझे छाँटा न दे देना ।

रमा०—वाह ! तुम भी ऐसी बातें करते हो ! मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ । ऊपर परमेश्वर भी तो हैं । और फिर तुम ब्राह्मण ठहरे, भला तुमसे मैं चालबाजी कर सकता हूँ ? लेकिन मोहितने इतनी देर क्यों की ? जरा मैं आगे बढ़कर देखूँ ।

[प्रस्थान ।

काली०—(स्वगत) जब मोहितका मकान रेहन रखवाया गया था तब उसकी दलालीमेंसे इस सालेने मुझे एक पैसा भी नहीं दिया था । मैं समझता हूँ कि इन रुपयोंमेंसे भी यह मुझे कुछ न देगा ।

अगर कहीं फौजदारीका मुकद्दमा चल गया तब रुपया मोहितके हाथमें पड़ जायगा और फिर वह रुपया रमा मार लेगा । इस लिये मैं बेटेका पहलेसे ही इन्तजाम किए देता हूँ । यह तो पालकीको साथमें लेकर बागमें चला जायगा और तब मैं चल कर रूपचंद मित्तरको सब खबर दे दूँगा। कहूँगा कि ये सब लोग मिल कर तुम्हारे लड़केको फौजदारीके मुकद्दमेमें फँसाना चाहते हैं । रूपचन्द हजार कंजूस हो तो भी जब मैं उसे यह खबर दूँगा तब वह कुछ-न-कुछ मुझे देगा ही, और नहीं तो कमसे कम रमाकी तो जरूर दुर्दशा होगी ।

[प्रस्थान ।

(रमानाथ और पालकीके साथ हीराका प्रवेश ।)

रमा०—(हीरासे) तुम सब लोग इधर उधर ही रहो । दोनों कहारोंको तुम अपने साथ ले जाओ। अगर वे लोग यहाँ रहेंगे तो कुछ गड़बड़ करेंगे ।

पह० कहार—बाबूजी, सवारी कहाँ है ?

हीरा—ठहरो, आती है न ? इतनी जल्दी काहेकी है ? आओ तब तक तुम्हें बढ़िया सिगरेट पिलाऊँ । सवारी तैयार होती है ।

पह० कहार—विलायती सिगरेट ? उसके पीनेसे तो जाति जायगी।

दू० क०—अरे उसका धूआँ चबाके पीएँगे तब जाति कैसे जायगी ?

हीरा—हाँ—यह उस्ताद है । आज तुम लोगोंकी किस्मत खूब चमकी है—खूब इनाम मिलेगा ।

[हीरा और दोनों कहारोंका प्रस्थान ।]

(कालीका पुनः प्रवेश ।)

काली०—क्यों जी, अब देर काहेकी है ?

रमा०—उसने कहा है कि हम आते हैं। चलो हम लोग यहाँसे खसक जायँ।

[दोनोंका प्रस्थान।

(किरण और मोहितका प्रवेश।)

किरण०—मैं हाथ जोड़ कर कहती हूँ, मैं कल तुम्हारे साथ चलूँगी। मेरे बहनोई मर गए हैं; उनके मरनेकी खबर सुन कर मेरी माका बहुत बुरा हाल हो गया है। आज दिनभर उन्होंने पानी तक नहीं पीआ है। तुम आज चल कर मुझे घर पहुँचा आओ। कल मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।

मोहित०—तुम दस बार यही व्यर्थकी बात कह चुकीं और मैंने बीस बार कह दिया कि नहीं—नहीं—नहीं। अगर तुम्हें आज मेरे साथ चलना हो तो चलो, नहीं तो तुम सीधे अपने घर चली जाओ और मैं अपना रास्ता देखूँ।

किरण०—मैं हाथ जोड़ती हूँ, तुम नाराज मत हो। तुम मुझे जहाँ ले चलोगे मैं वहीं चलूँगी।

मोहित०—मैं क्या तुम्हें ऐसी वैसी जगह ले जाता हूँ? बढ़िया बगीचेमें ले चलूँगा। ऐसा बगीचा तुम्हारे बाप-दादाने तो क्या, चौदह पुरषाने भी न देखा होगा। और फिर वहाँ तुम्हें जड़ाऊ गहनोंसे लाद दूँगा।

किरण०—चाहे तुम मुझे ले चलकर किसी पेड़के नीचे बैठा दो, मैं चुपचाप तुम्हारे साथ चली चलूँगी। मैं यह पीतलके गहने उतार कर जड़ाऊ गहने नहीं पहनना चाहती। मैं केवल तुम्हें चाहती हूँ। तुम्हारी सेवा करूँगी—बस यही मेरे जीवनका सब कुछ है। यदि तुम मुझे अपने चरणोंमें जगह दो तो फिर मैं रानी बनना भी नहीं चाहती।

मोहित०—अच्छा तो फिर चलो।

किरण०—लेकिन तुम बाबूजीको कहला दो।

मोहित०—मैं कहला देता हूँ—चलो।

किरण०—और कितनी दूर चलना होगा।

मोहित०—यह क्या सामने पालकी रखी है। (आगे बढ़ कर) इसी पर सवार हो जाओ।

किरण०—पालकी पर दोनों आदमी कैसे बैठेंगे?

मोहित०—मैं पैदल चलूँगा। तुम घबराती क्यों हो?

किरण०—तब मैं किसके साथ जाऊँगी? गाड़ी कर लो, दोनों आदमी साथ ही चलें।

मोहित०—क्यों, पालकीमें तुम्हें डर किस बातका है? दोनों कहार मेरा मकान जानते हैं।

किरण०—मैं अकेली कहाँ जाऊँगी?

मोहित०—मैं जो तुम्हारे साथ हूँ।

किरण०—नहीं नहीं, तुम गाड़ी कर लो—दोनों आदमी साथ ही चलेंगे।

मोहित०—पालकी पर बैठो न!? ये दोनों अपने आदमी हैं। तुम्हें डर किस बातका है?

किरण०—तुम कहाँ जाते हो?

मोहित०—मैं कहाँ जाऊँगा—यहीं तो हूँ। चलो—चलो, पालकी पर बैठ जाओ।

(किरणका पालकीमें बैठना।)

मोहित०—रामू मामा!

(रमानाथका प्रवेश।)

रमा०—(एक तरफ हट कर) कहो, क्या है?

मोहित०—(धीरेसे) तुम पालकी ले आए, यह तुमने बड़ी समझदारीका काम किया। अगर तुम गाड़ी लाते तो बड़ी आफत होती। बिना मेरे साथ चले वह न जाती। अच्छा तुम कहारोंको बुलाओ और पालकी बगीचे ले चलो। मैं थाने पर जाता हूँ।

[मोहितका प्रस्थान।

किरण०—(पालकीसे बाहर निकल कर) हैं! तुम कहाँ जाते हो?

(काली, हीरा और दोनों कहारोंका प्रवेश।)

रमा०—तुम डरती क्यों हो? मैं तो तुम्हारा ससुर हूँ। मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। चलो—पालकी पर बैठ जाओ।

किरण०—तुम कौन हो? मेरे स्वामी कहाँ गए?

काली०—यहीं हैं, तुम मुझे नहीं पहचानतीं? मैं पं० कालीदास हूँ। मैंने ही तुम्हारा ब्याह ठीक किया था।

किरण०—तुम सब लोग यहाँ क्यों आए हो?

रमा०—आज तुम अपने घर जाओगी। हम सब लोग वहाँ चल कर खाएँ-पीएँगे। तुम्हारी सास तुम्हारा आसरा देख रही है।

किरण०—तुम मेरे स्वामीको बुलाओ, नहीं तो मैं न जाऊँगी।

रमा०—वाह बेटी, तुम रास्तेमें खड़ी होकर झमेला करती हो! चलो पालकीमें बैठ जाओ। वह लड़का ठहरा, तुम्हारी पालकीके साथ वह बेचारा कहाँ तक दौड़ेगा।

किरण०—नहीं, मैं पालकी पर नहीं बैठूँगी। जब तक मेरे स्वामी साथमें न होंगे तब तक मैं कहीं न जाऊँगी। मैं अपने घर जाती हूँ।

(मोहितका पुनः प्रवेश।)

मोहित०—वाह! मैं तुम्हारी पालकीके साथ साथ दौड़ूँ! जिसमें मेरा सारा बना बनाया खेल ही बिगड़ जाय! तुम्हें चलना हो तो चलो, इन्हीं रामू मामाके साथ चली जाओ।

किरण०—विना तुम्हारे साथ चले मैं न जाऊँगी।

मोहित०—चल कम्बख्त! अगर अपना भला चाहती हो तो चुप-चाप इसी पालकी पर बैठ जा। नहीं तो फिर मैं कभी तेरा मुँह भी न देखूँगा।

किरण०—नहीं नहीं, मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ, तुम साथ चलो।

मोहित०—अरे! वाहरे तेरा नखरा! मैं तेरे साथ चल कर वहाँ कबूतर-कबूतरीकी तरह तेरे मुँहके साथ मुँह मिला कर बैठूँगा—इसी लिये मैं तुझे घरसे निकाल लाया हूँ। चल—पालकी पर बैठ।

किरण०—नहीं, मैं विना तुम्हारे न जाऊँगी।

मोहित०—यह सब प्यार मुहब्बत रहने दो। तुम समझती होगी कि मेरे घर चल कर रहोगी—घर-गृहस्थी सँभालोगी, इस खयालको अपने दिलसे निकाल दो।

रमा०—(अलग हट कर धीरेसे) अरे चुप चुप!

मोहित०—अजी चुप कैसी? मैं साफ बात जानता हूँ। अब तो यह मेरे फन्देमें फँस ही गई है, जाती कहाँ है! (किरणसे) चलो, पालकी पर बैठना हो तो बैठो।

किरण०—हें! यह तुम कैसी बातें कर रहे हो? बतलाओ, बतलाओ, जल्दी बतलाओ; तुम मुझे यहाँ क्यों लाए हो और कहाँ भेज रहे हो?

रमा०—बेटी, तुम व्यर्थ किचकिच मत करो। लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे। मोहित तो ठहरा पागल, अगर तुम उसकी बात न मानोगी तो वह लोगोंको बुला कर साफ कह देगा कि यह घरसे निकली जा रही है; फिर घर घर तुम्हारी बदनामी होगी। तुम चुपचाप पालकी पर बैठ जाओ। मैं तो तुम्हारे साथ ही चलता हूँ; फिर तुम्हें डर किस बातका है?

किरण०—बतलाओ, बतलाओ, तुमने पहले क्या कहा था ? जब तुम मुझे ले चल कर अपने घरमें रखना ही नहीं चाहते थे तब तुम मुझे यहाँ क्यों लाए ?

मोहित०—बतलाऊँ कि तुम्हें क्यों ले आया था ?

रमा०—(अलग हट कर) अरे चुप भी रह।

मोहित०—वाह जी चुप कैसी ! मुझे डर किस बातका है ? भला मैं एक औरतसे डर जाऊँगा ? Damn it, अच्छा तो लो, मैं तुम्हें बतलाता हूँ कि मैं तुम्हें यहाँ क्यों लाया हूँ। बात यह है कि मुझे है रुपएकी जरूरत। ललुआ सालेसे चल कर रुपया वसूल करना होगा। रामू मामा और काली पण्डितने उसको अच्छी तरहसे समझा-बुझा कर ठीक कर रखा है कि तुम एक रण्डी हो और अपने घरसे निकल आई हो। इधर तो ये लोग तुम्हें उसके बगीचे ले जायँगे और उधर मैं थानेमें जाकर खबर दूँगा कि ये लोग जबरदस्ती मेरी औरतको निकाल कर बगीचे ले गए हैं। बस वह झक मार कर आप ही रुपए गिन देगा। समझ गई ? बड़ी बड़ी मुश्किलोंसे यह तरकीब निकली है।

किरण०—क्या कहा ? तुम कहो कि हम झूठ बोले हैं। यदि सच भी हो तो भी कहो कि तुमने झूठ कहा है। तुम मेरे हृदयेश्वर हो, इष्ट देवता हो। साफ साफ कहो कि तुम झूठ बोले हो जिसमें तुम्हारे प्रति मेरे मनमें घृणा न हो, जिसमें पहलेहीकी तरह तुम्हारे ध्यानमें सदा मग्न रह सकूँ। कहो, कहो कि हमने जो कुछ कहा है वह सब झूठ है।

मोहित०—वाहवा ! आज तो खूब खूब बातें मुँहसे निकल रही हैं। बड़ी सफाई, बड़ी भलमनसत झाड़ी जा रही है।

किरण०—कहो, कहो, तुम्हारे पैर पड़ती हूँ जल्दी कहो । तुम्हारे प्रति मुझे घृणा हो रही है । तुम जल्दी कह दो कि ये सब बातें झूठ हैं ।

हीरा०—रमा बाबू ! तुम लोग औरतोंको निकालना नहीं जानते। हमारे गाँवका जमींदार होता तो अब तक मुँहमें कपड़ा बाँध कर ले गया होता । इसके मुँहमें कपड़ा बाँध कर इसे पालकीमें रख दो । दोनों कहारोंको जो दस दस रुपए दिए हैं वह किस लिये ? बिना जबर-दस्तीके कहीं ऐसे ऐसे काम होते हैं ?

मोहित०—वाह जी हीरा ! वाह ! खूब तरकीब बतलाई । लो, रामू मामा इसे उठाओ । काली पण्डित, तुम इसके हाथ-पैर पकड़ो ।

(दोनों कहारोंका डर कर खसक जाना ।)

काली०—आओ रमानाथ ! (अलग हट कर) अजी हम लोगोंको डर काहेका ! जब उसका मालिक ही उसे जबरदस्ती पकड़ कर लिए जाता है तब हम लोगोंका क्या हो सकता है । (प्रकाश्य) लो पकड़ो । हीरा ! तुम इसके मुँह पर पकड़ा बाँधो ।

किरण०—खबरदार—मुझे हाथ न लगाना !

हीरा०—ठहरो जी, मैं कपड़ा बाँधता हूँ ।

(किरणके मुँह पर कपड़ा बाँधनेके लिये आगे बढ़ना ।)

किरण०—(इधर उधर दौड़ कर) कोई है ? मुझे बचाओ ! मुझे बचाओ !

(हीराका किरणके मुँह पर कपड़ा बाँधना और सबका उसे खींच कर पालकीके पास ले जाना ।)

रमा०—अरे वह दोनों कहार कहाँ गए ? कहार ! कहार !

किरण०—(अपने मुँह परका कपड़ा हटा कर) अरे, कोई मुझे बचाओ ! अरे कोई मुझे बचाओ ।

(दोनों कहारोंका किशोर तथा और कई आदमियोंको लिए हुए जल्दीसे प्रवेश ।)

सब—डरो मत, डरो मत । हम लोग आ गए ।

किशोर—पकड़ो, पकड़ो, इन सब लोगोंको पकड़ो ।

(सबका रमा, काली, मोहित और हीरा आदिको पकड़ना ।)

मोहित०—वाह किशोर बाबू ! मेरी स्त्री है; मैं उसे लिए जाता हूँ। इसमें आपका क्या ?

किशोर—कौन मोहित बाबू ?

मोहित०—हाँ हाँ, मैं हूँ । आप अपना रास्ता लीजिए ।

किशोर—यह क्या मामला है ?

किरण०—किशोर बाबू ! किशोर बाबू ! मुझे बचाइए । मेरे स्वामी यह कह कर मुझे घरसे ले आए थे कि मैं तुम्हें अपने घर ले चलूँगा। अब ये लोग जबरदस्ती मुझे लालचन्दके बगीचेमें ले जा रहे हैं ।

मोहित०—बिलकुल झूठ ।

किशोर—मोहित बाबू ! क्या यह झूठ बोलती है ?

मोहित०—हाँ, मैं इसे अपने घर ले जाता हूँ ।

किशोर—हाँ हाँ, मैं समझ गया । इस तरफ आपका जो मकान और बाग है उसीमें आप इसे ले जाते हैं ! मोहित बाबू ! आपको लोग जो जानवर कहते हैं वह ठीक कहते हैं । आप अपनी स्त्रीको बहका कर दूसरे मरदके पास पहुँचानेके लिये ले आए हैं ? दूसरे मरदके पास उसे पहुँचानेके लिये आप उसे जबरदस्ती पालकी पर बैठा रहे हैं ? अगर यह बात मैं किसी दूसरेसे कहूँ तो शायद वह मुझे झूठा ही कहे । आप हिन्दुओंके एक उच्च कुलमें जन्म लेकर ऐसा नीच काम करते हैं ? मेरी तो समझमें ही नहीं आता कि मैं आपको क्या कहूँ !

मोहित०—क्यों इसमें क्या हुआ है ? मैं तो अपनी स्त्रीको लिए जाता हूँ। मैं अदालतमें आप पर भी दावा करूँगा ।

किशोर—यदि आप इस साध्वी स्त्रीके पति न होते तो मैं आपको दावेका मजा दिखला देता और इन बदमाशोंको भी अच्छी तरह मजा चखा देता । लेकिन क्या कहूँ, यदि आपको कोई दण्ड दिलाया जायगा तो आपकी साध्वी स्त्रीको बहुत ही कष्ट होगा ।

काली०—साहब, मैं इस मामलेमें कुछ नहीं जानता ।

पहला भला आदमी—हाँ हाँ क्यों नहीं ? (कालीको मारना ।)

काली०—दोहाई बाबूजीकी ! मैं कुछ नहीं जानता । इस तरह मारिएगा तो मेरे कपड़े खराब हो जायँगे । मैं इस मामलेमें नहीं हूँ । यह सब इसी रमानाथकी कारस्तानी है ।

(लोगोंका रमानाथको मारना ।)

रमा०—नहीं बाबूजी, मुझे मत मारिए । मैं पूरा पूरा हाल आप लोगोंको बतलाए देता हूँ । पहले सब हाल सुन लीजिए तब जो कुछ करना हो सो कीजिए ।

किशोर—बतलाओ—क्या कहते हो ?

रमा०—आप लोगोंकी इस मारसे तो मेरी जान निकल रही है । पहले मुझे छोड़ दीजिए तब मैं साफ साफ हाल कहता हूँ ।

किशोर—अच्छा, इसे छोड़ दो ।

(लोगोंका रमाको छोड़ देना ।)

रमा०—मोहित—मोहित—

(रमाका जल्दीसे भागना और एक भले आदमीका उसके पीछे दौड़ना ।)

किशोर—जदुनाथ ! लौट आओ, लौट आओ, वह पागल है । कल वह मेरी बैठकमेंसे एक घड़ी चुरा लाया था और उसे कहीं रेहन रख आया था । मैंने सोचा कि क्या एक घड़ीके लिये एक आद-

मीको जेल भेजवाऊँ। इसी लिये मैं कुछ न बोला। लेकिन आज मैं इसी अपराध पर उसे पुलिसमें पकड़वा दूँगा। मोहित बाबू! आप अपनी स्त्रीके पुण्य-प्रतापसे बच गए। अब आप जाइए। यदि आप क्षण भर भी और ठहरेंगे तो मारे चाबुकोंके आपकी खाल खींच ली जायगी।

मोहित०—Damn it इस कम्बख्तने सब चौपट कर दिया।

[प्रस्थान।

काली०—बाबू साहब, मुझे छोड़ दीजिए—मुझे छोड़ दीजिए।

किशोर—बड़े दुःखकी बात है कि तुम ब्राह्मण और कुलके आचार्य्य होकर भी अच्छे बुरेका कुछ ज्ञान नहीं रखते। साधारण कहार भी जिस कामको बहुत ही अनुचित और निन्दनीय समझता है उसी कामको करनेके लिये तुम तैयार हो गए! अब तुम यह बात अच्छी तरह समझ लो कि इस शहरमें तुम अब न रहने पाओगे। आज इसी साध्वीके कारण तुम बच गए हो।

तीसरा भला आदमी—दूर हो नीच!

(जोरसे एक धौल लगाना।)

काली०—अरे बापरे!

(जल्दीसे भागना।)

हीरा—साहब! मैं तो मुनीमजीका नौकर हूँ। उन्हींके हुक्मसे मैं यहाँ पालकी लाया हूँ।

किशोर—अच्छा जी, इसको भी छोड़ दो। (हीरासे) जाओ, जाकर अपने मुनीमजीसे कह देना कि यह सब काम अच्छा नहीं है।

हीरा—साहब! इसमें उनका कोई अपराध नहीं है। वे कभी किसी भले घरकी स्त्रीको बुरी निगाहसे नहीं देखते। यही रमानाथ

बाबू और काली पण्डितने कहा था कि सोनागाछीसे एक रण्डी निकल आई है । जिसने उसे नौकर रखा था उसीसे उसका पीछा छुड़ानेके लिये हम लोग उसे ले आवेंगे ।

किशोर—चल, दूर हो ।

[हीराका प्रस्थान ।

किशोर—(किरणसे) वहन, किरण ! तुम इस पालकी में बैठ जाओ । तुम डरो मत, हम लोग तुम्हारे साथ चलते हैं । (यदुनाथसे) अगर आज हम लोगोंकी समितिकी इस तरफके बगीचेमें पार्टी न होती तो सर्वनाश ही हो चुका था । (कहारोंसे) लो, तुम लोग पालकी उठाओ । आज तुम लोगोंने जो काम किया है उससे परमेश्वर तुम लोगों पर वहुत प्रसन्न हुए हैं । चलो, उन्हें पहुँचा दो । मैं तुम सबको प्रसन्न कर दूँगा । (अपने साथियोंसे) चलिए हम लोग इन्हें पहुँचा कर घर चलें । परमेश्वरने आज हम लोगोंके द्वारा बहुत अच्छा काम कराया है । मैं समझता हूँ कि हम लोग जिस काममें हाथ डालेंगे उसमें वे हमारी पूरी पूरी सहायता करेंगे ।

दूस० भला आ०—अवश्य करेंगे । मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोगोंकी इस छोटी समितिको वे बहुत बड़े बड़े कार्योंका भार देंगे । हम लोगोंकी प्रार्थना विफल न होगी ।

[सबका प्रस्थान ।

चौथा अंक।

पहला दृश्य।

लालचन्दकी बैठकके सामनेका रास्ता।

रूपचन्द मित्र, ग्वाला, बजाज, मोदी और हलवाई।

रूप०—क्यों जी, तुम सब लोग करुणामयका मकान देख रहे हो, इसी लिये न चुप हो ? अच्छी बात है; और महीने दो महीने चुपचाप बैठे रहो। उनका मकान मेरे पास दो बार रेहन हो चुका है। मैंने डिगरी जारी कराई है और अब मैं उसे नीलाम कराऊँगा। अदालतने उन्हें छः महीनेका समय दिया था। उसमेंसे पाँच महीने तो बीत गए अब एक महीना और बाकी है। एक महीने बाद मैं उनके मकान पर अधिकार कर लूँगा। इसके बाद वे दिवालेकी दरखास्त देंगे और तुम सब लोग अपना अपना हैंडनोट शहद लगा कर चाटना।

ग्वा०—क्या कहूँ सरकार, पहले ब्याहमें मुझसे उन्होंने जो दूध-दही लिया था अभी उसका रुपया मुझे आज तक नहीं मिला।

रूप०—सभीका हिसाब तो मैंने देख लिया। अभी रुपया मिला ही किसे है ? तुम्हारा मिठाईका दाम बाकी है, तुम्हारा घी और मैदेका दाम बाकी है, तुम्हारा कपड़ेका दाम बाकी है—मैं देखता हूँ कि सभीका तो बाकी है। सुना है कि दवाखानेका भी बहुत बड़ा बिल है जिसे कीड़े काट रहे हैं (बजाजसे) लेकिन तुमने तो अपने कपड़ोंके दामकी खूब किस्त करा ली।

बजाज—अरे साहब ! किस्तमें भी मुझे कुछ नहीं मिला।

सब—अब आप ही बताइए कि क्या किया जाय ?

रूप०—खर्चा जमा करके डिगरी जारी कराके अपने पास रखो तब देखो शायद कुछ मिल जाय।

मोदी—साहब, मैंने तो जबसे दूकान की तबसे आज तक कभी किसी पर नालिश की ही नहीं। मैं तो यह भी नहीं जानता कि अदालत कैसी होती है। मैं रोज अदालत दौड़ूँगा या अपनी दूकान-दारी देखूँगा ?

सब—साहब, हम लोग भला कैसे रोज रोज कचहरी दौड़ेंगे ?

रूप०—क्या कहूँ ? तुम लोग गरीब आदमी ठहरे, बड़ी झंझटमें फँस गए हो। अच्छा, इस समय तुम सब लोग जाओ, कल खा-पी कर कचहरी चले आना। मैं अपने मुख्तारसे कह दूँगा; वह तुम सब लोगोंका इन्तजाम कर देगा।

सब—नहीं सरकार, कल हम सब लोग आपके मकान पर ही हाजिर होंगे।

रूप०—नहीं नहीं, तुम लोग गरीब आदमी ठहरे। क्यों अपने कामका हरज करके इतनी दूर दौड़ोगे ? मैं तो लाल बाबूकी बैठकक्की मरम्मतका काम देखनेके लिये रोज इस महल्लेमें आया ही करता हूँ। इस समय तुम लोग जाओ। कल सब लोग अदालतमें पहुँच जाना। मैं अपने मुख्तारसे कह कर सब ठीक कर रखूँगा। सब लोग अपना अपना हैण्डनोट लेते आना।

मोदी—लेकिन मैं तो आपके मुख्तार साहबको पहचानता ही नहीं।

रूप०—तुम लोग खाली कचहरी पहुँच जाना। मुख्तारने हैंडनोट-की चार पाँच डिगरियों पर दसखत कर दिया है। मेरा नौकर निधि-राम सरकार अदालतमें ही रहेगा। ज्यों ही तुम लोग पहुँचोगे त्यों ही वह सब ठीक कर देगा। निधिरामको तो पहचानते हो न ?

ग्वा०—जी हाँ, मैं पहचानता हूँ। वे मजदूरोंका काम देखनेके लिये रोज इस महल्लेमें आया करते हैं।

रूप०—बस तब क्या है! कल चले आना।

सब—सरकार! आप गरीबोंके मा-बाप हैं।

[बजाजके अतिरिक्त सबका प्रस्थान।

रूप०—क्यों जी, तुमने वारण्ट निकलवाया?

बजाज—जी हाँ सरकार, सिपाही इसी मोदीकी दूकान पर बैठा है।

रूप०—अच्छा तुम खूब होशियार रहो। देखो खबरदार कोई ऐसी बात न करना जिससे यह मालूम हो कि तुम मुझे पहचानते हो।

बजाज—वाह सरकार, भला यह भी कोई बात है? मैं आपकी एक ही बातसे सब कुछ अच्छी तरह समझ गया।

[रूपचन्दका प्रस्थान।

(सिपाहीका प्रवेश।)

सिपा०—अब मैं कब तक बैठा रहूँगा? मुझे कचहरी जाना है।

बजा०—साहब जरासा ठहर जाइए, वह अभी आता होगा।

सिपा०—तुम उनको आफिसमें क्यों नहीं गिरफ्तार कराते?

बजा०—साहब, इसमें एक मतलब है। यह दो रुपए पान खानेके वास्ते लीजिए। (रुपए देना) वह आ रहा है। आप जरा उधर हो जाइए।

(सिपाहीका आड़में हो जाना।)

(आफिसके कपड़े पहने हुए करुणामयका प्रवेश।)

करुणा०—क्या कहूँ, आज फिर देर हो गई! कहीं ऐसा न हो कि साहब आज फिर तनखाह काटने लग जायँ। भला लेनदार मेरी दुर्दशा काहेको सुनेंगे! भला उनके हाथ-पैर जोड़ कर कितने दिन बिताऊँगा! हाथ-पैर जोड़ कर इस महीनेमें

तो किसी तरह रोक रखा है । देखो, और मकान छोड़ देनेसे कुछ रुपए मिल जायँ तो दस पाँच किस्तें सँभाल लूँ । कमजोर पर सभी तरहसे आफ़त आती है । इस समय मेरा हाथ दबा हुआ है । इस लिये सभी लोग आधे दाम पर मकान लेना चाहते हैं । यदि पूरा दाम न मिला तब तो सब रुपए मकानको रेहनसे छुड़ानेमें ही निकल जायँगे और जब महीना पूरा होने पर किस्त न दे सकूँगा तो जेल जाऊँगा ।

बजाज—साहब, मुझे अभी तक किस्तके रुपए नहीं मिले । मैं गरीब आदमी ठहरा; मेरा काम कैसे चलेगा ?

करुणा०—भाई तुम थोड़ा और सब्र करो, मैं मकान बेच रहा हूँ । सब बात पक्की हो गई है । उसका रुपया मिलते ही मैं सबका देना चुका दूँगा ।

बजाज—हाँ हाँ, मैं समझता हूँ । आप मकान बेच कर दिवालेकी दरखास्त देंगे । साहब, देखिए, यही करुणामय बाबू हैं ।

(हाथ पकड़ लेना ।)

(सिपाहीका प्रवेश ।)

करुणा०—तुम मुझे पकड़ो मत, मैं भागता नहीं हूँ ।

सिपा०—नहीं नहीं, आप भले आदमी हैं । बाबू साहब ! यह आपके नामका Altachment है; देखिए । मैं सरकारी नौकर ठहरा, क्या करूँ ! आपको मेरे साथ कचहरी चलना होगा ।

करुणा०—एक नौकरी ही नौकरी थी सो मालूम होता है कि अबकी वह भी गई । हे परमेश्वर ! मुझे और कितना दुःख दोगे ! और मैं कहाँ तक सहूँगा ! नारायण ! नारायण ! मेरे परिवारके लोग विना भोजनके मर जायँगे । नए साहब यों ही मुझसे

नाराज रहते हैं। यह हाल सुन कर तो वे आज ही जवाब दे देंगे। हे परमेश्वर ! क्या होगा !

बजाज--साहब इन्हें ले चलिए।

सिपा०--एक गाड़ी ले आओ। क्या यह पैदल चलेंगे ?

(रूपचन्द मित्रका प्रवेश।)

करुणा०--हे परमेश्वर ! यह तुमने क्या किया !

रूप०--यह क्या माजरा है ?

बजाज--साहब ! मैं गरीब आदमी हूँ। इनके यहाँ तीन किस्तोंका मेरा रुपया बाकी है। इन्होंने मुझसे दुशाला और गरम कपड़े लिए थे। मैं गरीब आदमी हूँ। इन्होंने मेरा रुपया अभी तक नहीं दिया। दस रुपए महीनेकी किस्त हुई थी सो भी नहीं देते। अब बताइए मैं क्या करूँ ?

रूप०--तुम्हारा कितना रुपया बाकी है ?

बजा०--खरचे समेत डेढ़सौ रुपया।

रूप०--अच्छा यह अपना रुपया लो और बाबू साहबको छोड़ दो।

(डेढ़सौ रुपएके नोट देना।)

बजा०--साहब मैं गरीब आदमी हूँ। रुपया मिल गया अब और मुझे क्या चाहिए !

रूप०--रुपया मिल गया न, अब जाओ।

बजा०--सलाम साहब, सलाम।

सिपा०--साहब, आप नाराज मत होइएगा। मेरा जो काम था वही मैंने किया।

[सिपाही और बजाजका प्रस्थान।

(नलिनके पीछे पानवालेका दौड़ते हुए आना ।)

पानवाला—(नलिनको पकड़ कर) क्यों वे साले रोज सिगरेट चुरा कर भागता है ? सिपाही ! सिपाही ! (नलिनको मारना ।)

नलिन—अरे बापरे ! अरे बापरे !

(करुणामयसे लिपट जाना ।)

रूप०—क्या है, क्या है ?

पानवा०—साहब, यह रोज मेरी दूकानसे सिगरेटका बक्स लेकर भागता है।

करुणा०—नलिन ! अब तुम्हारी यह हालत हो गई ! लेकिन नहीं, इसमें तुम्हारा कोई अपराध नहीं । पहले तुम रोज स्कूल जाया करते थे और जब कोई तुम्हें स्कूल जानेसे रोकता था तब तुम रोते थे । जब स्कूलकी फीस नहीं मिलती थी तब तुम पैर पकड़ कर रोते थे । लेकिन जब मैं तुम्हें फीस नहीं दे सका तब मैंने तुम्हारा स्कूल जाना छुड़ा दिया और तुम्हें घर पर बैठा रखा । इसीसे तुम्हारी यह दशा हुई । इसमें तुम्हारा कोई अपराध नहीं है । सब अपराध मेरा ही है ।

रूप०—ले, यह रुपया ले और जा ।

(रुपया देना ।)

पानवा०—साहब मैं बहुत गरीब आदमी हूँ ।

रूप०—ले ले—जा ।

[पानवालेका प्रस्थान ।

रूप०—(नलिनसे) छिः ! तुम सिगरेट चुरा कर पीते हो !

करुणा०—महाशय ! आप उसे कुछ न कहिए । इसमें उसका कोई अपराध नहीं है । जिस दिन घरमें रसोई तैयार न होती थी उस दिन यह बिना खाए ही स्कूल चला जाता था । रोज आधी

रात तक पढ़ा करता था। हम लोग जवरदस्ती इसे सोनेके लिये भेजते थे। हर साल इसे First Price मिला करता था। मैंने ही इसका स्कूल जाना वन्द करके इसे घरमें वैठा रखा है। वंशकी रक्षा करनेके लिये मैंने विवाह किया था सो वंशकी रक्षा हो गई, वहुत अच्छी तरह हो गई। अव मृत्युके सिवा मेरे लिये और कोई उपाय नहीं है। महाशय! मैं समझता हूँ कि आपका ही नाम वावू रूपचन्द मित्र है। लोग आपकी निन्दा करते हैं, आपको कंजूस वतलाते हैं और कहते हैं कि आप लोगोंका सर्वनाश करते हैं। मैंने सुना था कि आपने मेरे वड़े दामादका मकान धोखा देकर लिखवा लिया था। लेकिन मैं देखता हूँ कि आपका व्यवहार तो इन सवसे विलकुल विपरीत है।

रूप०—अजी साहव, आप लोगोंकी वात छोड़ दीजिए। आपका समय हो गया; अव आप आफिस जाइए।

करुणा०—महाशय, आज मैं आफिस कहाँ जाता हूँ? जानेके लिये तो मेरे पैर ही नहीं उठते, सिरमें चक्कर आता है। अव तो मेरा किसी तरह निस्तार नहीं।

रूप०—(रोते हुए नलिनसे) वेटा, तुम घर जाओ।

[नलिनका प्रस्थान।

रूप०—करुणामय वावू! मैंने आपके विषयमें वहुतसी वातें सुनी हैं। एक दलाल कहता था कि आप अपना मकान वेचनेवाले हैं। उसीने आपके विषयमें और भी कई वातें मुझसे कही थीं। इसी लिये मैंने सोचा था कि जव आप आफिससे लौट कर आवें तव आपसे कुछ वातचीत करूँ और हो सके तो आपके लिये कोई अच्छा उपाय निकालूँ। मैंने सुना है कि आपके मकानका पूरा पूरा दाम नहीं लगता।

करुणा०—जी हाँ, आजकल मेरा हाथ वहुत दवा हुआ है इसी-लिये मकानका कोई पूरा दाम नहीं लगाता। सब लोग यही सोचते हैं कि चार दिन वाद मकान निलाम होगा ही; तव आप ही आधे दाममें मकान मिल जायगा।

रूप०—हूँ, मेरे रहते तो उन लोगोंकी यह वासना पूरी नहीं हो सकती। जिसके पास आपने अपना मकान रेहन रखा है, मुझसे रुपए लेकर, उसके रुपए फेर दीजिए। मैं आपसे साधारण ही सूद लूँगा—अधिक नहीं लूँगा। और आप अपने लेनदारोंकी एक फेह-रिस्त वनाइए; मैं उन सबको बुला कर किस्त बाँध दूँगा। हर महीने थोड़ा थोड़ा रुपया चुकाते जाइएगा और अगर वीचमें कुछ जरूरत हो तो मुझसे भी रुपए ले लीजिएगा। और उसके वाद अगर आपका जी चाहे तो मकान छोड़ दीजिएगा। मकानका जो कुछ वाजिव दाम होगा उसके सिवा मैं पाँचसौ रुपए और दूँगा। मैं देखता हूँ कि आप भले आदमी हैं; पर इस समय बड़ी विपत्तिमें फँस गए हैं।

करुणा०—महाशय! क्या आप कोई देवता हैं? क्या विपत्तिके इस अथाह समुद्रमेंसे मुझे किनारे लगानेके लिये परमेश्वरने आपको यहाँ भेजा है? मेरी समझमें नहीं आता कि मैं क्या कहूँ और किस प्रकार आपके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करूँ। आप दरिद्रों और अनाथोंके बन्धु हैं। जगदीश्वर आपका मंगल करे।

रूप०—जाइए, जाइए, अव आप आफिस जाइए। आफिससे लौटते समय एक वार मुझसे मिल लीजिएगा।

करुणा०—नमस्कार महाशय!

रूप०—नमस्कार, नमस्कार।

[करुणामयका प्रस्थान।]

(लालचन्दका प्रवेश।)

लाल०—बाबूजी ! बाबूजी ! क्या हुआ ? फँसा लिया न ?

रूप०—चुप रहो, रास्तेमें मत चिल्लाओ।

लाल०—बाबूजी बाबूजी, मुझे ढारस दो नहीं तो मैं जल कर मर जाऊँगा। अगर इनकी सबसे छोटी लड़कीका भी व्याह मुझसे करा सको तो मैं समझूँगा कि तुम असली बाप हो—ठीक बाप जैसे बाप हो। बड़ी लड़की हाथसे निकल गई—बहुत अच्छा हुआ। मझली लड़की हाथसे निकल गई—यह भी बहुत अच्छा हुआ। इन दोनोंके हाथसे निकल जानेसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। लेकिन बाबूजी ! छोटी लड़की जो है वह बिलकुल परी है—परी। मैंने उसे मेमोंके स्कूलवाली गाड़ी परसे उतरते हुए देखा था। बस उसे देखते ही मैं तो लट्टू हो गया। क्या कहूँ बाबूजी, उसके चेहरेका जैसा रंग है उसके सामने मेमोंके चेहरेका रंग झख मारे। उसके चेहरेकी जो छवि है वह छवि काहेको है छविकी बाप है, बल्कि छविके बापकी भी बाप है। बाबूजी, मैं क्या कहूँ ! मैं तो उसकी एक चितवन पर ही मर गया। बाबूजी मुझे आशा दिलाओ—मेरा तो दम निकला जाता है।

रूप०—फिर तुम लगे रास्तेमें बकवाद करने !

लाल०—बाबूजी, मेरा दम निकला जाता है, जान जा रही है इसी लिये मैं कह रहा हूँ। लोग कहते हैं कि करुणामयको खानेको नहीं मिलता। लेकिन उनकी लड़कियाँ कैसे इतने फिट-फाटसे रहती हैं ! बाबूजी, तुमने उन्हें फँसा लिया न ?

रूप०—हाँ हाँ, आज रातको घर-बार सब लिखा लूँगा।

लाल०—बाबूजी, वह बहुत बेलौस आदमी है। उसे तुम लालच देकर नहीं फँसा सकोगे। मैंने उसे अच्छी तरह पहचान लिया है।

उसे तुम जितना ही लालच दोगे उतना ही वह छटकेगा । उसके दामादके हाथमें हतकड़ी भरवा कर पुलिसके साथ उसे मैं उसके सामने ले गया था । मैंने उसे नगद रुपया देना चाहा था, इस पर वह और भी बिगड़ गया । मैं तुम्हें पहलेसे ही कहे देता हूँ । अगर तुम हाथ-पैर जोड़ कर उससे काम निकालना चाहोगे तब तो काम हो जायगा और नहीं तो वह लड़कीको, हाथ-पैर बाँध कर, गंगाजीमें भले ही फेंक देगा, पर हम लोगोंको न देगा ।

रूप०—अच्छा अच्छा, चुप रहो । मैं आदमीको तुमसे ज्यादा पहचानता हूँ ।

लाल०—तुम आदमीको पहचानो चाहे न पहचानो, पर जिस तरह हो उसे फँसाओ जरूर; नहीं तो फिर तुम समझ लेना कि तुम्हारा कुबड़ा लड़का—तुम्हारे वंशका लाल—तुम्हारे हाथसे निकल गया । लेकिन यह तो बतलाओ कि तुम तो इतने हट्टे-कट्टे हो, पर तुम्हारा लड़का इतना बेढंगा कैसे पैदा हो गया ? रण्डियाँ तो मुझे देख कर नाक-भौं सिकोड़ती हैं ।

रूप०—अच्छा चलो, घर चलें ।

[दोनोंका प्रस्थान ।

दूसरा दृश्य ।

बांधव-समितिका कमरा ।

कई सभासद बैठे हैं ।

पहला सभा०—क्यों जी, आज किशोर बाबू क्यों नहीं आए ?

दू० सभा०—मैं जहाँ तक समझता हूँ, कोई गरीब बहुत बीमार हो गया है उसीकी सेवा-शुश्रूषा करने लग गए हैं; या किसी दरिद्र

परिवारके अन्न-वस्त्रकी व्यवस्था करने लग गए होंगे; या किसी पर कोई आफत आई होगी; उसीके उद्धारकी चेष्टामें लगे होंगे। बस इसी तरहका कोई-न-कोई काम आ पड़ा होगा।

प० स०—मालूम होता है कि वे अचानक किसी जरूरी काममें फँस गए हैं। नहीं तो खबर जरूर भेज देते।

ती० स०—भाई, मैं तो स्वप्नमें भी यह नहीं समझ सकता था कि बड़े आदमियोंके लड़के भी ऐसे परोपकारी हो सकते हैं! वे दिन भर संसारके लोगोंका उपकार करते फिरते हैं और रातको अनाथोंके स्कूलमें पढ़ाते हैं। जहाँ हाहाकार मचा हो वहीं किशोर मौजूद हैं। जहाँ अन्न न हो वहीं किशोर पहुँचे हुए हैं। जहाँ औषध न हो वहीं किशोरको देख लीजिए।

दू० स०—इस बार उन्होंने शिक्षाके विषय पर जो पुस्तक लिखी है वह तुमने देखी है? ऐसी बढ़िया पुस्तक है कि मैं तुमसे क्या कहूँ! उसमें शिक्षा-प्रचार-सम्बन्धी ऐसे अच्छे अच्छे और सरल उपाय बतलाए गए हैं जैसे उपाय मैंने और किसी पुस्तकमें देखे ही नहीं। मेरी समझमें तो रायचन्द प्रेमचन्द स्कालरशिप पाना उन्हींका सार्थक है।

प० स०—मैं तो समझता हूँ कि जब उन्हें अपनी सम्पत्ति पर पूरा अधिकार हो जायगा तब वे उसका बहुत ही उत्तम उपयोग करेंगे। अगर सच पूछो तो स्वार्थ-त्यागके तो वे पूरे पूरे अवतार ही हैं।

ती० स०—किसी पर क्रोध करते तो मैंने उन्हें आज तक देखा ही नहीं।

दू० स०—लेकिन रमासे वे बहुत नाराज हैं।

प० स०—अजी, तुम भी कैसी बातें करते हो! उसका तो नाम सुनते ही मेरे सिरसे पैर तक आग लग जाती है। भला तुम्हीं बतलाओ कि उस दिन जब हम लोग अनाथ लड़कोंको बागमें जल-

पान कराने ले गए थे, अगर उस दिन हम लोग उन लड़कोंको गाड़ी पर रवाना करके स्वयं पैदल न आते होते तो वह रमा कैसा अनर्थ कर डालता ?

दू० स०—सुना है, उसके नाम फौजदारीके दो वारण्ट निकले हैं।

पह० स०—एक वारण्ट तो मैंने ही उस बेचारी मणी मोदिनसे कह कर निकलवाया है। तुम जानते हो कि उसने क्या किया था ? वह मणीके पास पीतलका गहना रख कर रुपए ले आया था।

(किशोरका प्रवेश ।)

दू० स०—वाह, बहुत अच्छे ! हम लोग कबसे आपका आसरा देख रहे हैं !

किशोर—भाई, मैं बड़ी आफतमें फँस गया था । परमेश्वरने ही रक्षा की।

दू० स०—क्यों, क्या हुआ था ?

कि०—मेरी बहनने अफीम खा ली थी।

पह० स०—क्यों—क्यों ?

कि०—अब मैं तुम लोगोंको क्या बतलाऊँ कि क्यों ! जहाँ तक हो सका बाबूजीने सब कुछ देकर उसका ब्याह किया था। लेकिन उसकी सास और ससुर किसी तरह खुश ही न होते थे। उन लोगोंने लड़कीको रोक रखा था—भेजते ही न थे । तब फिर बहुत कुछ हाथ जोड़ कर और उनके मन मुताबिक गहने आदि देकर मैं बहनको घर ले आया था, सो सब हाल तो तुम लोगोंको मालूम ही है । तर-त्यौहार पर उनके यहाँ जो कुछ भेजा जाता था उस पर उन लोगोंकी निगाह ही न ठहरती थी । बाबूजीने उस दिन एक हजार रुपए दामका एक पियानो बाजा और पाँचसौ

रुपएकी एक बाइसिकिल भेजी थी; पर फिर भी उन लोगोंका कुछ मिजाज ही न मिलता था। कल उनके यहाँ जड़ावर भेजी गई थी, बाबूजी काश्मीरसे एक दुशाला लाए थे; रस्किन कम्पनीके यहाँसे बहुत बढ़िया चार सूट मँगवाए गए थे, कई दर्जन कमीजें थीं और भी बहुतसा सामान था जो भेजा गया था; पर उन्होंने सब लौटा दिया। कहा कि यह तो कुछ है ही नहीं।

प० स०—क्यों, आखिर इसमें कमी किस बातकी थी ?

किशोर—यही कि एक मोटरगाड़ी नहीं भेजी गई थी। मेरी बहन तो उठते बैठते कलपा करती है। सारा दिन उसे रोते ही बीतता है। कल जब यह सब चीजें लौट आईं तब इसी पर घरमें कुछ बातें होने लगीं। मेरी बहनके ससुरालवालोंने महल्लेके कई आदमियोंको बुला कर उन्हींके सामने बाबूजीको उल्टी सीधी बातें कह सुनाईं। वह बेचारी ठहरी अनजान, इसीसे दुखी होकर अफीम खा बैठी।

दू० स०—लेकिन बच तो गई न ?

किशोर—ईश्वरने बड़ी कृपा की। मैं उसे लेकर अपनी माके सामने चला गया, इसीसे मैं ईश्वरको हजार हजार धन्यवाद देता हूँ।

पह० स०—हमारे देशकी भी कैसी दुर्दशा है। इसी प्रकार दुखी होकर बहुतसी बालिकाएँ अपनी जान दे दिया करती हैं।

कि०—लेकिन भाई, आखिर इसका उपाय क्या हो ? मैंने तो यह संकल्प कर लिया था कि विवाह ही न करूँगा। विवाह करके आदमी गृहस्थीकी झंझटोंमें फँस जाता है और तब वह औरोंका उपकार करनेके योग्य नहीं रह जाता। लेकिन अब मैं समझता हूँ कि हम लोगोंकी समितिके जितने सभासद हैं उन सबका विवाह करना परम कर्तव्य है। जिस किसीको अपनी कन्याका विवाह

करना हो, उसके लिये पहले तो हम लोगोंको यह चाहिए कि कोई उपयुक्त पात्र ढूँढ़ें; और यदि कोई उपयुक्त पात्र न मिल सके तो हम लोगोंमेंसे जिसका विवाह न हुआ हो वही उस कन्याके साथ विवाह कर ले—चाहे वह कन्या कुरूपा हो चाहे सुरूपा। मैं तो बाबूजीसे कह कर इसी प्रकार अपना विवाह करूँगा।

दू० स०—लेकिन क्या किया जाय, घर घर तो यही विपत्ति है। और फिर यह विपत्ति केवल हमीं लोगोंमें नहीं है, बल्कि प्रायः सभी जातियोंमें है। अच्छे अच्छे कुलीन ब्राह्मण तक कुल-मर्य्यादा नहीं देखते, बल्कि केवल रुपए और सोनेके गहने देखना जानते हैं। यह रोग तो एक प्रकारसे संक्रामक होता जा रहा है। सभी जातियोंकी ऐसी दुर्दशा होने लग गई है।

प० स०—लेकिन कुछ महानुभावोंने अपनी अपनी जातिमें इसके लिये बहुत अच्छी व्यवस्था कर ली है। लेकिन न जाने हम लोगोंमें वैसी व्यवस्था क्यों नहीं होती!

दू० स०—यही तो मैं भी कहता हूँ। घर घर लड़कियोंके कारण यही विपत्ति होती है। लेकिन जब लड़केके व्याहका समय आता है तब कोई इसका ध्यान ही नहीं रखता। सब रुपया लेनेकी फिक्रमें लग जाते हैं।

किशोर—भाई, यदि हम लोग यह बात अच्छी तरह समझ लेते कि समाजके उपकारसे ही हम लोगोंका उपकार है तो आज हमारे देशका इतना अधःपतन न होता। हम लोग दूरदर्शी नहीं हैं; केवल स्वार्थी हैं। इसी लिये सारा संसार हम लोगोंसे घृणा करता है।

पह० स०—हम लोगोंमें और बहुत बुरी प्रथा यह है कि एक देशके किसी जातिके लोग किसी दूसरे देशमें रहनेवाले अपने जाति-

भाइयोंके यहाँ भी विवाह नहीं कर सकते। उपयुक्त पात्रोंके न मिल-नेका यह भी एक बड़ा कारण है। यदि समस्त भारतमें अपनी जातिके लोगोंके साथ परस्पर विवाह होनेकी प्रथा चल जाय तो समाज और देशका बड़ा उपकार हो। दूसरा बड़ा भारी दोष यह है कि एक ही जातिकी कई उपजातियोंमें भी परस्पर विवाह नहीं हो सकता। यदि यह दोनों बातें हो जायँ तो भी बहुत कुछ सुभीता हो सकता है।

दू० स०—हाँ हाँ, क्यों नहीं! इससे शारीरिक दृष्टिसे सन्तान भी अच्छी होगी और नए सजीव रक्तका संचार भी होगा। लेकिन हमारे देशके समझदार भला यह बात क्यों करने लगे! वे तो सिर्फ यही कह कर छुट्टी पा जायँगे कि-इससे धर्म नष्ट होगा, मर्यादा नष्ट होगी, जाति जायगी;—और जो कोई यह काम करेगा वह जातिसे निकाल दिया जायगा। लेकिन वे लोग यह नहीं देखते कि इस बातके न होनेके कारण हजारों अबला बालिकाओंकी हत्या हो रही है। वाह, कैसा धर्मानुराग है!

ती० स०—विवाह होने पर परस्पर आत्मीयता बढ़नी चाहिए; लेकिन आत्मीयताका बढ़ना तो दूर रहा उल्टे विवाहके उपरान्त लोगोंकी आपसकी देखा-देखी तक छूट जाती है। लोग अपने समधि-योंका सामना तक करना छोड़ देते हैं। और कहीं कहीं तो अदा-लत तककी नौबत पहुँच जाती है। छी! छी! मुझे तो अपने आपको भारतवासी और हिन्दू कहते हुए लज्जा मालूम होती है।

किशोर—मेरी समझमें तो यही बात नहीं आती कि कन्याके पिता अपनी कन्याका विवाह करनेके लिये ही क्यों व्योकुल हो जाते हैं? यदि उपयुक्त पात्र न मिले और कन्या विना ब्याही ही रह जाय तो इससे क्या बनता बिगड़ता है? जिन कुलीन ब्राह्मण कन्या-

ओंका विवाह नहीं होता क्या उनका धर्म केवल विवाह न होनेके कारण ही भ्रष्ट हो जाता है ?

दू० स०—इसमें एक दोष तो अवश्य है। गरम देशोंमें कन्याएँ शीघ्र सयानी हो जाती हैं इस लिये कुमारी कन्याओंमें व्यभिचार फैलनेकी आशंका हो सकती है।

किशोर—क्यों, व्यभिचार क्यों फैलेगा ? यदि माता पिता अपनी कन्याको उत्तम शिक्षा दें, उसे सदा उत्तम कार्योंमें लगाए रखें, अपने दृष्टान्तसे उसे यह बात अच्छी तरह समझा दें कि इन्द्रियोंका निग्रह बहुत ही सहजमें हो सकता है, लड़कपनसे ही उसे यह न सुनाने लगें कि तुम्हें ऐसा अच्छा वर मिलेगा, यह होगा, वह होगा। यदि कन्या इस बातको समझ ले कि मेरे माता-पिता केवल मेरे लिये ही अपने दैहिक भावका परित्याग करके बन्धुभावसे अपना समय विताते हैं, यदि पहलेसे ही लोग पुत्रका विवाह करके अपने वंशकी रक्षाकी चिन्तामें न लग जायँ तो तुम्हीं लोग बतलाओ कि क्या कभी कोई दोष उत्पन्न हो सकता है ? और यदि कहीं कोई ऐसी एक-आध दुर्घटना हो भी जाय तो उससे क्या हो सकता है ? क्योंकि ऐसी दुर्घटनाएँ तो विधवा कन्याओंके सम्बन्धमें भी होती हैं। और फिर सबसे बढ़ कर बात तो यह है कि ऐसी एक-आध दुर्घटना इस प्रकार हजारों कन्याओंकी हत्यासे तो हजार दरजे अच्छी है।

पह० स०—भाई अब तो हम लोगोंकी समितिको सबसे अधिक ध्यान इसी विषय पर रखना चाहिए। हम लोगोंमें कोई डाक्टर है और कोई वकील है। हम लोग दरिद्रोंको जिस प्रकार आश्रय दिया करते हैं वह तो बराबर दिया ही करेंगे; परन्तु आजसे हम लोगोंका प्रधान लक्ष्य यही रहेगा कि जो मनुष्य कन्याके भारसे ग्रस्त हो उसका उद्धार किया जाय।

सब—अवश्य अवश्य ।

किशोर—भाई अब तो मैं जाता हूँ । मुझे अपनी बहनको देखना है ।

पह० स०—हाँ हाँ जरूर, मैं भी चलता हूँ और उस बीमार बुड्ढीको देख कर आपके मकान पर आता हूँ । यदि आवश्यकता होगी तो मैं वहीं बैठ कर उसकी देख-रेख भी करूँगा । लेकिन आज उसे सोने न दीजिएगा । यह अफीम खानेका केस बहुत बुरा होता है ।

दू० स०—हाँजी, भला यह तो बतलाओ कि रूपचन्द मित्रने उस ग्वाले पर जो झूठा अभियोग लगाया था उसका क्या हुआ ? मैंने सुना था कि तुम ग्वालेकी तरफसे पैरवी करने गए थे ।

ती० स०—वह अपराधी सिद्ध हुआ और छूट गया । चलो भाई अब आज हम लोगोंकी समितिका काम Postpone हो ।

[सबका प्रस्थान ।

तीसरा दृश्य ।

जंगलमें एक कुटी ।

(दूध और कुछ खानेको लिए हुए मंगलीका प्रवेश ।)

मंगली गाती है—

मनकी बातें मन ही जाने, और कोई क्या जाने माने ।
तू है भिखारिन कि राजरानी, तुझे कोई जग क्या पहचाने ॥ १ ॥
अपना रतन मिला जो आकर, बने अगर तो कर ले आदर,
बने न बिगड़े किए अनादर, है तो तेरा धन मन तू जाने,
तब नाहक अँखियन आँसु बहाने ॥ २ ॥

तू तो मनुवाँ प्रेम रखत है, प्रेम रखत यह भलो करत है,
मानसे नहिं कोउ काम सरत है, मन जो मिला मन हाथ विकाने,
और कोई मनकी क्या जाने ॥ ३ ॥

रमा०—मर कम्बख्त, तू इतना चिल्लाती क्यों है ?

मंग०—मैं यह खानेको लाई हूँ, खाओ ।

रमा०—अरे कम्बख्त, मैं अफीम खाता हूँ और तू इतना थोड़ा दूध लाई ? अच्छा पहले यह तो बतला कि रुपया मिला—रुपया लाई ?

मंग०—मुझे जो कुछ मिला था उसका मैं तुम्हारे लिये खानेको ले आई हूँ। बस यह थोड़ेसे पैसे बच गए हैं ।

रमा०—मर कम्बख्त, तू किसी कामकी न निकली । मैं इससे रोज कहता हूँ कि तू कुछ रुपयोंका इन्तजाम कर दे और आज तक इससे कुछ भी न हो सका । अरे तू बीस पचीस रुपयोंका भी इन्तजाम नहीं कर सकती ? इस जंगलमें, इस टूटी झोपड़ीमें भला मैं कब तक रहूँगा ? मेरा तो रात-दिन कलेजा काँपा करता है कि कहीं किसीको पता न लग जाय ।

मं०—इस झोंपड़ीमें एक बुढ़िया मर गई थी । सब लोग कहते हैं कि वह बुढ़िया मर कर प्रेतनी हो गई है, इस लिये इस तरफ कोई नहीं आता—तुम डरो मत ।

रमा०—हुँः कम्बख्त हुकूम चलाती है ! कहती है—डरो मत । अरे चारों तरफ तो लोग मेरी खोजमें लगे हुए हैं । घड़ी चुरानेका मुझ पर अपराध लगाया गया है और गिलटके गहने बेचनेका भी अपराध लगाया गया है । इन दोनोंके दो मुकदमे तो मुझ पर दायर ही थे । उधर मैंने खानसामाको ठोंका था; उसने अलग मुझ पर दरखास्त दी है । किशोर ढूँढ़ ढूँढ़ कर लोगोंसे मुझ पर मुकदमे दायर करा रहा है ।

और इस कम्बख्तने मुझे जंगलमें कैद कर रखा है। अगर कहींसे कुछ रुपए हाथ लग जायँ तो मैं यहाँसे चल दूँ। देख, अगर कल तू रुपयोंका इन्तजाम न कर सकेगी तो याद रखियो कि मैं तेरी भी पूरी खबर लूँगा।

मंग०—मैं रुपया कहाँसे लाऊँगी?

रमा०—क्यों, तू इतने आदमियोंके घरमें जाती है; कहींसे कुछ चुरा कर नहीं ला सकती?

मंग०—मैं चोरी नहीं करूँगी।

रमा०—अच्छा तो चल दूर हो। अब मेरे पास न आइयो। मैं तेरा मुँह नहीं देखना चाहता। हुँः इस नालायकसे कहींसे पचीस रुपएका भी इन्तजाम नहीं हो सकता।

मंग०—मुझसे चोरी न हो सकेगी। हाँ, खानेके लिए तुम्हारे दरवाजे पर रोज रख जाया करूँगी।

(नेपथ्यमें किसीके आनेकी आहट।)

रमा०—मंगली, मंगली, देख तो सही यह आहट काहेकी है? मालूम होता है कि कोई इसी तरफ आ रहा है। अरे यह तो बिलकुल सिपाहीके जूतेका शब्द मालूम होता है! उस दिन मैं जिस सिपाहीसे अपना हाथ छुड़ा कर भाग आया था वह कम्बख्त मुझे पहचानता है। देख देख, कहीं वही तो नहीं आ रहा है?

मंग०—तुम अन्दर हो जाओ।

रमा०—क्यों, क्या कोई आ रहा है? अरे क्या तू मुझे गिरफ्तार करा देगी? मंगली, मंगली, मैं तेरे पैर पड़ता हूँ, हाथ जोड़ता हूँ, दोहाई मंगलीकी, मैं मर जाऊँगा। पुलिसके हाथकी मार खाकर मैं जीता न बचूँगा। पुलिसवाले अफीम भी न खाने देंगे। मेरा तो पेट फूल जायगा और मैं यों ही मर जाऊँगा।

मंग०—जाओ जाओ, अन्दर जाओ ।

रमा०—दोहाई मंगलीकी ! मुझे पकड़वा मत दीजियो ।

(रमानाथका कुटीमें प्रवेश करना और मंगलीका
बाहरसे ताला बन्द कर देना ।)

रमा०—(अन्दरसे) अरे तू ताला क्यों लगाती है—ताला क्यों लगाती है ? मंगली ! मैं तेरे पैर पड़ता हूँ, खोल दे, मैं भाग जाऊँ । अब मैं आजसे आगे कभी तुझसे कुछ न कहूँगा ।

मंग०—चुप रहो ।

(मंगलीका एक कोनेमें हो जाना ।)

(बांधव-समितिके सभासदोंको लिए हुए किशोर और कालीका प्रवेश ।)

काली०—बाबूजी, वह इसी झोंपड़ीमें छिपा हुआ है । मैंने पक्का पता लगाया है । आजकल मंगली रोज इसी तरफ आया करती है । वह देखनेमें तो बिलकुल पागल मालूम होती है, मगर है बड़ी चालाक । मैं तो समझता हूँ कि रमासे उसकी आशनाई है ।

किशोर—लेकिन तुम उसे पकड़वानेके लिये क्यों इतना प्रयत्न कर रहे हो ?

काली०—अजी बाबूजी, वह बहुत पाजी है । उसने मेरे दलालीके रुपए मार लिए हैं । हम दोनों आदमियोंने मिल कर मोहितके रुपयोंकी दलाली की थी । लेकिन उस कम्बख्तने दलालीके सब रुपए आप ही रख लिए । मुझे एक पैसा भी न दिया ।

किशोर—ठीक ! लेकिन एक बात तो बतलाओ, तुम तो कुलाचार्य हो, तुम्हें तो कुलकी रक्षा करनी चाहिए । सो न करके तुम ऐसे निन्दनीय काम क्यों करते हो ?

काली०—बाबूजी, आजकल ब्याहके लिये अच्छा कुल कौन ढूँढ़ता है ? हम लोगोंकी औरतें ही चुपचाप सब काम करा देती हैं ।

अच्छा कुल तो कोई ढूँढ़ता ही नहीं। तब फिर आप ही बतलाइए कि हम लोग और क्या करें? पेटके लिये कुछ-न-कुछ इधरका उधर और उधरका इधर करना ही पड़ता है। मैं रमाको पकड़वा देता हूँ। लेकिन बाबूजी एक बात है। आप मुझे माफ़ कर दीजिएगा। इसी झोंपड़ीमें रमा छिपा हुआ है।

किशोर—यह तो किसी दरिद्रकी कुटिया जान पड़ती है। मालूम होता है कि वह बेचारा ताला बन्द करके कहीं मेहनत-मजदूरी करने गया है।

काली०—आप देखिए तो सही, यह बिलकुल नया ताला है। मंगली इसे बन्द कर गई है। वह इसी झोंपड़ीके अन्दर है। देखिए मैं अभी ताला तोड़ कर उसे बाहर निकालता हूँ।

(ताला पकड़ कर खींचना।)

(मंगलीका पुनः प्रवेश।)

मंग०—हैं, ताला मत तोड़ो, ताला मत तोड़ो, वह मेरा घर है। मेरा सर्वस्व उसीके अन्दर है।

काली०—देखिए बाबूजी, मैं कहता था न।

किशोर—मंगली! तुम तो कहा करती थीं कि न मेरा घर है न बार है; यों ही भीख माँग कर खाती हूँ। तो क्या तुम इतनी झूठी हो? तुम भले आदमियोंके घरोंमें आया जाया करती हो, लोग तुम्हें पागल समझ कर कुछ नहीं कहते, पर मैं देखता हूँ कि तुम्हारा चरित्र अच्छा नहीं है। तुम चोरोंको छिपा रखती हो और उनके साथ तुम्हारा सम्बन्ध है।

मंग०—न मैं झूठ बोलती हूँ और न मेरा चरित्र खराब है। यह काली ही झूठ बोलता है।

किशोर—काली झूठ बोलता है ? अभी तुमने ही कहा था न कि यह मेरा घर है और मेरा सर्वस्व इसमें है ?

मंग०—हाँ कहा तो था और इसमें कुछ भी झूठ नहीं है । मैं अभी दरवाजा खोल कर आपको अपना सर्वस्व दिखला देती हूँ ।

(दरवाजा खोलना ।)

काली०—वह देखिए, कोनेमें छिपा बैठा है ।

मंग०—यह तो मेरा सर्वस्व है—मेरे हृदयका रत्न है । उसे मारना मत और न कोई कष्ट देना । हाँ मुझे पकड़ ले चलो और जो दण्ड देना हो वह मुझे दो ।

काली०—आओ, बाहर निकलो, अब इस तरह दबक कर बैठनेसे काम नहीं चलेगा ।

(समितिके सभासदों और कालीका रमानाथको खींच कर झोंपड़ीसे बाहर निकालना ।)

मंग०—उसे मत मारना, उसे मत मारना । पहले मुझे मार डालो तब उस पर हाथ छोड़ना ।

किशोर—मंगली, यह क्या ? तुम चोरको छिपा कर रखती हो ? और चोरके साथ अनुचित रूपसे बातें करती हो ?

मंग०—चोर कौन है ? और अनुचित बातें किसे कहते हैं ? यह चोर नहीं हैं; यह मेरे सर्वस्व हैं । पति चाहे चोर हो चाहे डाकू हो, चाहे पिशाच हो चाहे राक्षस हो, लेकिन स्त्रीके जीवनका सर्वस्व है । स्त्रीका प्राण है । स्त्रीका प्राणेश्वर है । स्त्रीका इष्ट देवता है । बाबूजी ! मैं कुचरित्रा नहीं हूँ ।

किशोर—यह तुम्हारा कौन है ?

मंग०—यह मेरे स्वामी हैं । जिनके लिये मैं पागल हो गई हूँ, जिनके लिये मैं भिखारिणी हो गई हूँ, जिनके चरणोंकी सेवा कर-

नेके लिये मैं व्याकुल रहती हूँ, जिनकी मूर्ति सदा मेरे हृदयमें विराजमान रहती है, जिनकी मूर्त्तिका मैं दिन-रात ध्यान किया करती हूँ, जिनके दर्शनोंकी आशासे मैं गली गली घूमा करती हूँ और जिनके दर्शन पाकर मैं अपने आपको इन्द्रकी इन्द्राणीसे भी बढ़ कर समझती हूँ—यह वही मेरे परम निधि हैं। इन्हें कोई न मारे और न किसी प्रकारका कष्ट दे। सतीके प्राण कोई न ले।

किशोर—तुम कौन हो ?

मंग०—मेरे पिता अभी तक जीवित हैं। आप हम दोनोंको उनके पास ले चलिए और तब उनसे पूछिए कि उन्होंने मुझे इनके चरणोंमें अर्पित किया है या नहीं ? मेरी सासने भी मुझे घरसे निकाल दिया है और मेरे पिताने भी मेरा त्याग कर दिया है। मैं पेटके लिये घर घर कौओं और कुत्तोंकी तरह मारी मारी फिरती हूँ, लेकिन इसका मुझे जरा भी दुःख नहीं हैं। मैं दिन-रात इसी आनन्दके मारे पागलोंकी तरह घूमा करती हूँ कि मुझे अपने स्वामीके दर्शन तो होते हैं ! इसी आनन्दमें मुझे स्वर्गका सुख मिलता है। मैं भीख माँग कर जहाँसे जो कुछ लाती हूँ वह सब इन्हींके चरण-कमलमें अर्पित कर देती हूँ। यह मुझे नहीं पहचानते, मुझे स्पर्श तक नहीं करते और मुझसे बहुत घृणा करते हैं। लेकिन इस सब बातोंसे सतीका क्या बनता-बिगड़ता है ? सतीके लिये तो यही सब कुछ है कि उसे अपने हृदयेश्वरकी पूजा करनेका तो अवसर मिलता है। सतीके लिये इससे बढ़ कर और कौनसी कामना हो सकती है ? आप दयामय हैं, कीट-पतंग तक पर आप दया करते हैं, मेरे प्रति आप निर्दय न होइए। आप मुझे पति-भिक्षा दीजिए—प्राण-भिक्षा दीजिए।

किशोर—रमानाथ—रमानाथ ! मैं तुम्हें क्या कहूँ, तुम बड़े अभागे हो। तुमने ऐसा अच्छा रत्न पाकर भी उसे छोड़ रखा है।

अच्छा तुम डरो मत, मेरे साथ आओ । बहन ! तुम कुछ चिन्ता न करो । केवल तुम्हारे ही कारण मैं तुम्हारे स्वामीको क्षमा कर देता हूँ । मैं इन्हें ठिकाने लानेकी भी चेष्टा करूँगा । हाय हाय ! इस अभागे देशका यही पवित्र पत्नी-मिलन है । घर घर इस दुर्लभ नारी-रत्नको कष्ट पहुँचाया जा रहा है । रमानाथ ! तुम मेरे साथ आओ । बहन ! मैं मुक्तकंठसे कहता हूँ कि तुम देवी हो ।

सब—सचमुच देवी है ।

काली०—इस कम्बख्तने सब चौपट किया ।

[सबका प्रस्थान ।

चौथा दृश्य ।

करुणामयके मकानका कमरा ।

करुणामय और सरस्वती ।

करुणा०—सुनती हो, आज मैं निश्चिन्त हो आया—नौकरीको जवाब दे आया ।

सर०—हैं हैं ! तुमने ऐसा काम क्यों किया ? भला अब गृहस्थीका खर्च कैसे चलेगा ?

करुणा०—भला साहबको इससे क्या मतलब कि मेरी गृहस्थीका काम चलेगा या नहीं चलेगा ? यदि मैं आज नौकरीको जवाब न देता तो साहब आज अवश्य मुझे जवाब दे देते । चलो, यह भी अच्छा हुआ, मैं और कहीं नौकरी करनेके योग्य तो रह गया । यदि साहब जवाब दे देते तो फिर मैं कहीं सरकारी नौकरी कर ही न सकता ।

सर०—तो फिर अब क्या होगा ?

करुणा०—एक उपाय है। तुम तो अब बराबर बीमार ही रहती हो, यदि आज नहीं तो कल और दवा आदिके अभावसे नहीं अन्नके अभावसे ही तुम मर जाओगी। और मुझे चाहिए कि मैं सज्ञान दशामें अपने आपको गंगाजीमें अर्पित कर दूँ। इसके सिवा अब और कोई उपाय नहीं है। छीः छीः! मैंने भी कितने दिन व्यर्थ बिता दिए! तुम जानती हो कि लोग आत्महत्या क्यों करते हैं? नहीं, तुम नहीं जानतीं। लेकिन आज मैंने समझ लिया है कि लोग क्यों आत्महत्या करते हैं। उन्हें आदमियोंसे भरा हुआ यह संसार बिलकुल जंगल सा दिखाई देता है। स्त्री और लड़के-बाले उन्हें बिलकुल शेर और भालू मालूम होते हैं। चारों ओर उन्हें अन्धकार दिखाई देता है और ऐसा मालूम होता है कि मानो अन्धकारमें निराशा अपना मुँह छिपाए हुए हैं। उनका मान जाता है, मर्यादा जाती है, मनुष्यत्व जाता है। वे कुत्तोंसे भी बढ़कर हीन हो जाते हैं और सिरसे पैर तक आत्मग्लानिसे भर जाते हैं। इसी लिये वे मित्रके समान मृत्युका आलिंगन करते हैं। मेरे लिये भी बस वही एक मित्र है और कोई नहीं है।

सर०—क्यों, क्यों ? तुम इतने अधीर क्यों हुए जाते हो ? बहुतसे लोगोंकी एक नौकरी छूट जाती है तो और दूसरी मिल जाती है। देखो, तुम इस तरहकी बातें न करो, शान्त हो, हम लोगोंका मुँह देख कर धीरज धरो। भला यह तो सोचो कि तुम्हारी लड़कियाँ कहाँ जायँगी ? उन सबका कहीं कोई ठिकाना नहीं है। एक सधवा होकर भी विधवाके समान ही है, दूसरी निराश्रय होकर तुम्हारे घरमें आ बैठी है और तीसरी अभी बिलकुल अबोध बालिका है; वह संसारका भला बुरा कुछ भी नहीं जानती। और फिर यह भी तो सोचो कि तुम्हारे लड़केका क्या होगा ?

करुणा०—उसके लिये भी मैंने उपाय सोच लिया है। उसने चोरी करना सीख ही लिया है। सरकार उसे अपनी अतिथिशालामें रख कर खाना दिया करेगी। लड़कियाँ किसीके यहाँ रसोई बनानेका काम करके किसी तरह अपना पेट भर लेंगी और यदि वे यह भी न कर सकेंगी तो फिर मैं उनके लिये क्या कर सकूँगा? मेरे लिये या तो स्मशान और या जेलखाना, बस यहीं दो स्थान हैं और तीसरा कोई स्थान नहीं है। अब रह गई छोटी लड़की, सो उसके लिये बाजारसे थोड़ी सी अफीम मँगा दो, सारा झगड़ा आप ही मिट जाय। वाह! मैंने भी कैसे अच्छे मुहूर्तमें अपना व्याह किया था, कैसी अच्छी साइतमें कन्याओंको जन्म दिया था और कैसे अच्छे लग्नमें अपनी जातिकी रक्षा करके कन्याओंका विवाह किया था। अब तो मैं यही सोचता हूँ कि और कितने ऐसे शुभ दिन बाकी हैं।

सर०—तुम ऐसी बातें न करो। सभीके दिन बीतते हैं, हमारे भी किसी-न-किसी तरह बीत ही जायँगे।

(हिरणमयीका प्रवेश।)

करुणा०—इसे देखो, यह अपने स्वामीको खाकर—सर्वस्व खाकर—बापके घर आ बैठी है। यह खूब पेट भर कर खायगी। जाओ चूल्हेमेंसे राख ले आओ। सब लोग एक साथ बैठ कर खायँ। जाओ जाओ, खड़ी क्यों हो? राख ले आओ, खूब थाल भर कर ले आओ। कई आदमी खानेवाले हैं न! बहुत शुभ मुहूर्तमें सबका जन्म हुआ था। इसी लिये सब तरफ शुभ-ही-शुभ कर आई हो।

[हिरणमयीका रोते हुए प्रस्थान।

सर०—क्यों जी, पहले तो तुम ऐसे नहीं थे; अब तुम्हें क्या हो गया है? भला अपने पेटकी सन्तानको तुमने यह क्या कह डाला?

यह तो आप ही दुखी होकर यहाँ आई है। आज दो दिनसे इसने पानी तक नहीं पीया है। आज सवेरे नहा कर इसने थोड़ासा सरवत पीया था। अभी तक इसके मुँहमें एक दाना भी अन्न नहीं गया। भला इस बेचारीका क्या अपराध था? ब्याह तो हमीं लोगोंने किया था न? बेचारीको सौतके लड़कोंने निकाल दिया है। अगर हम लोग इसे अपने घरमें न रखेंगे तो यह कहाँ जायगी? लड़कीको तुमने ऐसी बात कह क्यों दी?

(ज्योतिर्मयीका आकर एक कोनेमें खड़े हो जाना।)

करुणा०—तुम्हारी समझमें मेरी बात नहीं आई। यह तुम्हारी ही सन्तान है, मेरी तो नहीं है! तुम्हें उसका दरद है—मुझे तो दरद नहीं है! तुमने अभी कहा था न कि सभीके दिन बीतते हैं, हमारे भी बीत जायँगे। तुमने सच कहा था, दिन किसीके रहते नहीं—सभीके बीत जाते हैं। लेकिन यह तो बतलाओ कि ऐसे बुरे दिन भी किसीके होते हैं? तुम्हें मालूम है कि आज एक आदमीने वारण्ट निकलवा कर मुझे पकड़ा था? तुम जानती हो कि तुम्हारे लड़केने सिगरेट चुराया था? तुमने सुना है कि तुम्हारी बड़ी लड़कीके बारेमें आज महल्लेमें कैसी कैसी बातें उठ रही हैं? यह तो जानती हो कि कोई यह नहीं कहता कि वह तुम्हारे जमाईके संग गई थी? लोग मुझे जातिसे निकाल देंगे और कोई मेरे यहाँ खाने तक न आवेगा!

सर०—तुम क्या सोच रहे हो?

करुणा०—मैं यही सोचता हूँ कि मनुष्य कहाँ तक हीन हो सकता है। अच्छा अब मैं जाता हूँ।

सर०—कहाँ जाते हो?

करुणा०—डरो मत, मैं मरने नहीं जाता हूँ। तुम जानती हो मैं कहाँ जाता हूँ? मैं अपना मकान वेंचने जा रहा हूँ। जानती हो मैं किसके हाथ मकान बेचूँगा? जानोगी—धीरे धीरे सब जानोगी। दो कन्याएँ तो मैंने दान की थीं; अब तीसरी कन्या वेचूँगा।

[प्रस्थान ।

(किरणमयीका प्रवेश ।)

किरण०—मा, मैं आज तुमसे विदा होनेके लिये आई हूँ। मैं तुम लोगोंका सर्वनाश करनेके लिये जनमी थी तो सर्वनाश कर चुकी, अब मैं व्यर्थ यहाँ क्यों रहूँ?

सर०—हैं! तुम ऐसी बातें क्यों करती हो?

किरण०—मा! तुम जानती हो कि मैं कहाँ गई थी? मैं पिछ-वाड़ेके रास्ते घनश्याम बाबूके घर गई थी। उनके यहाँ जो रसोई बनानेवाली ब्राह्मणी है उससे मैं यह कहने गई थी कि यदि कोई भला आदमी अपने यहाँ मुझे रसोई बनानेके काम पर रखना चाहे तो मैं उसके यहाँ नौकरी कर लूँगी। तुम जानती हो कि इस पर उसने मुझे क्या उत्तर दिया? उसने कहा कि—"बेटी, तुम्हारे बारेमें सारे महल्लेमें न जाने कैसी कैसी बातें उठ रही हैं। तुम्हारे हाथकी रसोई कोई न खायगा। ऐसी बदनाम स्त्रियोंको भले आदमी अपने यहाँ नौकर नहीं रखते।" तब फिर मा तुम्हीं बत-लाओ कि मैं कहाँ जाऊँ? बाबूजी मुझे देख कर मुँह फेर लेते हैं और तुम मेरा तिरस्कार करती हो। मा, मैंने बड़े बड़े अपराध किए हैं, इसी लिये तुमसे क्षमा माँग कर विदा होने आई हूँ।

सर०—बेटी, क्या हम लोगोंको तुम घरमें न रहने दोगी? मैं तो आप ही जल रही हूँ; ऊपरसे तुम मुझे और जलाने आई। तुम भले घरकी लड़की ठहरीं, तुम कहाँ जाओगी?

किरण०—मा! मैं समझती हूँ कि यदि मैं तुम्हारे घर रहूँगी तो तुम्हारी छोटी लड़कीका व्याह न होगा। मेरे लिये तुम्हारा मकान बन्धक पड़ा, मेरे लिये तुम पर कर्ज हुआ और मेरे ही लिये तुम्हारा सिर नीचा हुआ। भला अब मेरे लिये मरनेके सिवा और कौन उपाय है?

सर०—किरण! तुम रोओ मत—शान्त हो। मैं बीमार पड़ी हूँ और तुम्हारे बाबूजी पागलोंकी तरह इधर उधर घूम रहे हैं। इस समय तुम ऐसा काम मत करो। हाय! यदि मैं भले आदमीके घर जनम न लेकर किसी छोटी जातिके आदमीके घर जनम लेती तो मैं समझती हूँ कि मेरी इतनी दुर्दशा न होती। और मैं मेहनत-मजदूरी करके अपना पेट तो भर लेती। सिर पर दौरी रख कर बजारमें सौदा तो बेच लाती। अपने स्वामीकी सहायता तो करती। अपने लड़केको पढ़ा-लिखा कर बड़ा तो कर सकती। लेकिन ऊँची जातिमें जन्म लेनेसे कैसी दुर्दशा होती है! चौखट मैं नहीं लाँघ सकती, मेहनत-मजदूरी मैं नहीं कर सकती, भीख मैं नहीं माँग सकती। बस केवल तुम्हारे बाबूजीका ही भरोसा है। मैं उनकी कोई सहायता तो कर ही नहीं सकती, हाँ उलटे उनके लिये भार हो रही हूँ। हाय! कैसी दुर्दशा है! हिन्दू गृहस्थके घरकी स्त्रीको इतना दुःख! हम लोगोंके समान संसारमें और भी कोई दुखी है! किरण, तुम सती हो। कोई ऐसा काम न करना जिससे सतीकी मर्यादा भंग हो। तुम यही सोचती हो न कि कहीं चली जाओगी या अपने प्राण दे दोगी। लेकिन जानती हो कि इसका फल क्या होगा? जिस कलंकके कारण तुम इतना दुखी हो रही हो वही कलंक सौ गुना बढ़ जायगा। तुम सती हो, सतीकी मर्यादाकी रक्षा करना।

किरण०—मा, मैं क्या करूँ? तुम्हारी यह गृहस्थी इस दुःखसे कैसे चलेगी?

सर०—इसी लिये तो तुम मरना चाहती हो । अच्छी बात है, सारा परिवार उपवास करके मरेगा । (ज्योतिर्मयीसे) तुम खड़ी खड़ी क्या सुन रही हो ?—जाओ ।

ज्योति०—क्यों मा ? मैं क्यों जाऊँ ? मैं भी तो तुम्हारी लड़की ही हूँ, मैं भी तो तुम्हारे दुःखसे दुखी हूँ । बाबूजी जो कुछ कह गए और बहनने जो कुछ कहा वह सब मैंने सुना है । क्यों बहन ! तुम रोती क्यों हो ? मैं सारी गृहस्थी चलाऊँगी । मैंने मोजा बुनना सीखा है । मेम साहबने मुझे जापानसे मोजा बुननेकी एक कल मँगवा दी है । तीन तीन आने जोड़ीके मोजे मैं रात-दिनमें आठ जोड़ी बुन सकती हूँ । तुम क्यों डरती हो ? मेम साहब तुम्हें भी काम सिखा देंगी । तुम रोती क्यों हो ? हम लोग तीन बहनें मिल कर मेहनत-मजदूरी करेंगी तब भी क्या गृहस्थीका खर्च न निकलेगा ? कैसे न निकलेगा ? मा ! मैंने जो मोजे बुने थे सो सब मेम साहबने बेच दिए। लो, यह रुपए लो और बहनको बतला दो कि क्या क्या लाना होगा।

किरण०—ज्योति ! ज्योति ! तुम्हारा ही जनम सार्थक है । मैं तो मा-बापके लिये केवल कंटक होकर ही जनमी थी ।

सर०—(घबरा कर) क्यों जी ! हिरण कहाँ गई ?

ज्यो०—मैं तो स्कूल गई थी; मुझे क्या मालूम !

सर०—हैं ! वह घरमें नहीं है ? देखो, देखो, जल्दी देखो हिरण कहाँ गई ?

किरण०—मा, तुम्हें चक्कर आ गया था जिससे तुम गिर पड़ी थीं, इस लिये तुम लेटी रहो उठो मत । डाक्टर साहब कह गए हैं कि इन्हें उठने मत देना ।

सर०—तुम डरो मत, मैं मरूँगी नहीं । मेरे करममें मरना लिखा ही नहीं है । कुलच्छनी स्त्रियाँ जल्दी नहीं मरतीं । अगर मैं मर

जाऊँगी तो तुम्हारे बाबूजीका कंटक कौन होगा—लड़कियाँ कौन जनमेगा—घर क़ौन विकवावेगा—और लड़कियोंको रसोई वनाने पर नौकर कौन रखावेगा—लड़केको चोरी करते कौन देखेगा—तुम्हारे बाबूजीको जेल जाते कौन देखेगा? मैं मरूँगी नहीं, तुम लोग डरो मत। तुम्हारे बाबूजीने उसे बहुत झिड़का था और उसका स्वभाव बहुत विचित्र है। जल्दी जाकर देखो कि वह कहाँ है और क्या कर रही है?

ज्योति०—तुम बैठो, मैं जाती हूँ।

[प्रस्थान।

किरण०—बैठ जाओ, बैठ जाओ।

सर०—(चिल्ला कर) हिरण—हिरण! अरे बोलती क्यों नहीं! कहाँ गई?

किरण०—मा! तुम बैठ जाओ, तुम्हारा शरीर काँप रहा है।

सर०—हिरण—हिरण?

(सरस्वतीका जल्दीसे प्रस्थान। पीछे पीछे किरणका प्रस्थान।
नेपथ्यमें सरस्वतीके गिरनेका शब्द।)

(नेपथ्यमें) किरण०—अरे यह क्या हो गया! ज्योति! ज्योति! जल्दी पानी लेकर आओ, मा बेहोश हो गई।

पाँचवाँ दृश्य।

तालाब

हिरणमयी।

हिरण०—माता वसुमती! मैंने सुना है कि तुम सबकी माता हो। तुम फट जाओ और मुझे अपनी गोदमें जगह दो। मेरे लिये संसारमें

अब कोई स्थान नहीं है । मैं अबला हूँ, कहाँ जाऊँ ! हे चन्द्रदेव ! तुम साक्षी हो । तारो ! तुम रातको पहरा देनेवाले हो; तुम भी साक्षी रहो । चन्द्रदेव ! लोग कहते हैं कि तुम हिमधाम हो, लेकिन तुम्हारी शीतल किरणोंसे मेरे अन्दरकी ज्वाला क्यों नहीं शान्त होती ? यह दारुण ताप ! ऐसा ताप तो सूर्य्यकी दो पहरकी किरणोंमें भी नहीं होता । निशानाथ ! अब यह दुःख मुझसे नहीं सहा जाता । अब मेरे स्वामी नहीं रह गए । मैं निराश्रय अबला अपने पिताके लिये भार और माताके लिये कंटक हो रही हूँ । तारानाथ ! तुम मुझे क्षमा करो । अब मैं और कहाँ तक सहूँगी ! तुम मुझे क्षमा करो । सभी लोग कहते हैं कि जलमें नारायणका वास होता है । मैं अभागी अब उन्हीं नारायणका आश्रय लेती हूँ । जल बहुत ही शीतल है । अनेक बार मैं इससे शीतल हुई हूँ । आज फिर एक बार पूरी तरह शीतल हो जाऊँ । अरे दुष्ट प्राण ! अब भी तुझे शरीरकी ममता है ? तू और कब तक इस आगमें जलेगा ? कलसी ! तू आज मेरी सहायता कर, इस विपत्तिमें तुम मेरा साथ दो । कौन जाने ये दुष्ट प्राण अन्तमें फिर शरीरकी ममता कर जायँ ! इस लिये तुम मुझे पकड़ रखना । हम और तुम दोनों जलमें चुपचाप रहेंगे । अपनी अपनी आँखोंका जल उसी जलमें मिला देंगे, दूसरा कोई देख न सकेगा ।

(गलेमें कलसी बाँध कर पानीमें उतरना ।)

हिरण०—कलसी ! तुम भर कर इस अभागिनीका मंगल करो । निशानाथ ! मेरा अपराध क्षमा करना ।

(जलमें डूबना ।)

छठा दृश्य।

घनश्याम बाबूका मकान।

घनश्याम और राजलक्ष्मी।

घन०—सुनती हो, इतने दिनोंके बाद अब जाकर हम लोगोंके मनकी बात पूरी हुई। लड़कीके ब्याहमें जितना खर्च हुआ है अब मैं उसका दूना वसूल करूँगा। अब तुम्हारा किशोर ब्याह करनेके लिये तैयार हो गया है।

राज०—हाँ, भाविनीने मुझसे कहा था; लेकिन उस समय मैंने समझा था कि वह हँसी कर रही है। देखो, जब वह ब्याह करनेके लिये तैयार हुआ है तब तुम चटपट उसका ब्याह भी कर ही डालो।

घन०—जब तुम कहोगी तब मैं उसका ब्याह करूँगा ? मैंने उसी समय पण्डितजीको बुलवा कर दो जगहकी बातचीत पक्की कर ली थी। आज मैं लड़कियोंको देखने जाऊँगा। अब तुम यह बतलाओ कि तुम्हें कौनसी लड़की पसन्द है ? दोनों ही सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं; बस खाली लेन-देनमें कुछ उन्नीस-बीस है। दोनों ही बहुत बड़े जमींदार हैं, अँगरेजी महल्लेमें दोनोंके आठ आठ दस दस-किता मकान हैं।

राज०—लेकिन लड़की किसकी अच्छी है ?

घन०—राजेन्द्रमित्रकी लड़की तो कुछ वैसी अच्छी नहीं है, पर वे रुपया बहुत देना चाहते हैं। और हीरालाल बोसकी जो लड़की है वह देखनेमें बहुत अच्छी—बहुत सुन्दर—है। राजेन्द्रमित्र तो पचास हजार रुपया नगद देनेके लिये तैयार हैं; लेकिन मैंने कहा है कि मैं अँगरेजी महल्लेका मकान लूँगा। सो पण्डितजी इस पर भी

गर्ज हो गए हैं । लेकिन हीरालालके यहाँसे कुछ कम रुपया मिलेगा । इसका यह मतलब नहीं है कि बिलकुल ही कम मिलेगा । पड़ता दोनोंका बराबर हो जायगा । बीस पचीस हजार रुपए तो नगद मिलेंगे और लड़कीके लिये दो जोड़ गहना देना चाहते हैं । उसमेंसे एक जोड़ फरासीसी ढंगका होगा । जो पचीस हजार रुपएसे कमका न होगा । वही उसी मेलका गहना जिसमेंका वकील साहबने अपनी पोतीके व्याहमें दिया था । और राजेन्द्रमित्र एक ही जोड़ गहने पर टरकाना चाहते हैं । अब बतलाओ, तुम क्या कहती हो ?

राज०—किशोरकी बहू तो देखनेमें अच्छी होनी चाहिए ।

धन०—जो कुछ हो, एक बात तै कर लो । क्योंकि आज ही कलमें मैं लड़की देखने जाऊँगा । किशोरके एक मित्रको भी साथ ले जाना होगा । वही लड़की पसन्द कर आवेगा ।

राज०—मैं भी पता लगाऊँगी । हीरालाल बोसके साथ मेरा भी कुछ रिश्ता होता है । मैं मँझली बहूसे सब पता लगा लूँगी ।

धन०—मँझली बहू कौन ?

राज०—अजी हमारे उस घरकी मँझली बहू ।

धन०—तुम पता लगाओ, लेकिन वह लड़की बहुत सुन्दर है । जब वह छोटी थी तब अपने बापके साथ गाड़ी पर चढ़ कर घूमने जाया करती थी । उस समय मैंने उसे देखा था ।

(भाविनी और किशोरका प्रवेश ।)

भावि०—मा, तुम कहती थीं कि झूठ बात है । लो भइयासे पूछ लो । क्यों भइया ! तुमने कहा था न कि अब मैं व्याह करूँगा ?

राज०—क्यों—आज तुम्हारे बाबूजी जाकर लड़की देख आवें ?

किशोर—बाबूजीके जानेकी जरूरत नहीं, मैं आप ही ठीक कर आया हूँ ।

राज०—मालूम होता है कि आज तुम अपने मामाके घर हीरा-लालकी लड़कीको देख आए हो।

किशोर—मैं हीरालालको नहीं जानता। मैं तो करुणामय बाबूकी लड़कीसे ब्याह करूँगा।

राज०—करुणामय बाबू कौन?

किशोर—यही हमारे महल्लेके करुणामय बोस।

राज०—लो, और सुनो! जरा अपने लड़केकी बात सुन लो। (किशोरसे) क्योंजी, क्या सचमुच तुमने यही ठान लिया है कि अब ब्याह न करोगे?

किशोर—वाह! मैं तो ब्याह करनेके लिये तैयार हूँ। क्या बाबूजीसे मैंने झूठ कहा था?

घन०—तुम करुणामयकी लड़कीके साथ क्या ब्याह करोगे! मैंने तुम्हारे लिये एक जगह सब ठीक कर रखा है। लड़की बहुत ही सुन्दरी है और नगद पचास हजार रुपए मिलेंगे। मैं बातचीत पक्की करने जा रहा हूँ। बताओ, तुम क्या कहते हो?

किशोर—बाबूजी, हम लोगोंका जैसा वंश है; हम लोगोंके वंशका जो गौरव है, मैं जिस वंशकी सन्तान हूँ, मैं उसी वंशकी मर्यादाके अनुसार बात करता हूँ। आप इसमें कुछ न कहें।

घन०—हैं!

किशोर—बाबूजी, आप जगत्पूज्य मकरन्द घोषकी सन्तान हैं। आपका एक ही एक लड़का है। क्या उसी एक लड़केको आप बेचेंगे? भला आज तक और भी कभी हम लोगोंके वंशमें ऐसा काम हुआ है? हमारे वंशमें और भी किसीने ऐसा हीन काम किया है? जो आज आप रुपए लेकर मुझसे ब्याह करनेके लिये कह रहे हो? क्या इसी लिये आपने इतने यत्नसे पाल-पोस कर मुझको बड़ा किया था?

क्या इसी लिये आपने मुझे उच्च शिक्षा दिलवाई थी ? क्या इसी लिये आप दूसरोंसे कहा करते हैं कि यह मेरा आदर्श पुत्र है ? क्या आप मुझे ऐसा हीन काम करनेके लिये कह रहे हैं ? मेरा विवाह करके अपने घरमें कुललक्ष्मी लानेके लिये क्या आप मुझे बेचना चाहते हैं ? नहीं, बाबूजी नहीं, आप देशके कुसंस्कारके वश होकर यह बात कह रहे हैं।

राज०—तो क्या इसी लिये तुम एक दरिद्रके घर व्याह करोगे ? कल उनकी बड़ी लड़की हमारी मिसरानीसे यह कहनेके लिये आई थी कि कहीं रसोई बनानेकी नौकरी हो तो मुझसे कहना। तुम उन्हींकी लड़कीसे व्याह करोगे ! इतने लिखे-पढ़े होकर तुम्हें क्या हो गया ?

किशोर—मा ! लिख-पढ़ कर आदमीको जो कुछ होना चाहिए मैं वही होनेका प्रयत्न कर रहा हूँ। तुम्हारे गर्भकी सन्तानको जो होना चाहिए मैं वही होनेका प्रयत्न कर रहा हूँ। मा, तुम भाविनीकी दशा पर ध्यान नहीं देतीं ? भाविनीकी दशा देख कर क्या तुम्हारे मनमें यह बात नहीं आती कि अपनी बहूको हाथमें दो दो चूड़ियाँ पहना कर ले आवें और उसे रानी बना कर रखें ? तुम भाविनीके कष्ट पर ध्यान दो। तुम पराई लड़कीकी माके कष्ट पर ध्यान दो। ईश्वरसे प्रार्थना करो कि हम कमसे कम एक आदमीका तो वह दारुण कष्ट दूर कर सकें। तुम्हारे पुण्यसे एक आदमी तो ऐसा निकल जाय जो अपनी कन्याके व्याहकी चिन्तासे मुक्त हो जाय। लड़केके व्याहमें जैसा आनन्द मनाया जाता है और जैसा उत्सव किया जाता है—लड़कीके व्याहमें भी वह वैसा ही आनन्द मनावे और वैसा ही उत्सव करे। मा ! तुम पुण्यवती हो। बिना पूजन किए जल तक नहीं ग्रहण करती हो। इस

लिये तुम अपने पेटकी जनमी हुई सन्तानके पुण्य-कार्यमें बाधा न दो। और तुम्हें तो चाहिए कि अगर बाबूजी इसमें राजी न हों तो उन्हें भी समझा-बुझा कर राजी कर लो।

धन०—भाविनीकी ससुरालवाले तो नीच हैं; उनका नाम मत लो।

किशोर—भाविनीकी ससुरालवालोंका यही दोष है न कि जो कुछ आप भेजते हैं वह उनकी निगाहमें नहीं जँचता और वे और कुछ लेनेके लिये झगड़ा करते हैं! इसी दोषके कारण न उन्होंने अपनी बहूको इतना कष्ट दिया था? वह दोष जहाँ होगा वहाँ उसका यही फल होगा। एक बीजसे दो तरहके फल नहीं फलते। आप अपने लड़केके ब्याहमें रुपए लेनेके लिये झगड़ा न कीजिएगा।

धन०—जानते हो भाविनीके ब्याहमें कितना रुपया गया है? क्या वह सब रुपया मैं यों ही छोड़ दूँगा?

किशोर—बाबूजी! आप भी कैसी बातें करते हैं! भाविनीकी ससुरालवालोंने आपको कष्ट दिया है। तो क्या केवल इसी लिये आप भी एक दूसरे आदमीको कष्ट देंगे? इसी दोषसे समाजकी दुर्दशा हो रही है। बहुतसे लोग कर्जदार हो रहे हैं, बहुतसे गृहस्थ दरिद्र हो रहे हैं, बालिकाओंकी हत्या हो रही है। कन्याका होना लोग बहुत बड़ा अमंगल समझने लगे हैं। इसी कन्यादानसे देशका सर्वनाश हो रहा है। बाबूजी! आप अपने आदर्शसे लोगोंको यह शिक्षा दें कि पुत्रका विवाह आसुरी सन्तान-विक्रय नहीं है। पुत्रका पुत्र, वंशका स्तंभ और पिण्डका अधिकारी होता है। उसी पुत्रकी माता उसकी मातामहके सर्वनाशका कारण होगी! यह तो बहुत बड़े दुःखका विषय है। इस बुरी प्रथाके कारण धर्म और कर्म, आचार और व्यवहार सभी नष्ट हो रहा है। आप स्वार्थ-त्याग करके समा-

नको शिक्षा दीजिए । संसारमें कीर्ति स्थापित कीजिए । वंशका गौरव उज्ज्वल कीजिए, विवाहकी पवित्र रीति फिरसे स्थापित कीजिए ; समाज आपको धन्य मानेगा और आपकी कृपासे मैं भी धन्य होऊँगा ।

धन०—तुमने करुणामयकी बड़ी लड़कीका हाल सुना है ?

किशोर—मैं हाल क्या सुनूँगा ? जिस समय उस अबलाके ऊपर अत्याचार हो रहा था उस समय मैं स्वयं वहाँ उपस्थित था । उस अत्याचारका मूल कारण भी यही आसुरी विवाह—यही पैशाचिक अर्थ-लोभ, यही प्रेम-हीन व्यवसायी मिलन है । अर्थके लोभमें पड़ कर ही प्रेमशून्य स्वामी अपनी स्त्रीको बेचने चला था । यह बात किसी दूसरेकी कही हुई नहीं है, मैंने स्वयं उसके स्वामीके मुँहसे सुनी है । बाबूजी ! बाबूजी ! इस पैशाचिक विवाहसे आप मेरी रक्षा कीजिए । वह काम कीजिए जो एक हिन्दूके योग्य हो और शास्त्रके अनुसार मेरा विवाह कीजिए ।

राज०—वाह ! मैं दरिद्रके यहाँ अपने लड़केका व्याह करूँगी ?

किशोर—मा, हम लोगोंके वंशमें सदा यही कुल-धर्म रहा है कि घरमें कुलीनकी कन्या लाई जाय । हमारे वंशमें सदा अच्छे ही वंशकी कन्या आई है । कुलीनताकी स्थापना करना ही हमारे वंशकी प्रथा है । यदि करुणामय बाबू कन्या-दानके कारण दरिद्र हो गए हों तो आप उन्हें गिरनेसे बचाइए । आप जानती हैं कि मैं उनका कितना ऋणी हूँ ? उन्हींके उपदेशसे मैं पढ़ने-लिखनेमें मन लगाने लगा था; नहीं तो अब तक मैं पूरा भूत बन गया होता ।

(दाईका प्रवेश ।)

दाई—(राजलक्ष्मीसे) तुम्हारी समधिनने कहलाया है कि वह अपनी लड़की ले गई, यह बहुत अच्छा किया । अगर तुम्हें कंगालका घर पसन्द न हो और तुम लड़कीको बसाना न चाहो तो उन्होंने

कहा है कि हम अपने लड़केका दूसरा व्याह कर देंगे। लड़की अ-फीम मुँहमें रख कर यों ही वहाना करके लेट गई थी, इस लिये देश भरमें हमारी बदनामी करके लड़कीको ले गए! अगर सचमुच ही हमारी बहू अफीम खा लेती तो क्या हम लोग उसका इलाज न करा सकते? वहाँ गए थे रुपएकी गरमी दिखाने! लेकिन जब दामादको रुपए देनेका समय आता है तब यह गरमी कहाँ चली जाती है? तुमने जो कुछ किया सो अच्छा किया। अब लड़कीको लेकर बैठो।

राज०—हैं! इसमें इतना बिगड़नेकी कौन सी बात थी? लड़की आई है, चार दिन बाद चली जायगी।

दाई—तुम आप ही पालकी करके भेज देना। मैं कहे जाती हूँ, अब हमारे यहाँसे लेनेके लिये कोई न आवेगा।

[जाने लगना।

राज०—बैठो, जरा पानी तो पीलो।

दाई—मैं तुम्हारे यहाँ पानी तो पीने नही आई हूँ। मैं जो कुछ कहनेके लिये आई थी सो कह चुकी। मैं जाती हूँ; अब जो कुछ तुम्हें अच्छा लगे सो करो।

[प्रस्थान।

भावि०—मा! मैं तो अब उनके यहाँ न जाऊँगी। तुम लोगोंको वे जो जो गालियाँ देते हैं, वे मुझसे नहीं सही जातीं। भइयाका अमंगल करके मैं उनके यहाँका टुकड़ा नहीं तोड़ना चाहती।

किशोर—देख लीजिए, यही पैशाचिक विवाहका फल है।

भावि०—मा मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ, यदि भइयाका मत है तो तुम यही व्याह कर दो। इसमें तुम्हारी बहूको यहाँ आकर रोना नहीं पड़ेगा, जिससे भइयाका कल्याण होगा।

घन०—बेटा किशोर! मैं तुम्हारा पिता नहीं हूँ, बल्कि तुम्हीं मेरे शिक्षा देनेवाले पिता हो। तुम्हें जो अच्छा जान पड़े सो करो। मुझसे जो कुछ खर्च करनेके लिये कहोगे सो मैं कर दूँगा। तुम्हारे कहनेसे मैं अपने कुलकी प्रथाकी रक्षा करूँगा। (राजलक्ष्मीसे) सुनो जी! तुम भी इसे मना मत करना।

राज०—भई, बहू तो बहुत अच्छी होगी।

घन०—मैं आज ही सब ठीक करता हूँ। भाविनी अगर नहीं जाना चाहती है तो उसे मत भेजना; फिर इधर ब्याह भी तो है।

किशोर—(माता-पिताको प्रणाम करके भाविनीसे) आज मैं एक नई तस्वीर लाया हूँ, आओ तुम्हें दिखलाऊँ।

[सबका प्रस्थान।

सातवाँ दृश्य।

तालाब।

ग्वालिन और समितिके सभासद।

पहला सभा०—तुमने कैसे समझा कि कोई डूबा है?

ग्वा०—जब रात हो गई और मैं दूध दुह कर बाहर निकली तब मैंने दूरसे देखा कि कोई कलसी लिए पानीमें उतर रहा है। पहले तो मैंने सोचा कि इस समय यहाँ कौन आया; पर जब कलसी पर मेरा ध्यान गया तब मैंने सोचा कि कोई पानी लेने आया होगा, बस मैं घर चली गई और जा कर सो रही। सबेरे उठ कर मैंने इस बातका बड़ा हल्ला सुना कि बोस बाबूकी मँझली

लड़कीका पता नहीं है; बहुत ढूँढ़ने पर भी वह नहीं मिली और किसीने रास्तेमें भी उसे जाते हुए नहीं देखा। तब मैंने सोचा कि हो न हो, उसीको मैंने रातको तालाबके किनारे देखा था।

दू० स०—जो कुछ हो, तालाबमें ढूँढ़ लिया जाय।

(सबका पानीमें कूदना।)

(जल्दीसे किशोर और दूसरे कई आदमियोंका आना।)

किशोर—क्यों जी,—मिली?

पह० स०—अभी नहीं।

ग्वा०—वह देखो, उधर क्या उतरा रहा है?

किशोर—यही तो है।

(पानीमें कूद पड़ना।)

(सबका मिल कर हिरणमयीको पानीसे निकलना।)

पह० स०—इसके गलेमें यह कलसी कैसी है?

ग्वा०—यह फूटी हुई कलसी तालाबके किनारे पड़ी थी; बेचारी इसीको गलेसे बाँध कर डूब मरी! हाय! जान पड़ता है कि बेचारी बहुत छट-पटाई थी, जिससे यह कलसी और भी टूट गई है।

सब०—हाय! कैसा अनर्थ है?

दू० स०—डाक्टर साहब! इसे देखिए।

डा०—(देख कर) इसे मेरे तो बहुत देर हो गई।

किशोर—तो भी, कुछ प्रयत्न कीजिए।

डा०—अब प्रयत्न करना व्यर्थ है। यह मरी न होती तो पानीके ऊपर कैसे आ जाती?

(जल्दीसे सरस्वतीका प्रवेश।)

सर०—हिरण! हिरण!

(मूर्च्छित होकर गिर पड़ना।)

किशोर—डाक्टर साहब! जरा इसे देखिए।

ग्वा०—हाय! यह भी बेचारी न बचेगी।

(डाक्टरका सरस्वतीकी शुश्रूषा करना।)

सर०—(उठ कर) हिरण! अरे मेरी बेटी हिरण! तीन दिनसे तो तूने मुँहमें अन्नका एक दाना भी नहीं डाला था। हाय बेटी! तुम पापका अन्न नहीं खाना चाहती थीं, इसी लिये तुम हम सब लोगोंको छोड़ कर चली गई। उठो बेटी, उठो। इस तरह नाराज मत होओ। तुम किस पर नाराज होती हो? मैं तो तुम्हारी राक्षसी मा हूँ। हाय तुम मुट्ठी भर अन्नके लिये पानीमें कूद पड़ी! बेटी हिरन! उठो, उठो, देखो मैं कबसे तुम्हें ढूँढ़ रही हूँ।

(फिर मूर्च्छित हो जाना।)

(करुणामयका प्रवेश।)

करुणा०—यह देखो मिल गई। मैं तो पहले ही कहता था कि मेरी शान्त और लज्जाशीला लड़की कहीं गली बाजारमें न जायगी। बेटी! बेटी! मैं तुम्हें अन्न नहीं दे सका था, इसी लिये तुमने भर पेट पानी पी लिया। हाय बेटी! क्या तुम यह पानी पीकर शीतल हुई हो! बेटी तुमने बहुत ताप पाया था—तुम बहुत जली थीं। क्या तुम अब शीतल हुई हो? हाय बेटी!

(सिर पकड़ कर बैठ जाना।)

किशोर—बाबूजी! आप शान्त हों।

करुणा०—बेटा, तुम जरा भी भय न करो। मैं शान्त न होऊँगा तो क्या करूँगा! तुम जानते हो कि मेरी प्यारी बेटी क्यों डूब मरी? वह घृणा और आत्म-ग्लानिके कारण डूब मरी है। वह बेचारी पति-हीना थी और मुट्ठी भर अन्नके लिये मेरे यहाँ आई थी; इस पर मैंने

कहा था कि इसे राख खिलाओ। मैं पिता होकर उसे अन्न नहीं दे सका था और चूल्हेकी राख खिलानेके लिये कह बैठा था। मैंने ही देख-सुन कर उसका ब्याह किया था। मैंने ही बुड्ढे रोगीके हाथ उसे सौंपा था और मैं पहले ही सोच चुका था कि वह विधवा हो जायगी। वह विधवा होकर मेरे घर आई। मैं उसे राख खिलाने चला—पिता होकर अपनी सन्तानको राख देने लगा! हाय! मैंने अपनी सन्तानकी हत्या की। मेरा जन्म बड़े ही अशुभ मुहूर्त्तमें हुआ था!

सर०—(उठ कर) हिरण! हिरण! बेटी हिरण! उठो, मुँहसे कुछ बोलो। अपनी यह नाराजगी छोड़ो। बेटी! तुम तो जानती हो कि मैं बहुत ही दुखिया हूँ—बहुत ही अभागिनी हूँ। मैं जब अपने जमाईके शोकमें रोया करती थी तब तुम अपनी आँखोंके आँसू पोंछ कर मुझे ढारस दिया करती थीं। हाय बेटी, अब फिर एक बार उठ कर मुझे ढारस दो। अपनी यह नाराजगी छोड़ो और मुझसे दो दो बातें करो। हाय! बेटी! बेटी! यह क्या हो गया!

पह० सभा०—बाबूजी, वह देखिए पुलिस आ रही है। आप अपनी लड़कियोंसे कहें कि वे इन्हें उठा कर घरके अन्दर ले जायँ। अब इन्हें यहाँ रखनेसे क्या लाभ होगा।

किरण०—मा! चलो, घर चलें।

सर०—नहीं, मैं घर न जाऊँगी। मैं अपनी हिरणके साथ ही जाऊँगी। अपनी प्यारी बेटीको मैं किसके भरोसे छोड़ जाऊँ? यह अनाथिनी और अभागिनी है। इसे मैं किस पर छोड़ जाऊँ?

करुणा०—अजी तुम किस लिये इतनी चिन्ता करती हो? अब हम लोग हिरणकी ओरसे निश्चिन्त हो गए। चलो, चलो, अब हिरणका ध्यान छोड़ो। उसकी चिन्ता करना व्यर्थ है।

(सरस्वतीको लेकर करुणामयका जाने लगना।

(पुलिस इन्स्पेक्टर और सिपाहियोंका प्रवेश ।)

किशोर—भाई, ऐसा प्रबन्ध करो जिसमें private post mortem हो और Dead house में यह लाश न जाय ।

इन्० —वाहं ! रुपए देनेसे क्या नहीं हो सकता ?

किशोर—अच्छा तो चलो, हम लोग इसे अपनी समितिके भवनमें ले चलें ।

(समितिके सभासदोंका हिरणमयीका मुँह ढाँक कर उठाने लगना ।
सरस्वतीका दौड़ते हुए आना ।)

सर०—अरे उसका मुँह मत ढाँको—मुँह मत ढाँको । वह हिल रही है—हिल रही है ।

पाँचवाँ अंक।

पहला दृश्य।

तालाव।

सरस्वती, किरणमयी और ज्योतिर्मयी।

किरण०—मा! तुम ऐसी बातें न करो। हम लोगोंका मुँह देख कर धीरज धरो। वह तो गई; अव वह लौट कर आ तो सकती ही नहीं। हम लोग भी तुम्हारी ही अनाथा कन्याएँ हैं। हम लोगोंकी ओर देखो। देखो, वावूजीकी कैसी दशा हो रही है! यदि तुम धीरज न धरोगी तो हम लोग किसका मुँह देख कर रहेंगी? देखो, ज्योति वहुत ही कातर हो रही है। जब तुम इस तरहकी बातें करती हो तब वह और भी रोती और पागलोंकी तरह इधर उधर घूमती है। मा, तुम शान्त हो।

सर०—किरण! यह प्राण वहुत ही कठिन है। इतने पर भी यह शरीरसे नहीं निकलता। तब फिर मेरी हिरण कैसे चली गई? हाय, वह बहुत ही जल कर गई है—वहुत ही दुखी होकर गई है। मारे दुःखके वह सूख कर काँटा हो गई थी, इसी लिये चली गई। यहाँ आनेसे मुझे कुछ धीरज होता है। इस पानीको देख कर मैं समझती हूँ कि मेरी हिरण जलती जलती इसी पानीसे शीतल हुई थी; इसी लिये मैं पानीकी तरफ देखा करती हूँ।

किरण०—मा, तुम अपने मनसे कुछ नहीं समझतीं? तुम नहीं देखतीं कि वावूजीकी कैसी दशा हो रही है? तुम्हारी यह दशा देख कर तो वे और भी पागल हो रहे हैं। मा! तुम जरा अपने

मनमें समझो और धीरज धरो, नहीं तो मैं बाबूजीको शान्त न रख सकूँगी ।

सर०—देखो, मेरी हिरण बहुत हठी थी । मैं उससे कहा करती थी कि तुझे बहुत अच्छा वर मिलेगा और उसके हाथमें खिलौने देकर कहा करती थी कि तेरे घर भी लड़का होगा तो तू उसका व्याह कीजियो और घरमें बहू लाइयो । हिरण अपने खिलौनोंको खूब सजाती थी और उन्हीं खिलौनोंके बहू-बेटोंको सुलाती थी । उसे घर-गृहस्थी और बाल-बच्चोंका बहुत शौक था । जब उसका व्याह ठीक हुआ तो महल्लेकी एक स्त्रीने कहा था कि—"लो हिरण! तुम्हें बहुत अच्छा वर मिला है, अब कुछ खिलाओ ।" इस पर हिरणने कुछ मुस्करा कर मुँह फेर लिया था । हाय बेटी! तू नहीं जानती कि मैंने मा होकर तुझे पानीमें फेंक दिया । एक बुड्ढे रोगीके साथ गाँठ बाँध दी । हाय, मेरी हिरण दुःखी होना तो कभी जानती ही न थी । मैं उसे धमकाती, झिड़कियाँ देती, पर वह बेचारी चुपचाप अपना सिर नीचे कर लेती । मानो उसने कोई बहुत बड़ा अपराध किया हो । हाय बेटी! मैं कैसे धीरज धरूँगी? मुझे तो एक एक करके सभी बातें याद आ रही हैं । हाय! यह पेटकी ज्वालासे पानीमें डूब मरी! हाय बेटी!

(नलिनका प्रवेश ।)

नलिनी०—बहन! एक चवन्नी दो ।

ज्यो०—भाई, तुम्हारे लिये रोज रोज कोई कहाँसे चवन्नी लावेगा? क्या तुम अपने मनमें नहीं समझते कि हम लोग कैसे दुःखसे गृहस्थी चलाते हैं?

नलिन०—तुम सीधी तरहसे चवन्नी न दोगी तो मुझे फिर सन्दूकका ताला तोड़ना पड़ेगा । इस लिये यही अच्छा है कि सीधी तरहसे दे दो ।

किरण०—क्यों जी, नलिन ! तुम इतने बड़े हुए पर कुछ भी नहीं समझते ? अगर तुम दो घड़ी माके पास ही बैठो तो भी उन्हें कुछ धीरज हो।

नलिन०—हाँ, क्यों नहीं ! वह रोज रोज रोया करें और मैं चुपचाप उनके पास बैठा रहा करूँ ! घूम-फिर कर मजा न किया करूँ !

किरण०—तुम तो दिन पर दिन बड़े नालायक हुए जाते हो ! तुम्हें मा-बापका कुछ भी दरद नहीं है ?

नलिन०—लाओ लाओ, जल्दी चवन्नी दो। देर हो रही है, मुझे फुटबाल देखने जाना है। मा ! इनसे कह दो कि दे दें।

किरण०—वह कहाँसे लावेगी ?

नलिन०—मैं क्या जानूँ ? मा कह दो कि दे दें। नहीं कहोगी —नहीं कहोगी ? अच्छा तो फिर मैं तमाशा दिखलाऊँ ? मैं मोजा बुननेकी कल तालावमें फेंक दूँगा और ऊन जला दूँगा, नहीं तो सीधी तरहसे चवन्नी दे दो।

किरण०—हाँ क्यों नहीं कल फेंक दोगे तभी तो बैठ कर सेर सेर भर ठूँसोगे न !

नलिन०—उहँ ! मुझे इसकी परवा नहीं है। मैं तुम्हारे घरके खानेको क्या समझता हूँ ! मैं लाल बाबूके बगीचेमें जा रहूँगा।

ज्यो०—अच्छा, मैं तुमको चवन्नी दूँगी; पर पहले यह बतलाओ कि तुम किशोर बाबूके स्कूलमें पढ़ने जाओगे ?

नलिन—हाँ, क्यों नहीं ! और मेरे बदलेमें क्रिकेट खेलने तुम जाओगी ! जानती हो ? आजकल हम लोग मैच खेला करते हैं।

सर०—हाय ! मेरी हिरण कभी यह कहना जानती ही न थी कि मैं कुछ खाऊँगी। जब उसे खिलौने नहीं मिलते थे तब तो वह

जिद करती थी; मगर खानेके लिये उसने कभी कुछ नहीं कहा। उसी हिरणको भूखों रख कर मैंने यमके घर पहुँचा दिया। लेकिन मैं अभागिनी अभी तक खाती चली जाती हूँ। अब भी मुझे मौत न आई!

नलिन—मरो मत। तुम भी बहनकी तरह डूब जाओ।

ज्यो०—देखो नलिन! जब बाबूजी आवेंगे तब मैं तुम्हारा सारा हाल उनसे कह दूँगी। जाओ, मैं तुम्हें चवन्नी न दूँगी।

नलिन—तो बाबूजी मेरा क्या कर लेंगे? क्या वह मुझे मारेंगे? तुम जानती नहीं हो कि मैं एक दिन उनका भी हाथ झटक कर भाग आया था?

(नेपथ्यमें) नालिनका एक साथी—Nolin, here come, tram hire have.

नलिन—कौन, श्यामू? pice got?

(नेपथ्यमें)—Oh yes.

नलिन—चवन्नी नहीं दोगी न? अच्छा मैं जाता हूँ।

[प्रस्थान।

किरण०—मा! बाबूजीकी आवाज आती है। उन्होंने अभी तक कुछ खाया नहीं है। जब तुम चलोगी तब वे खायँगे। चलो चलो, घरका काम तुम न देखोगी तो और कौन देखेगा?

सर०—बेटी, तुम मुझे क्या देखनेके लिये कहती हो? मैं जिधर देखती हूँ उधर मुझे हिरण ही दिखलाई देती है। दिन-रात मुझे यही सुनाई पड़ता है कि हिरण ठण्ढी साँस लेती है। हाय मेरी बेटी! यह क्या हो गया!

(करुणामयका प्रवेश।)

करुणा०—हैं, तुम यहाँ क्यों बैठी हो? हिरणके लिये? अब वह तुम्हें नहीं मिलेगी। अब यह देखो कि और कोई न चला जाय।

(ज्योतिसे) हैं ज्योति ! तुमने भी रोना सीख लिया ? सीखो—सीखो खूब रोना पड़ेगा। दिन-रात रोना पड़ेगा। मेरे घर जनमी हो, रोओगी नहीं तो और क्या करोगी ? हिरण रोती रोती चली गई, किरण रो रही है और तुम्हें भी रोना पड़ेगा।

किरण०—बाबूजी ! तुम ऐसी बातें न करो। माको घर ले चलो। यह सबेरेसे चुपचाप यहीं बैठी हैं।

करुणा०—अच्छी बात है, बैठी रहें। तुम कहती हो न कि इन्होंने कुछ खाया नहीं है, यों ही बैठी हुई हैं। खाना तो पड़ेगा ही, बिना खाए तो काम चलेगा नहीं। (सरस्वतीसे) क्यों जी ! या चल जायगा ? तुम न खाओ तो न खाओ, लेकिन मैं तो बिना खाए रह नहीं सकता। तुम्हें हिरण याद आ रही है न ? खानेके समय और भी याद आवेगी—खूब याद आवेगी। मुझे तो याद आती है, पर कौन जाने कि तुम्हें याद आती है कि नहीं।

सर०—किरण ! सुना ? यह ठीक कह रहे हैं। क्यों व्यर्थ चिन्ता करती हो—मैं खाऊँगी—मैं खाऊँगी ! नहीं मैं न खाऊँगी, मैं राक्षसी हूँ—मैं न खाऊँगी। तुम इन्हें घर ले जाओ, मैं आप ही आऊँगी। देखो देखो, हिरण यहीं सोई थी। यहीं सोए सोए उसने सिर उठा कर सूर्य्यकी ओर देखा था। तुम जानती हो कि देख कर उसने क्या कहा था ? उसने कहा था कि हे सूर्य्य ! देखो, मेरी मा राक्षसी है। जिसमें उसे मेरी बातें सुननी न पड़े, मुझसे कुछ कहना न पड़े और मेरा मुँह देखना न पड़े, इसी लिये उसने सूर्य्यकी ओर देखा था। तुमने उसे देखते हुए देखा था ?

करुणा०—हाँ मैंने देखा है। लेकिन क्या इस देखनेसे ही सबका अन्त हो जायगा ? और कुछ देखना न पड़ेगा ? कौन जानें अभी क्या क्या देखना बदा है ? अच्छा मैं जाता हूँ। तुम लोग अब

मेरे आसरे न बैठना और न मेरी चिन्ता करना । (सरस्वतीसे) खाओ, खाओ । तुम्हें खाना पड़ेगा । तुम न खाओगी तो मैं आकर खाऊँगा । चलूँ चलूँ, ज्योतिका कुछ इन्तजाम करूँ । किरणका इन्तजाम तो मैंने कर दिया और हिरणने अपना इन्तजाम आप ही कर लिया । अब ज्योतिका इन्तजाम बाकी है, वह भी कर आऊँ । मैं बाप ठहरा; इन्तजाम न करूँगा ?

[प्रस्थान ।

(किशोर और भाविनीका प्रवेश ।)

(किरणमयीका और ज्योतिर्मयीका जाने लगना ।)

भावि०—बहन किरण ! तुम कहाँ चलीं ? मुझे माने भेजा है ।

किरण०—मा ! भाविनी आई हैं ।

सर०—आओ बेटी !

भावि०—माने मुझे आपके पास भेजा है । उन्होंने कहलाया है कि आप भइयाके साथ ज्योतिका व्याह कर दें ।

[ज्योतिर्मयीका प्रस्थान ।

भावि०—वह पूजा करने चली गईं, नहीं तो आप ही आतीं । मुझसे उन्होंने कहा था कि जाओ, तुम्हीं जाकर कह आओ । मैं बिना उनकी लड़की लिये न मानूँगी ।

किशोर०—मुझे बाबूजीने भेजा है और कहा है कि जाकर करुणामय बाबूसे पूछ आओ कि अगर वे मकान पर रहें तो बाबूजी उनसे मिलनेके लिये सन्ध्याको आवें ।

भावि०—मैं मासे जाकर क्या कह दूँ ?

सर०—बेटी ! तुम उनसे यही कह देना कि हम लोगोंका जन्म तो संसारमें व्यर्थ ही हुआ है । ज्योति उन्हींकी है । जब वह उन्हींकी है और वह आप ही लेंगी तब फिर हम लोगोंसे क्यों पूछती हैं ? मैं कुछ नहीं जानती । अब सबका भार उन्हीं पर रहेगा ।

किशोर—बाबूजी बोस बाबूसे मिलनेके लिये सन्ध्याको आवें ?

किरण०—मा ! किशोर बाबू पूछते हैं कि बाबूजी सन्ध्याको घर पर रहेंगे ?

सर०—हाँ रहेंगे तो; पर मैं उन्हींको भेज दूँगी।

किशोर—नहीं नहीं, बाबूजीने कहा है कि हमीं उनसे मिलनेके लिये चलेंगे। मैं उनसे जाकर कह देता हूँ कि वे सन्ध्या-समय घर पर रहेंगे।

भावि०—अच्छा तो मैं जाती हूँ; मासे कह देती हूँ।

[दोनोंका प्रस्थान।

सर०—क्यों जी, क्या वे सचमुच ज्योतिके साथ किशोरका व्याह कर देंगे ? मुझे तो इस पर बिलकुल विश्वास नहीं होता।

किरण०—मा, तुम भी कैसी बातें करती हो ? वे दोनों भाई-बहन क्या यों ही आए थे ? तुम्हें विश्वास दिलानेके लिये ही तो उन्होंने किशोर बाबूको साथ भेजा था। अच्छा तुम अब उठो और आँसू पोंछ डालो। अब अगर तुम रोओगी तो मैं अपना सिर पटक कर जान दे दूँगी। चलो, घर चलें।

[दोनोंका प्रस्थान।

दूसरा दृश्य।

रूपचन्द मित्रकी बैठकका बरामदा।

रूपचन्द, लालचन्द और वकील।

लाल०—बाबूजी ! खूब अच्छी तरह लिखा-पढ़ी कर लेना। पूरी मजबूती कर लेना। लेकिन जो कुछ करना सो नरमीसे करना, गरमीसे न करना। क्योंकि तुम्हें गरमीका रोग है। अगर जरा भी गरमी दिखलाओगे तो सारा मामला गड़बड़ा जायगा !

रूप०—तुम मुझे वकील साहबके साथ बात नहीं करने दोगे न ? जरा चुप रहो ।

लाल०—बाबूजी, तुम मुँह न फेर लेना । मेरी जान निकल रही है । अबकी मैंने प्रेम किया है । बाबूजी ! मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब वह चली जाती है तब मेरा यही जी चाहता है कि अपना कलेजा चीर डालूँ । बाबूजी, तुम उस बहूको अपने घर ले आओ तो मैं बिलकुल राजा-बेटा बन जाऊँगा । मैं दिन-रात उसीकी छवि देखा करता हूँ । उसके वह रूखे रूखे बाल आकर मुँह पर पड़ रहे हैं । और वह चम्पाकी कली जैसी उँगलियोंसे रह-रह कर उन बालोंको हटा देती है । वह दोनों बड़ी बड़ी काली आँखें ! बाबूजी ! वह इधर उधर तो देखना जानती ही नहीं । चुपचाप सिर नीचा किए हुए जाकर गाड़ी पर बैठ जाती है । अपना दुपट्टा वह नहीं सँभाल सकती; उसके कन्धे परसे आँचल गिर पड़ता है और उसकी बढ़िया गोल बाँह बाहर निकल आती है । उसका गला तो देखनेमें ऐसा मालूम होता है कि अगर वह पानी भी पीती होगी तो वह पानी उसके गलेसे नीचे उतरता हुआ दिखाई देता होगा । उसके दोनों गाल तो ऐसे हैं कि मानों बिलकुल गुलाबके फूल । बाबूजी ! मेरी आँखोंके सामने तो दिन-रात वही नाचा करती है ।

रूप०—अच्छा तो तुम अब बको, मैं जाता हूँ ।

लाल०—नहीं नहीं बाबूजी ! मैं चुप हो जाता हूँ ।

(मुहँ पर हाथ रख लेना ।)

रूप०—वकील साहब ! इस तरहकी लिखा-पढ़ी कर दीजिए कि अगर वह ब्याहवाली शर्त्त पूरी न करे तो उस पर फौजदारीका मुक-दमा चल जाय ।

वकील—अजी उस दशामें तो उन पर Cheating का चार्ज लग जायगा।

रूप०—बस लिखा-पढ़ीमें ऐसी ही मजबूती कर दीजिए।

लाल०—बाबूजी! तुम उन्हें घर-बार तो लौटा ही दोगे, पर नगद रुपए देनेमें भी कोर-कसर न करना। अगर तुम उसके बापको प्रसन्न रखोगे तब वह भी मुझे कुछ कुछ चाहने लगेगी। और अगर उसके बापको नाराज कर दोगे तो वह इस बंदर-मुँहेकी तरफ आँख उठा कर देखेगी भी नहीं।

रूप०—अरे कहा तो कि पाँच हजार रुपए दूँगा।

लाल०—बस बस बाबूजी, बस, यही तो मैं भी कहता हूँ। ऐसा काम करो जिसमें वह मेरा यह बेढंगम चेहरा देख कर घबरा न जाय; बल्कि प्रसन्न होकर हँस पड़े और बातें करने लग जाय। बाबूजी! उसके दोनों लाल होंठोंके बीचमें आधे आधे मोतीके दानोंकी तरह दाँत देख कर तो सिरमें चक्कर आने लगता है। बाबूजी! जब वह आवेगी तब मैं उसकी तरफ टकटकी लगा कर दिन-रात खाली देखा ही करूँगा।

रूप०—चुप रहो, चुप रहो, करुणामय बाबू आ रहे हैं। उनके सामने विलक्षेपनकी कोई बात न कर बैठना। वकील साहब! आप उन्हें अपने साथ लेकर अन्दर कमरेमें चले आइए।

[एक ओर वकीलका और दूसरी ओर रूपचन्द और लालचन्दका प्रस्थान।

तीसरा दृश्य ।

रूपचन्दका कमरा ।

(एक ओरसे रूपचन्द और लालचन्दका और दूसरी ओरसे वकील और करुणामयका प्रवेश ।)

लाल०—ससुरजी ! वन्दगी । (स्वगत) मैं तो अपने इस लंगड़ेपन और कूवड़को वन्दगी करता हूँ । वस मैं इन्हीं दोनोंसे परेशान हूँ । वावूजीने भी क्या वेहंगम लड़का पैदा किया है ।

रूप०—आइए समधी साहव ! आइए ।

करुणा०—हूँ—उधर कौन है ? नहीं—कोई नहीं ।

रूप०—वैठ जाइए । उधर क्या देख रहे हैं ? क्या आपके साथ कोई और आदमी आया है ?

करुणा०—नहीं— लेकिन—हूँ—वैठता हूँ ।

(वैठना ।)

रूप०—(दस्तावेज और हैण्डनोट दिखला कर) समधी साहव ! यह देखिए । यह उस मकानका दस्तावेज है जो उसे रेहन रखते समय आपने लिखा था और यह आपके लेनदारोंके हैण्डनोट हैं । क्यों, अव तो आपको कर्जका कोई डर नहीं रह गया ? देखिए—देखिए, सव हैण्डनोट देख लीजिए ।

करुणा०—हूँ—अव तो वारण्ट नहीं निकलेगा न ?

रूप०—अजी अव वारण्ट कैसा ! आप सव हैण्डनोट देख लीजिए न ! अव तो आपको और किसीका देना नहीं है न ?

करुणा०—हूँ कौन जाने, किसीका कुछ निकल आवे, इसलिये पहले सवकी फ़ेहरिस्त वना लूँ ।

रूप०—अगर एक आध आदमीका कुछ देना-पावना निकल भी आवेगा तो उसमें हर्ज ही क्या है? मैं तो लिख ही देता हूँ कि मैं आपका सब देना चुका दूँगा।

करुणा०—हूँ—बहुत देना है—बहुत देना है।

वकील०—(स्वगत) मालूम होता है कि इनका दिमाग कुछ खराब हो गया है।

करुणा०—हूँ—कोई नहीं है न? ओफ़! राख खाकर मर गई—राख खाकर मर गई। वह कौन है?

लाल०—ससुरजी! अब आप कुछ चिन्ता न करें और खूब बेफिक्र होकर मजेमें घूमें। (अलग हट कर) बाबूजी! रुपए निकालो।

रूप०—(अलग हट कर) अजी ठहरो भी।

वकील—यह हजार हजार रुपएके पाँच नोट हैं, देख लीजिए।

करुणा०—हूँ—देख लिए।

वकील—इस कागज पर दस्तखत कर दीजिए।

करुणा०—हैंडनोट है? अच्छा लाइए।

वकील०—जी नहीं, हैण्डनोट नहीं है। इसके द्वारा आप यह स्वीकार करते हैं कि यह सब पाकर आप अपनी सबसे छोटी लड़कीका व्याह लालचन्दके साथ कर देंगे।

लाल०—ससुरजी! आप कुछ चिन्ता न कीजिए। आपकी लड़की पाते ही मैं बिलकुल भला आदमी बन जाऊँगा। घरसे बाहर तक न निकलूँगा। किसी सालेका मुँह तक न देखूँगा और मास्टर नौकर रख कर पढ़ना सीखूँगा। ससुरजी, आप दस्तखत कीजिए, दस्तखत कीजिए; मैं बहुत ठीक दमाद बन जाऊँगा।

करुणा०—हूँ—दसखत करूँ? सूद क्या है?

रूप०—समधी साहब! सूद कैसा? आप इतने बड़े कुलीन हैं। आपकी लड़की अपने घर लाकर मैं अपने कुलकी मर्यादा बढ़ाऊँगा। मैं क्या यह रुपए आपको उधार दे रहा हूँ जो आप इसका सूद देंगे?

वकील—अजी साहब! यहाँ कोई लेन-देनकी बात थोड़े ही है! हाँ एक Contract है। आप अपनी लड़कीका व्याह इनकी लड़कीके साथ कर देंगे उसीका यह Contract है। क्यों आपको यह बात मंज़ूर है न?

करुणा०—हाँ हाँ, क्यों नहीं! लेकिन एक बात है। यदि वह मर जाय तब क्या होगा? एक तो मर गई, राख खाकर मर गई। अगर यह भी राख खाकर मर जाय तो क्या होगा? वे सब मरना चाहती हैं—मरती हैं, केवल मैं ही नहीं मरता और मेरी स्त्री नहीं मरती। यदि वह मर जाय तो क्या होगा?

लाल०—दोहाई ससुरजीकी—दोहाई ससुरजीकी! ऐसी बात मुँहसे न निकालो, नहीं तो मैं यों ही मर जाऊँगा।

करुणा०—नहीं वह मर गई थी और मर कर फिर पानी पर उतरा आई थी। वह पेटकी ज्वालासे मरी थी—पेटकी ज्वालासे मरी थी।

रूप०—अजी, इन सब बातोंको जाने दीजिए।

वकील—मालूम होता है कि इन्हें बहुत दुःख पहुँचा है।

करुणा०—नहीं, दुःख काहेका?

रूप०—समधी साहब! अब इन सब बातोंका ध्यान छोड़िए और नया दामाद लेकर आनन्द-मंगल कीजिए।

वकील—लीजिए साहब दसखत कर दीजिए—दसखत कर दीजिए। इसमें जो कुछ लिखा है वह सब आपने समझ लिया न? इसमें लिखा है कि आप बाबू रूपचन्दके पुत्रके साथ अपनी कन्याका शुभ विवाह कर देंगे।

करुणा०—हूँ—मैंने सब समझ लिया, लाओ दसखत कर दूँ। अगर वह मर जायगी तो उसे पानीमेंसे निकाल लूँगा। लाओ दस-खत कर दूँ।

वकील—मुंशीजी! जरा आप दोनों आदमी इधर आइए।

करुणा०—हूँ—किसको बुलाते हैं?

वकील—एक तो मेरा क्लर्क है और एक और मुंशी है। वे दोनों उस कमरेमें बैठे हैं। वे ही गवाह होंगे। आप दसखत कर दीजिए।

(दोनों मुंशियोंका प्रवेश।)

वकील—देखिए बाबू साहब दसखत कर रहे हैं। यह अपनी लड़कीका ब्याह लाल बाबूसे कर देंगे। आप लोग गवाही कर दीजिए।

करुणा०—हाँ मुझे पूरा दाम मिला है, मैं ब्याह कर दूँगा। अगर वह मर भी जाय तो भी मुझे सूद तो नहीं देना पड़ेगा न?

वकील—जी नहीं, आप दसखत कर दीजिए। (स्वगत) अच्छे पागलसे काम पड़ा। देर हो रही है।

करुणा०—(दसखत करके) यह लो, दसखत हो गया। अब तो मैं घर जाऊँ न, या और कोई काम है?

रूप०—बैठिए—आप घबरा क्यों रहे हैं?

लाल०—(अलग हट कर) बाबूजी! ब्याहका दिन ठीक कर लो। जहाँ तक जल्दी हो सके ब्याह हो जाय, देर न हो, नहीं तो फिर मामला गड़बड़ा जायगा।

रूप०—अच्छा तो मैं पुरोहितजीको बुला कर ब्याहका दिन ठीक कर लूँगा और तब आपको कहला दूँगा। तिलकके दिन आपके जितने सम्बन्धी हों उन सबको बुलाइएगा। आप कुछ चिन्ता न कीजिएगा, खूब जी खोल कर ब्याह कीजिएगा। जो कुछ खर्च होगा वह सब मैं दूँगा। आपके रिश्ते-नातेका कोई आदमी बाकी न

रह जाय, सबको निमंत्रण दीजिएगा । उन लोगोंको लानेके लिये जितनी गाड़ियोंकी जरूरत होगी उतनी गाड़ियाँ मैं भेज दूँगा ।

करुणा०—हूँ—रिश्ते-नातेके लोग—रिश्ते-नातेके लोग ? मैं कहलाऊँगा, कहलाऊँगा—सबको कहलाऊँगा । जो जहाँ होगा उसे मैं वहाँसे ढूँढ़ निकालूँगा । लेकिन कहाँ—कोई तो नहीं है । काम हो गया ? अब मैं जाता हूँ ।

रूप०—अब तो सब बातचीत पक्की हो गई न ?

करुणा०—हूँ—मोल-भाव सब हो ही चुका है, अब मैं जाता हूँ ।

वकील—नोट जेबमें रख लीजिए और दस्तावेज अच्छी तरह पल्लेमें बाँध लीजिए । लाइए मैं ही बाँध दूँ । आइए आपको गाड़ी तक पहुँचा आऊँ ।

करुणा०—हूँ ।

लाल०—बाबूजी ! मैं इन्हें कन्धे पर चढ़ा कर पहुँचा आऊँ ?

रूप०—समधी साहब ! जल्दी कीजिएगा और मनमें किसी तरहका सोच फिकर मत कीजिएगा । आपके बुरे दिन बीत गए ।

करुणा०—सोच फिकर—सोच फिकर काहेका ? लड़की मर गई है—उसका ? या घरवाली मर रही है उसका ? मरती है तो मरा करे, सोच फिकर काहेका ?

[प्रस्थान ।

वकील—(दोनों मुंशियोंसे) तुम लोग जाओ ।

[दोनोंका प्रस्थान ।

वकील—इनका दिमाग कुछ खराब हो गया है ।

रूप०—क्या कोई बात छूट गई ? मरेगी मरेगी क्या कह रहा था ? अगर मान लीजिए कि वह लड़की मर ही जाय तो क्या मुझे रुपया वापस न मिलेगा ? यदि इस सम्बन्धमें भी एक clause रख दिया जाता तो बहुत अच्छा होता ।

वकील—(स्वगत) कैसा भारी कौआ है।

लाल०—बाबूजी ! अशुभ बात मुँहसे न निकालो, मेरा कलेजा काँपता है।

रूप०—दस्तावेजमें कोई बात कच्ची तो नहीं रह गई न ?

वकील—वाह साहब ! आप भी कैसी बातें करते हैं ? रुपया भी कभी कच्चा होता है ?

रूप०—लेकिन इसका दिमाग कुछ जरूर खराब हो गया है।

लाल०—बाबूजी ! तुम इसकी चिन्ता न करो। सब ठीक है। मुझ सुपात्रको देख कर वह जरा खड़बड़ा गए थे। वह अपनी बातके पक्के आदमी हैं, जो कहेंगे वही करेंगे। तुमने देखा तो कि मैं नगद रुपए लेकर गया था, पर उन्होंने नहीं लिए। बुड्ढे रोगीके साथ उन्होंने अपनी लड़कीका ब्याह कर दिया, पर मेरे साथ न किया।

वकील—नहीं, आदमी बातका तो पक्का है। उस बजाजवाले मुकद्मेमें अगर यह जरा भी झूठ बोल देता तो उसका रुपया हवा हो जाता। लेकिन यह झूठ नहीं बोला और इसके एकबाल कर लेने पर ही किस्तबन्दीकी डिगरी हो गई। हाँ, आपने कुछ हिसाब लगाया कि कुल कितने रुपए आपको देने पड़े ?

रूप०—क्या करूँ साहब ! कुछ कहा नहीं जाता ! इधर लड़का नहीं समझता था, उधर घरवाली बिलकुल अड़ गई थी। मैं तो यों ही काम निकाल लेता, लेकिन लड़का जरा बेढब है। मेरा तो कलेजा कसक रहा है। मैंने उसको एक एक करके नोट क्या दिया है कि अपने कलेजेका माँस काट काट कर दिया है।

लाल०—बाबूजी ! अब कलेजेके कसकनेकी जरूरत नहीं। बहूको देखते ही तुम्हारी सारी कसक मिट जायगी। मैं तुम्हारे घरमें ऐसी बहू ला देता हूँ जैसी तुम्हारे चौदह पुरखाके घरमें न आई होगी। बिलकुल चाँदका टुकड़ा है—चाँदका टुकड़ा।

वकील—अच्छा तो मैं अब चलता हूँ। (स्वगत) लाख रुपए एक तरफ और इनके यह सपूतचन्द एक तरफ !

[लालचन्दके अतिरिक्त सबका प्रस्थान ।

लालचन्दका गाना ।

वाह वा निज बापका मैं बेटा बहादुर ।
बाजी मात है क्या बात है क्या रूपचन्द रूपेका सुर ॥
छूटा अब छातीका धड़का, चटपट क्या मारा है झटका,
हा जो मोतीका जीता वह बन्दरके हाथों पटका,
हुआ किले पर अब अधिकार, लूट मची है हेम बजार;
क्या बेहद है आनन्द हमारे दिलमें जब भरपूर ॥

[प्रस्थान ।

चौथा दृश्य ।

करुणामयके मकानका भीतरी भाग ।

करुणामय और ज्योतिर्मयी ।

करुणा०—ज्योति ! अब मैं तुम्हारा भी ब्याह कर दूँगा । क्योंकि अगर मैं ब्याह न करूँगा तो जाति जो चली जायगी । मैंने पहले अपनी दो लड़कियोंको सुपात्रोंके हाथमें दिया था, तुम्हें भी सुपात्रके ही हाथ सौंपूँगा ।

(सरस्वती और किरणमयीका प्रवेश ।)

करुणा०—सुनती हो, मैं तुम्हारी इस लड़कीको भी सुपात्रके ही हाथमें दूँगा । मैं ठहरा बाप, सब कुछ पहले देख-सुन न लूँगा ! लड़का बहुत ही सुपात्र है ।

[ज्योतिका प्रस्थान ।

किरण०—बाबूजी ! घनश्याम बाबूके साथ तुम्हारी भेंट हुई थी ?

करुणा०—मैं तो लड़कीके व्याहकी चिन्तामें लगा हुआ था; उनसे कब भेंट करता ?

सर०—तुम ज्योतिके लिये चिन्ता न करो। घनश्याम बाबू आज तुमसे मिलने आवेंगे और ज्योतिके साथ किशोरके व्याहकी बात पक्की कर जायँगे। क्यों, तुम चुप क्यों हो ? मैं जो कुछ कहती हूँ वह बिलकुल सच है। भाविनी और किशोर दोनों यहाँ आकर यही बात कह गए थे और इसके बाद मिसरानी भी आई थी।

करुणा०—अच्छी बात है—अच्छी बात है।

सर०—वे लोग तो चाहते हैं कि कल ही हल्दी चढ़ जाय। जो हो, तुम घनश्याम बाबूसे मिल कर सब ठीक कर लो।

करुणा०—मैं इसमें और क्या ठीक करूँगा ? व्याह हो जाय, अच्छी बात है। लेकिन जो व्याह होता है सो चटपट—जो व्याह होता है सो चटपट। उन दोनों लड़कियोंका भी व्याह चटपट ही हुआ था। मैंने जल्दी करके ही बलिदान दिया। एक बलि चाहिए—एक बलि चाहिए।

सर०—नहीं नहीं, तुम अशुभ बातें न करो।

करुणा०—अशुभ बात कैसी ? जिस घरकी जो कुछ प्रथा है वह हुआ करे, लेकिन बलि तो होगी ही। ज्योति स्वर्गीय बालिका है—स्वर्गीय बालिका है। देखो, जब मैं पहले लड़कियोंको देखता था तब जानती हो कि मैं क्या सोचता था ? मैं यह सोचता था कि यदि इनका जन्म किसी राजाके घरमें होता तो वहाँ इनकी शोभा होती। लेकिन जानती हो कि अब मैं क्या सोचता हूँ। अब मैं यह सोचता हूँ कि किसी डोम-चमारके घरमें इनका जन्म क्यों न हुआ। अगर किसी डोम-चमारके घरमें इनका जन्म होता तो ये मेहनत-मजदूरी

करके अपना पेट तो भर सकतीं—बेचारियोंको अन्न बिना भूखों तो न मरना पड़ता !

किरण०—बाबूजी, जो कुछ होना था वह तो हो गया, अब तुम शान्त हो। ज्योतिका ब्याह करो, ज्योति बहुत सुखसे रहेगी।

करुणा०—अच्छा अच्छा, तुम लोग जाओ—तुम लोग जाओ।

किरण०—तुम कुछ खा-पी लो।

करुणा०—जाओ जाओ, अपना काम करो। मैं खाऊँ या न खाऊँ, इससे तुम्हें क्या ? जाओ जाओ।

[किरणमयीका प्रस्थान।

करुणा०—क्यों जी, कैसी अच्छी बात है ?

सर०—देखो, जब ब्याह हो जाय तब जानूँ।

करुणा०—किशोर बहुत अच्छा लड़का है—बहुत लायक है। ज्योति बहुत सुखसे रहेगी, चलो यही बहुत अच्छा है। तुमने उन्हें वचन तो दे दिया है न ? एक बलि तो अवश्य चाहिए। ज्योतिका ब्याह करके हम लोग निश्चिन्त हो जायँगे न ? और तो कोई लड़की नहीं है। अब और वर तो नहीं ढूँढ़ना पड़ेगा न, चलो मैं भी निश्चिन्त हो गया और तुम भी निश्चिन्त हो गईं।

सर०—तुम शान्त हो और चल कर कुछ खाओ पीओ। तीसरे पहर घनश्याम बाबू तुमसे मिलने आवेंगे, सब ठीक ठाक कर डालो। हम लोगोंको और कुछ तो करना है ही नहीं। खाली लड़कीके हाथ रँग कर कन्यादान कर देना है और जो कुछ करना धरना होगा सो सब वही कर लेंगे।

करुणा०—क्यों जी, तुम भाग्यको मानती हो ? मानना ही पड़ेगा। उसे कोई बदल नहीं सकता। यहाँ तक कि बड़े बड़े राजा महाराजा भी नहीं बदल सकते। भला जो भाग्यमें लिखा है उसे कौन मिटा

सकता है! कर्म-स्रोत बरावर चला ही चलता है। कोई नहीं जानता कि वह किस तरफ जायगा। लेकिन फिर भी अन्दाजसे बहुत कुछ उसका पता लग सकता है। मैंने उसको समझ लिया है, मुझे उसका रुख मालूम हो गया है। लेकिन तुम नहीं देख सकतीं। चलो अच्छी बात है, कर दो—कर दो—ज्योतिका व्याह कर दो। आगे चल कर क्या होगा यह तो न तुम्हीं जानती हो और न मैं ही जानता हूँ। ज्योतिका व्याह करना ही पड़ेगा और कोई उपाय है नहीं। क्यों, क्या कहती हो? व्याह करना ही पड़ेगा।

सर०—तुम कुछ चिन्ता न करो। हम लोगोंके भाग्यमें जो कुछ वदा था वह पूरा हो गया। लोग कहते हैं कि बुरे दिनोंके बाद अच्छे दिन आते हैं। जान पड़ता है कि अब हम लोगोंके भी अच्छे दिन आ रहे हैं। किशोर जीता रहे और ज्योति जीती रहे। हम लोग उन दोनोंको देख कर ही सुखी होंगे।

करुणा०—हूँ—किशोर जीता रहे और ज्योति जीती रहे और हम लोग उन दोनोंको देख कर ही सुखी होंगे। हम लोगोंकी जो दशा होनी होगी सो होगी। क्यों क्या कहती हो? अच्छी बात है, हुआ करे। अब तो चिन्ताका अन्त हो गया। देखती हो? यह तमाशा देखती हो? मेरे जैसे दरिद्रके लिये भी घर चाहिए, स्त्रीके लिये खाना-कपड़ा चाहिए, लड़के-लड़कियोंके लिये खाना-कपड़ा चाहिए, सभी कुछ चाहिए—किसी चीजसे वचत नहीं हो सकती। जिस तरह हो सके सबका इन्तजाम करो। सब कुछ चाहिए ही चाहिए—सभी कुछ चाहिए। चाहे चोरी करके करो, चाहे जालसाजी करके करो, चाहे भीख माँग कर करो, चाहे नीच होकर करो, चाहे लड़का बेच कर करो, चाहे लड़की बेच कर करो, चाहे झूठ बोल कर करो, चाहे नरकमें जाकर करो, जिस तरहसे हो सके करो—अवश्य करो।

सब कुछ चाहिए ही चाहिए । सभी चीजोंकी जरूरत है । क्यों जी, ज्योति तो अच्छी तरह रहेगी न ? किशोर बहुत अच्छा लड़का है । वह तुम्हें यों ही न छोड़ देगा, किरणको भी न छोड़ सकेगा और नलिनको भी न छोड़ सकेगा । चल तो रहा ही है । आगे भी किसी-न-किसी तरह चला ही चलेगा । मैं अब चिन्ता न करूँगा । मेरी चिन्ताका तो अब अन्त हो गया ।

सर०—क्यों जी, तुम ऐसी बातें क्यों करते हो ? क्या तुम यह समझते हो कि घनश्याम बाबू ब्याह न करेंगे ?

करुणा०—मेरे मनमें तो बहुतसी बातें आती हैं। पर मेरी समझमें यह नहीं आता तुम्हारे मनमें कोई बात क्यों नहीं उठती ? किरणके ब्याहके सम्बन्धमें तुमने कितना आनन्द मनाया था, कुछ याद है ? मैं सोचता था कि घर रेहन रखना पड़ेगा । इस पर तुमने कहा था कि इसकी चिन्ता छोड़ दो । और ब्याहकी रातको तो और भी बहुतसी बातें मेरे मनमें आई थीं । हिरणके ब्याहके समय भी मैं बहुत प्रसन्न हुआ था । लेकिन ब्याहवाली रातको ही जो झमेला मचा था वह देखा था ? इसके बाद दिन पर दिन बराबर आफतें आने लगीं । जमाईकी बीमारीकी आफत, जमाईकी पहली स्त्रीके लड़कोंकी आफत, जमाईके मरनेकी आफत । पर हाँ हिरणने मर कर यह सब आफतें दूर कर दी थीं । तुम उन सब चिन्ताओंसे निश्चिन्त हो गई हो । इसी लिये अब तुम्हारे मनमें और कोई बात नहीं आती और तुम कहती हो कि ज्योतिके सम्बन्धमें प्रसन्न हो जाओ—आनन्द मनाओ । पहले ब्याहकी रात आने दो और देख लो कि क्या होता है तब आनन्द मनाओ ।

(किरणमयीका प्रवेश ।)

किरण०—मा, आओ, बाबूजीको भी लेती आओ ।

करुणा०—तुम चलो, मैं आता हूँ।

सर०—तुम जो कहते हो वह सब ठीक ही है। अच्छा चलो, जो भाग्यमें बदा है सो होगा। अभीसे उसकी चिन्ता करके क्या करोगे?

[किरणमयी और सरस्वतीका प्रस्थान।

करुणा०—ठीक ही तो है, मैं अब क्यों व्यर्थ चिन्ता करता हूँ। इसका तो सहज उपाय है—बहुत ही सहज उपाय है। चिन्ताकी तो अब कोई बात ही नहीं है। घर मिल गया, रुपया मिल गया, देना चुक गया, तब फिर अब चिन्ता काहेकी? बलिदान देना ही पड़ेगा। बिना बलिदान दिए गति है ही नहीं, एक बलि अवश्य चाहिए।

(नेपथ्यमें) सरस्वती—अजी सुनते हो, इधर आओ।

करुणा०—हाँ, आता हूँ।

[प्रस्थान।

पाँचवाँ दृश्य।

सामितिका कमरा।

सभासद बैठे हुए हैं।

(काली पण्डितका प्रवेश।)

काली०—दिन-रात सारे शहरमें मैं घूमा करता हूँ और अपने पासका रुपया खर्च करता हूँ। यही ढूँढ़ता फिरता हूँ कि कहाँ कौन लँगड़ा है, कहाँ कौन काना है, कहाँ कौन भूखा है, कहाँ कौन नंगा है। देखिए आज मैं इतने आदमियोंको लाया हूँ।

पह० सभा०—सबको यहीं ले आओ।

काली०—बहुत अच्छा।

[प्रस्थान।

(इन्सपेक्टरका प्रवेश ।)

इन्०—(नेपथ्यकी ओर देख कर) देखो न यह कम्बख्त किन किन लोगोंको पकड़ लाया है। है यह तारीफ ही करनेके काबिल आदमी। दस बरस मुझे पुलिसकी नौकरी करते हो गए, पर आज तक मैंने ऐसा पाजी देखा ही नहीं।

(आड़में छिप जाना ।)

(नकली अन्धे, लँगड़े और विधवा आदिको लिए हुए कालीका प्रवेश ।)

काली०—(अन्धेसे) धीरे धीरे चले आओ, डरो मत धीरे धीरे चले आओ। यहाँ ऊँचा-नीचा कुछ नहीं है, तुम गिरोगे नहीं। (विधवासे) चली आओ, तुम भी चली आओ घबराओ मत। यह बाबू लोग बहुत भले आदमी हैं, तुम्हारी इज्जत नहीं जायगी। (दूसरी स्त्रीसे) आओ, आओ, तुम भी चली आओ। जल्दी करो, यह सब बाबू लोग तुम्हारे लिये दिन भर बैठे थोड़े ही रहेंगे! (लँगड़ेसे) आओ भइया, चले आओ। अपनी बैसाखी टेक लो। (समितिके सभासदोंसे) बाबूजी! इस भले आदमीने अस्पतालमें जाकर आँखें बनवाई थीं, पर बनवाना भर ही हाथ रहा, कुछ फायदा न हुआ। इसे बिलकुल दिखाई नहीं देता। और यह बेचारी ब्राह्मणके घरकी स्त्री है। इसका पति तीन लड़के छोड़ कर मर गया था। इसके पास खानेको कुछ भी नहीं है। और यह बेचारा गठियाके कारण लँगड़ा हो गया है, साल भरसे खाली बैठा है, स्त्री और बच्चे भूखों मर रहे हैं। बेचारा चल फिर भी नहीं सकता जो भीख ही माँग कर काम चलावे।

(इन्सपेक्टरका प्रवेश ।)

काली०—(स्वगत) अरे यह कम्बख्त यहाँ कैसे आ गया!

इन्०—क्यों जी काली! क्या सोचते हो? यही न कि मैं यहाँ कैसे आ पहुँचा। मैंने एक मंत्र सीखा है। उसी मंत्रसे इस अन्धेको

अच्छा कर दूँगा। बाबू लोग इसी लिये मुझे यहाँ लाए हैं। (अन्धेसे) क्यों जी जीवनराम, तुम्हारी आँखें अभी अच्छी हुई या नहीं? न हुई हों तो मैं अभी अच्छी कर दूँ।

अन्धा—दोहाई सरकारकी, मैं कुछ नहीं जानता। यही काली मुझे समझा बुझा कर और अन्धा बना कर यहाँ ले आया है।

इन्०—(लँगड़ेको भागते हुए देख कर) क्यों जी, मैं देखता हूँ कि तुम्हारी गठिया तो यों ही अच्छी हो गई। भाग कर कहाँ जाओगे? यहाँ तो चारों तरफ सिपाही खड़े हुए हैं। क्यों जी काली! मेरा मंत्र देखा?

काली०—अरे सरकार यह सब बड़े पाजी निकले। मुझे क्या मालूम था कि ये सब इस तरह बने हुए हैं! दोहाई इन्सपेक्टर साहबकी! मैं इन सब लोगोंके बारेमें कुछ भी नहीं जानता।

इन्०—इस गरीब ब्राह्मणीको भी नहीं पहचानते? बोलो बोलो, चुप क्यों हो? (ब्राह्मणीसे) मुँह परसे कपड़ा हटाओ और थानेमें चलो। तुमने अपने माथेका सेंदुर क्यों पोंछ डाला? तुम्हारा काली तो अभी जीता जागता मौजूद है।

विधवा—दोहाई सरकारकी! मुझे थानेमें मत ले चलो। मैं धोबिन हूँ। यह दुष्ट मुझे जबरदस्ती अपने साथ ले आया था। कहता था कि वहाँ चल कर चुपचाप मुँह ढाँक कर बैठ जाना।

इन्०—तो अच्छी बात है। चलो, चल कर थानेमें ही इसी तरह बैठ रहना। (सभासदोंसे) क्यों साहब! आप ऐसे ऐसे दुष्टोंसे ही समितिका काम करा लेंगे? (नकली अन्धे आदिसे) चलो, सब लोग चलो।

विधवा—अरे इस दुष्टने मुझे इस तरह धोखा देकर फँसा दिया!

(कालीके सिरके वाल पकड़ कर खींचना)

काली०—अरे छोड़ छोड़ ! नहीं तो मैं मर जाऊँगा । इन्सपेक्टर साहब, आप थानेमें ले चलिए, पर इस दुष्टसे मुझे छुड़ा दीजिए ।

विधवा—अरे वापरे ! मुझे जेल जाना पड़ेगा ! बुरा हो इस दुष्टका ।

(कालीको मारना ।)

काली०—इन्सपेक्टर साहब ! इन्सपेक्टर साहब ! इस राक्षसीको पकड़िए—इस राक्षसीको पकड़िए ।

(इन्सपेक्टरके पीछे हो जाना ।)

(पशुक्लेश-निवारिणी सभाके इन्सपेक्टरका भेस वदले हुए रमानाथको लेकर जमादारका प्रवेश ।)

जमा०—सरकार ! इसने Cruelty Inspector वन कर गाड़ीवानसे पैसा लिया था, मैंने इसको पकड़ा है ।

पह० सभा०—यह कौन है ?

इन्०—आपहीकी समितिका काम पाकर सुधरे हुए लोगोंमेंसे हैं । क्यों जी रमानाथ ! क्या हाल है ?

(मंगलीका प्रवेश ।)

पह० सभा०—(स्वगत) यह यहाँ भी झमेला करेगी । लेकिन हर दफा वह कैसे छोड़ दिया जायगा । (प्रकाश्य) मंगली ! अवकी तो इन्सपेक्टर साहब न छोड़ेंगे ।

मंग०—साहब, मैं छुड़ाने आई भी नहीं हूँ । आप देखते नहीं, मैं फिर पागल हो गई हूँ । आप लोगोंने मुझे जो धोती दी थी वह मैंने फाड़ कर फेंक दी और देखिए फिर वही फटी पुरानी धोती पहन ली । मैं अवकी छोड़नेके लिये नहीं कहूँगी, नहीं तो मधुसूदन नाराज हो जायँगे ।

पह० सभा०—क्या कहा ?

मंग०—उस दिन मैंने आप लोगोंके हाथ-पाँव जोड़ कर इन्हें छुड़वा दिया था; लेकिन फिर भी यह न सुधरे। इस पर मैंने मधुसूदनसे पूछा था कि अवकी यदि यह फिर पकड़े जायँ तो मैं क्या करूँ ? इस पर मधुसूदनने कहा था कि अवकी न छोड़ाना, और अधिक पाप न करने देना, नहीं तो मरने पर उन्हें और भी कष्ट होगा। यदि सजा हो जायगी तो वहुत कुछ पाप कट जायगा, यह और अधिक पाप न करने पाएँगे। उन्होंने यह भी कहा था कि अगर तुम अपने स्वामीको और अधिक पाप करने दोगी तो तुम्हें भी पाप होगा और मैं तुमसे नाराज हो जाऊँगा।

रमा०—अरे मंगली ! मैं तेरे पैर पड़ता हूँ। कह दे कि यह मुझे छोड़ दें। मैं हाथ जोड़ता हूँ, मुझे छुड़वा दे। अवकी यदि मैं छूट जाऊँगा तो विलकुल सुधर जाऊँगा। तेरे पैर पड़ता हूँ, कह कर छुड़वा दे।

मंग०—नहीं, मैं रोऊँगी—खूब रोऊँगी, पर तुम्हें छोड़नेके लिये न कहूँगी। मैं अब तुम्हें और अधिक पाप करने न दूँगी। नहीं तो मधुसूदन तुम्हें वहुत कड़ी सजा देंगे। मैंने मधुसूदनसे कहा था कि तुम उन्हें सजा मत दो, उनके वदलेमें मुझे सजा दो। पर मधुसूदनने कहा कि "नहीं, यह नहीं हो सकता।" तुमने जो पाप किया है उसका फल तुम्हींको भोगना पड़ेगा। जव तुम्हारी सजा होगी तभी तुम्हारा पाप कटेगा। वहीं जेलमें मधुसूदनको पुकारना। वे ही आकर तुम्हारे सव पाप काटेंगे। जव तुम्हारी सजा हो जायगी तभी तुम मधुसूदनको पुकारोगे। अभी तो जव मैं मधुसूदनका नाम लेती हूँ तव तुम हँस पड़ते हो और मधुसूदनको नहीं मानते। लेकिन जव तुम्हारी सजा हो जायगी तव तुम मधुसूदनको मानने लग जाओगे। मुझे

जेलवाले तुम्हारे साथ नहीं रहने देंगे, नहीं तो मैं भी तुम्हारे साथ ही रहती ।

रमा०—अरे मंगली ! अरे मंगली ! अब मैं कभी पाप न करूँगा और मधुसूदनको बहुत अच्छी तरह माना करूँगा ।

मंग०—तुम अब भी झूठ बोलते हो—मधुसूदनका नाम लेकर झूठ बोलते हो । मैं तो तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं रोऊँगी, पर तुम्हें छोड़नेके लिये न कहूँगी । क्योंकि मधुसूदनने मुझे पहले ही मना कर दिया है । (इन्सपेक्टरसे) बाबूजी ! आप इन्हें मारिएगा मत । मैं जाती हूँ । अब मैं चल कर रोऊँगी । मैं तो तुम्हें यही अन्तिम बार देखे जाती हूँ । यही मेरी और तुम्हारी अन्तिम भेंट है । मंगली अब नहीं बचेगी—मंगली अब नहीं बचेगी ।

[प्रस्थान ।

रमा०—सरकार ! एक बार मुझे और छोड़ दीजिए ।

इन्०—ले चलो ।

पह० सभा०—क्यों साहब ! यह किसी तरह छूट नहीं सकते ?

इन्०—आपने सुना तो । मधुसूदन आपसे भी नाराज हो जायँगे ।

दू० सभा०—मैंने ऐसी विलक्षण स्त्री कभी नहीं देखी ।

सब—सचमुच बहुत अद्भुत है ।

पह० सभा०—जगदीश्वर तुम्हारा काम—तुम्हीं जानो ।

[सबका प्रस्थान ।

(रामलालके साथ किशोरका प्रवेश ।)

राम०—भाई किशोर ! इतने दिनों तक मैं यही समझता था कि तुम यों ही घूमा करते हो । आजकल सभाएँ स्थापित करना एक तरहका फैशन सा हो गया है, सो तुम भी वैसी ही सभा करते हो । लेकिन भाई, तुम मुझे क्षमा करना; आज मेरी आँखें खुल गईं । आज

मैं ससुरजीसे भी क्षमा माँग आया हूँ और साससे भी क्षमा माँग आया हूँ। अब चल कर मैं भाविनीसे क्षमा माँगूँगा। अब तुम मुझे भी अपनी समितिका सभासद बना लो। पहले मैं समझा करता था कि अपनी माके कहनेमें आकर तुम लोगोंके साथ अनुचित व्यवहार करके मातृ-भक्ति दिखला रहा हूँ। उस समय मेरी समझमें यह बात नहीं आती थी कि मैं अधर्म कर रहा हूँ। अब तुम मुझे पहले यह बतलाओ कि क्या तुमने मुझे क्षमा किया ?

किशोर—अजी वाह ! यह भी कोई बात है !

राम०—अच्छा भाई, पहले मुझे अपनी समितिका सभासद बनाओ। मैं अब तुम्हारे घर चलता हूँ। वहाँ निमंत्रणमें सब लोग आवेंगे। मैं उन लोगोंका आदर-सत्कार करूँगा। तुम रिपोर्ट लिख कर चले आना। आज भी तुमसे काम न छोड़ा गया।

किशोर—रिपोर्ट लिखना बहुत आवश्यक था। मैंने सोचा था कि फिर तो दो दिन तक घरसे बाहर निकल ही न सकूँगा—इस लिये इसे आज ही निपटा दूँ।

राम०—अच्छा तो मैं अब जाता हूँ, तुम रिपोर्ट लिख कर जल्दी आ जाना।

[प्रस्थान।

(कागज, कलम और दवात लेकर नौकरका प्रवेश।)

नौकर—बाबूजी, एक आदमी आपसे भेंट करना चाहता है। मैंने उससे पूछा पर वह कुछ बतलाता ही नहीं।

किशोर—बुला लाओ।

[नौकरका प्रस्थान।

किशोर—कोई बेचारा दरिद्र होगा ! इस देशमें दरिद्रोंकी कोई कमी तो है ही नहीं।

(मोहितमोहनका प्रवेश ।)

किशोर—तुम कौन हो ?

मोहित०—आप मुझे पहचानते हैं ? मेरा नाम मोहितमोहन है। मैं वही करुणामय बाबूका बड़ा दामाद हूँ, जिसका परिचय आपको उस दिन सड़क पर मिला था ।

किशोर—कौन—मोहित बाबू ? आपकी यह दशा कैसे हो गई ?

मोहित०—भला मेरे जैसे लोगोंकी और कैसी दशा हुआ करती है । जान पड़ता है कि आप उस दिनकी सड़क पर वाली बात भूल गए। इसी लिये आप पूछते हैं कि तुम्हारी यह दशा कैसे हो गई। आप कृपा कर पहले मेरा सारा हाल सुन लीजिए । मैं आपको यह बतलानेके लिये आया हूँ कि एक अकर्मण्य मनुष्यके जीवनमें क्या क्या घटनाएँ होती हैं ।

किशोर—जाने दीजिए—उन सब बातोंको जाने दीजिए। मालूम होता है कि आपने भोजन नहीं किया है। चलिए स्नान करके भोजन कीजिए, तब फिर मैं आपकी सब बातें सुनूँगा ।

मोहित०—नहीं किशोर बाबू ! आप मेरी बात न काटिए । मुझे अपने जीकी जलन निकालने दीजिए । सम्भव है कि आपको सब हाल सुनानेसे मुझे कुछ शान्ति मिले । सुनिए—इन्ट्रेन्स पास करने पर मैंने सोचा कि मैं बड़ा भाग्यवान हूँ। मेरी मा भी यही कहा करती थीं । कई जगहोंसे व्याहकी बातचीत आने लगी। मैं अपने मन ही मनमें सोचा करता था कि यदि किसी बहुत ही सुन्दरी, रसिका, पढ़ी-लिखी और अतुल सम्पत्तिकी अधिकारिणी भाग्यवतीसे मेरा विवाह हो जाय तो मैं अपने आपको धन्य समझूँ। करुणामय बाबूकी कन्याके साथ मेरा विवाह हो गया, पर वह स्त्री मुझे बहुत

ही ना-पसन्द हुई। मैंने सोचा कि मैं घर-गृहस्थी सब कुछ छोड़ दूँगा। माने ही मेरी यह इच्छा पूरी कर दी।

किशोर—माने यह इच्छा कैसे पूरी की ?

मोहित०—उसके मारनेसे मेरी स्त्री बेहोश होकर गिर पड़ी थी। इसी पर ससुरजी आकर उसे अपने घर ले गए। माने सोचा कि चलो मैं अपने लायक लड़केका दूसरा व्याह कर लूँगी। लेकिन मुझे तो गृहस्थीकी झंझट पसन्द ही न थी। इस लिये दूसरा व्याह न हो सका।

किशोर—आपने पढ़ना लिखना क्यों छोड़ दिया ?

मोहित०—मैं तो प्रतिभावान न था। आपकी तरह कुछ मूर्ख तो था ही नहीं। मैंने सोचा कि विलायत जाऊँगा, यह करूँगा वह करूँगा। बस चलिए कालेज अच्छा हो गया।

किशोर०—कालेज अछा हो गयाका क्या अर्थ ?

मोहित०—मेरे निर्दोष शरीरमें कालेज जाना आना एक रोग न था वही रोग अच्छा हो गया। कालेजमें छुट्टी पा गया। रमानाथ दूरके रिश्तेमें मेरी माके भाई होते थे। वे भी अपना सर्वस्व खोकर हम ही लोगोंमें आ मिले थे। बस मामा साहबने मुझे लाल बाबूके बगीचेमें ले जाना आरम्भ कर दिया। उस जगह मेरे मुकाबलेकी सब गुन भरी नैतरा सोंठ बीबी मोती जानके साथ मेरी बातचीत हो गई।

किशोर—वह तो वेश्या थी। आपका खर्च कैसे चलता था ?

मोहित०—ससुरजीने ज़ो कुछ थोड़ा बहुत दिया था प्रायः वह सबका सब माका देना चुकानेमें ही निकल गया था। जान पड़ता है कि मा बहुत दिनोंसे उधार ले-ले कर ही गृहस्थीका काम चलाती थीं। अपने भाग्यवान् लड़केके लिये बढ़िया कमीज, एसेन्स और साबुन आदिका ही प्रबन्ध करते करते वे देनदार हो गई थीं।

तो भी देना चुकानेसे जो कुछ थोड़ा-बहुत बच गया था। वह सब मैंने हथिया लिया । जब वह खर्च हो गया तब फिर मोती जानके लिये खर्चकी जरूरत पड़ी । तब मैंने मामाजीकी सलाहसे जालसाजी करके रूपचन्द मित्रके यहाँ अपना मकान बन्धक रखा ।

किशोर—हाँ यह सब तो मैं सुन चुका हूँ ।

मोहित०—हाँ अवश्य सुना होगा। इन्सपेक्टर साहबने मेरी स्त्री पर दया करके किसी प्रकार मुझे छोड़ दिया। लेकिन इसका कुछ बदला चुकाना भी तो मुझे उचित था—अपनी स्त्रीका ऋण कैसे रखता ! उसका वही ऋण चुकानेका प्रयत्न मैंने उस दिन सड़क पर किया था।

किशोर—अब उन सब बातोंको जाने दीजिए ।

मोहित०—नहीं नहीं, मैं थोड़ेमें कहता हूँ आप सुन लीजिए । मैंने मोती जानके गहने चुराए थे, जिससे मुझे सजा हो गई । जनम भरमें मैंने कभी मेहनत तो की ही नहीं थी, इस लिये जेलमें मैं बहुत बीमार हो गया । जेलके डाक्टर साहब मुझे बहुत कुछ समझाते बुझाते और ढारस दिया करते थे । उन्हींकी जबानी मुझे यह भी मालूम हुआ था कि वे आपके दूरके कोई रिश्तेदार हैं । मेरी स्त्रीके कारण वे मुझ पर बहुत कुछ दया भी किया करते थे और मेरी स्त्रीके गुणोंकी भी बहुत सी बातें सुना करते थे। क्या आप यह समझते हैं कि उनके इस व्यवहारसे मैं कुछ सुधर गया था ?—नहीं, बिलकुल नहीं । जेलसे निकलते ही मैंने पहले यह सोचा कि किसी प्रकार अपनी स्त्रीसे भेंट करनी चाहिए और यदि हो सके तो उसको फँसा कर कुछ रुपया वसूल करना चाहिए ।

किशोर—आप जेलसे छूट कर अपने घर नहीं गए ?

मोहित०—मेरा घर था ही कहाँ ? मेरा हिस्सा तो बाबू रूपचन्दने ले लिया था और बाकी आधा हिस्सा माके देनेमें बिक गया था।

और फिर जेल जानेसे पहले ही मा मुझे अपने घरमें नहीं घुसने दिया करती थी; क्योंकि पहले पहल तो मैंने अपनी माकी ही चीजें चुरा कर चोरी करना सीखा था न।

किशोर—तब फिर क्या हुआ?

मोहित०—मैंने अपनी स्त्रीसे भेंट की। पगली मंगलीने मुझे उससे मिला दिया था। मैंने देखा कि उसके पास कोई ऐसी चीज नहीं है जो चुराई जा सके। पर फिर भी वह आप तो उपवास करती थी और मुझे आकर खिला जाती थी। जो कुछ वह लाती थी वही खाकर मैं इधर उधर घूमा करता था। दो महीनेकी बात है कि एक दिन मेरी स्त्री खानेको लेकर मेरे पास आई; लेकिन आते ही आप बेहोश होकर गिर पड़ी। मंगलीसे मुझे मालूम हुआ कि वह आप नहीं खाती है और अपना हिस्सा लाकर मुझे खिला जाती है। उस दिनसे पहले मैंने कभी अपनी स्त्रीको अच्छी तरह देखा भी न था। जिस दिन वह बेहोश हो कर मेरे सामने गिर पड़ी उसी दिन मैंने पहले पहल उसे अच्छी तरह देखा। वह मुझसे रोज कहा करती थी कि तुम जाकर किशोर बाबूसे भेंट करो, लेकिन मैं कोई जोरू-भगत तो था ही नहीं जो उसका उपदेश सुनता। लेकिन इतना अवश्य था कि उस दिनसे मेरे विचारोंमें कुछ परिवर्त्तन हो गया था। उस दिनके बाद मैं फिर कभी अपनी स्त्रीके मुँहका कौर छीन कर खाने न गया। मैं दक्षिणेश्वरके सदाव्रतमें भोजन किया करता था। रोज तो मुझे वहाँ भोजन मिलता ही न था और मैं किसीके आगे हाथ पसार कर भीख माँग नहीं सकता था। पंचवटीमें पड़ा रहा करता था। वहीं पड़े पड़े बहुत तरहकी बातें मेरे मनमें उठा करती थीं। अन्तमें मेरे मनमें यही आया कि चल कर आपसे भेंट करूँ। इसी लिये आज मैं यहाँ आया हूँ।

किशोर—बहुत अच्छी बात है, आप सुधर जायँ । मैं आपको कोई कामधंधा करा दूँगा । अब आप चलिए और स्नान करके कुछ भोजन कीजिए ।

मोहित०—किशोर बाबू ! आप मुझे इसी समय काम दीजिए और ऐसा काम दीजिए जो मेरे लिये उपयुक्त हो । मैं समितिमें झाड़ू दूँगा । यदि आपके चरणोंकी धूल मेरे शरीरमें लगेगी तो सम्भव है कि मेरी मति फिर जाय । अब तक अपने आपमें मेरा विश्वास नहीं है । मैं यह देखना चाहता हूँ कि अभी तक मेरा अभिमान गया है या नहीं । मैं मेहनत-मजदूरीका अन्न खा सकता हूँ या नहीं और सचमुच सुधर सकता हूँ या नहीं ।

किशोर—आइए आइए; आप अनुताप न कीजिए । मैं आपका छोटा भाई हूँ । आपकी छोटी सालीके साथ मेरा सम्बन्ध स्थिर हुआ है और कल ही विवाह होनेको है । आप मेरी प्रार्थना मानिए और व्यर्थ कुण्ठित न होइए । मैं आपका छोटा भाई हूँ, मुझ पर आपका पूरा पूरा अधिकार है ।

मोहित०—चलिए । न जाने क्यों आपके साथ बातचीत करके मुझे बहुत आनन्द होता है ।

[दोनोंका प्रस्थान ।

छठा दृश्य ।

रूपचन्द मित्रके मकानका भीतरी भाग ।

रूपचन्द, यशोमती और पार्वती मिसरानी ।

यशो०—पार्वती ! आखिर तुम यह क्या कह रही हो ? हमारे भाग्य बड़े ही अच्छे थे जो उस दिन तिलक करके लड़केको हल्दी नहीं चढ़ा दी गई । मुझे क्या मालूम था कि वह इतना बड़ा जालिया है ।

पा०—मैं तो उसके घरके रास्ते नहीं जाती। उसकी घरवालीने दोनों लड़कियोंके व्याहमें मुझे कई बार बुलवा भेजा था; लेकिन मैंने कहा कि—"ना भाई, तुम्हारी बातका कोई ठीक नहीं है। मैं इसमें नहीं पड़ सकती।"

रूप०—क्यों पार्वती, तुम्हें पक्की खबर मिली है?

पा०—वाह बाबूजी! तुम भी कैसी बातें करते हो! अभी वर सज-बज कर निकला है। तुम अपने आदमीको भेज कर खबर मँगालो न। खूब धूम मची हुई है, उनके घरमें जगह नहीं थी। इस लिये बाहर मैदानमें बाड़ा घेर कर मण्डप बनाया गया है। खूब रोशनी हो रही है। मेरी बात न मानो तो किसी आदमीको भेज कर दिखलवा लो।

रूप०—ठीक है। तभी वह उस दिन पागलकी नकल साध कर आया था। मैं अभी उसका सारा पागलपन निकाल देता हूँ। मेरा भी नाम है रूपचन्द मित्र। अरे मोहन!

(नेपथ्यमें) मोहन—जी सरकार!

रूप०—कह दो कि जल्दी मेरी गाड़ी जोत कर तैयार करे। मैं पहले वकीलको वहाँ लेजा कर देखता हूँ न कि मियाँकी दौड़ कहाँ तक है। अरे मैं उससे चक्की पिसवाऊँगा—चक्की। रूपचन्द मित्रके रूपचन्द हजम करना कुछ हँसी ठट्ठा नहीं है। मैं तो समझता था कि वह अपनी बातका पक्का आदमी है।

पा०—हाँ—क्यों नहीं बातका पक्का आदमी है! मैंने सात जगह उसकी लड़कीके व्याहकी बातचीत पक्की की। पर कहीं उसने व्याह न किया। जब तुमने उससे बातचीत की थी तब अगर मुझे मालूम होता तो मैं तुम्हें इस काममें हाथ ही न डालने देती।

यशो०—अरे हैं! वह इतना नीच है! मेरा लाल खुशी खुशी फूला फिरता है। जब वह बेचारा यह हाल सुनेगा तो छाती पीट लेगा। अजी इनका सब काम ऐसा ही कच्चा हुआ करता है। समझीं पार्वती? इनके सब काम ऐसे ही होते हैं। मैंने पहले ही कहा था कि सब बातचीत पक्की कर लो, पर यह किसीकी कुछ सुनते हैं।

रूप०—अजी तुम इतनी फिकर क्यों करती हो? मैं अभी चल कर उससे सब कुछ अच्छी तरह समझ लेता हूँ। देखता हूँ न कि वह कैसे अपनी लड़कीका व्याह करता है। मैं आज रातको ही बच्चा-जीके हाथोंमें हथकड़ी भरवा दूँगा। अगर इसमें दस हजार रुपए भी खर्च हो जायँ तो कुछ परवा नहीं।

यशो०—तुम लालको अपने साथ लिए जाओ और वहाँ जाकर जबरदस्ती व्याह कर लाओ। अगर यह व्याह न हुआ तो मेरा लाल घरमें ही न रहेगा। तुम लड़कीके बापको जेल भेजवाओ, लड़कीको घसीट कर यहाँ ले आओ और लालके साथ उसका जबर-दस्ती व्याह कर दो।

रूप०—देखो तो सही, मैं क्या करता हूँ!

(मोहनका प्रवेश।)

मोहन—सरकार! गाड़ी तैयार है।

रूप०—जरा देखो तो लाल बाबू कहाँ हैं? मैं चलता हूँ, तुम उन्हें लेकर करुणामयके मकान पर आ जाओ।

[दोनोंका प्रस्थान।

यशो०—देखा पार्वती—देखा पार्वती! मैं अपने लालको वर बना कर और सजा-बजा कर भी न भेज सकी। सारे अनर्थोंकी जड़ बस यही हैं।

पा०—क्या करोगी! आजकलका जमाना ही ऐसा है।

यशो०—जरा तुम भी चली जाओ और जरा जाकर देखो कि यह वहाँ क्या करते हैं? वहाँका सारा हाल आकर मुझसे कह जाना। यह कहनेको तो मरद हैं, पर औरतोंसे भी गए बीते हैं। इनमें कुछ दम ही नहीं है। अगर यह आज बहूको लेकर घर न आए तो मैं भी इनसे अच्छी तरह समझ लूँगी। मैं भी कुछ ऐसे वैसे बापकी बेटी नहीं हूँ। मैं जब तक चुप रहूँ तभी तक भली आदमी हूँ और अगर बिगड़ जाऊँ तो फिर किसीकी नहीं हूँ। तुम जाओ—जल्दी जाओ।

[प्रस्थान।

पा०—चलो यह ब्याह तो तोड़ दिया। उन्होंने जबसे मुझे छाँटा देकर अपनी दोनों लड़कियोंका ब्याह किया तबसे मैं अपने मनका क्रोध मनहीमें दबाए हुए थी। यदि इस लड़कीका यह ब्याह हल्दी चढ़ जानेके बाद भी छूट जाय और दूसरी जगह फिरसे ब्याह हो तब जाकर मेरा कलेजा ठण्ढा हो।

[प्रस्थान।

सातवाँ दृश्य।

रास्ता।

मंगली।

(लालचन्दका प्रवेश।)

लाल०—बापरे बाप! मैं भी क्या बेढब और बे-मौके लँगड़ा हुआ हूँ। भला इन बेचारी डेढ़ टाँगोंसे इतने बड़े कूबड़का बोझ कैसे सँभाला जाय! अच्छा चलो बेटा लँगड़दीन, बड़ी जल्दी है। जरा तुम्हीं घसीटते चलो। मुझसे तो इतनी देर भी न सही गई कि भला गाड़ी तो जुत कर तैयार हो जाती।

मंग०—मैं तुम्हारे ही आसरे खड़ी हूँ ।

लाल०—बहुत अच्छे ! तुम मेरा यही बेहंगम चेहरा देखनेके लिए इतनी देरसे खड़ी हो ? तसलीम !

मंग०—मैंने तुम्हारी आँखें देख कर ही पहचान लिया है कि तुम पर प्रेमका रंग चढ़ा है, तुम दरदी हुए हो, लेकिन देखो अब फिर बे-दरदी न हो जाना । यदि तुमने यह समझ लिया हो कि प्रेमकी ज्वाला कैसी होती है तब तुम किसी अबलाको न जलाना । यह ज्वाला बहुत तेज होती है । समझ गए न ? जानते हो इस ज्वालाको शान्त करनेका क्या उपाय है ? इसका उपाय है अपने आपको नहींके बराबर कर देना । और पराएके सुखसे सुखी होना । इसके अतिरिक्त और कोई ऐसा उपाय नहीं है जो इस ज्वालाको शान्त कर सके । तुम उसीका प्रेम करो और उसीका दरद करो ।

लाल०—वाह ! इस पगलीने तो मुझे खूब आड़े हाथों लिया ! भई, ज्वाला तो अवश्य है और बहुत अधिक है; लेकिन मैं देखता हूँ कि अगर आदमी अपना दरद करे तो वह दरदी नहीं हो सकता । लेकिन जिसका जो स्वभाव होता है वह मरनेसे पहले नहीं छूटता । तुमने बात तो बहुत बढ़िया कही, लेकिन यह तो बतलाओ कि यह किसीके किए हो भी सकती है ? तुमने भी कभी ऐसा किया है या यों ही कहींसे उड़नछू करके बातें बघारती हो ?

मंग०—तुम तो आप ही समझ गए हो । क्या बिना ठोकर खाए ही कोई यह बात सीख सकता है ? क्या बिना ठोकर खाए ही मैं पागल हुई हूँ ? क्या बिना ठोकर खाए ही मैंने अपना आप नष्ट कर दिया है ? क्या बिना ठोकर खाए ही मैंने तुम्हें पहचाना है ? बिना ठोकर खाए ही मैं दरदी हुई हूँ ? बिना ठोकर खाए ही मैंने तुम्हारा दरद जाना है ? मैंने ठोकर खाकर सीखा है, इसी लिये मैं तुम्हारे

आसरे खड़ी थी। नहीं तो मेरा काम तो कभीका पूरा हो चुका है। सुनो सुनो, प्राण देकर प्राण मोल लो, शरीर मत मोल लो। प्राण मिलनेसे ही प्राणकी शान्ति होती है, शरीर मिलनेसे नहीं होती। तुम दरदी हो, दूसरेका दरद समझना और प्राण देकर प्राण पानेकी इच्छा करना। यदि तुम सुख चाहते हो तो दूसरोंको भी सुखी करो। नहीं तो दूनी ज्वाला बढ़ेगी। जो दरदी होता है वह दरद चाहता है। प्राण देकर प्राण चाहता है। उसके लेखे मिट्टीका यह शरीर कोई चीज नहीं है।

लाल०—अच्छा भाई, ऐसा ही सही। लेकिन इस समय मुझे बहुत जल्दी है। तुमने मुझे जो कुछ सबक पढाया है उसे मैं बराबर रटता हुआ जाऊँगा। लेकिन मेरा दिमाग ठीक नहीं है। इस लिये मैं कह नहीं सकता कि मैं इसे भूल जाऊँगा या याद रख सकूँगा।

मंग०—जब तुमने यह सबक एक बार सुन लिया है और तुम दरदी हो गए हो तब तुम इसे नहीं भूल सकते। यह सबक न तो आज तक किसीको भूला है और न किसीको भूल सकता है। जानते हो यह भूलनेकी चीज ही नहीं। हाँ मरने पर भूल सकता है या नहीं यह मैं नहीं जानती।

[मंगलीका प्रस्थान।

लाल०—इस पगलीने तो मुझे खूब आड़े हाथों लिया। लेकिन इतना जरूर है कि यह दरदी पगली दरद जानती है, नहीं तो यह कैसे समझ लेती कि मुझ बे-दरदीके मनमें भी दरद आया है।

[प्रस्थान।

(मंगलीका पुनः प्रवेश।)

मंग०—अब कौनसा काम बाकी है? नहीं, कोई नहीं। घूमना पूरा हो चुका, भीख माँगना पूरा हो चुका और आँखोंका पानी भी

सूख गया । अब मंगली न तो किसीके लिए रोएगी, न इधर उधर घूमेगी और न किसीके लिये मारी मारी फिरेगी ।

गीत—

दर्शन दीजै हे मधुसूदन ! जगमें काम हुआ जब मेरा ।
(मैं नारी जब किससे रोऊँ गहूँ चरण प्रभु तेरा ॥
दिन बीते पै गुँथा हृदयमें मालाका सा फेरा ।
अब तो अन्तिम काल प्रभो ! अपनाओ होय सवेरा ॥

[प्रस्थान ।

आठवाँ दृश्य ।

करुणामयके मकानकी बैठक ।

वरके वेशमें किशोर, घनश्याम, करुणामय, बराती और घराती आदि ।

(रामलालका प्रवेश ।)

राम०—बाबूजी ! लग्नमें तो अभी कुछ देर है । तब तक सब लोगोंको खिला-पिला दिया जाय । इसी एक कामसे निश्चिन्त हो जायँ ।

घन०—हाँ हाँ । लेकिन क्या सब लोगोंको एक साथ ही बैठाओगे ?

राम०—जी हाँ, कोई हर्ज नहीं है । हम लोग बहुतसे आदमी हैं । सब लोग मिल कर एक साथ ही इन्तजाम कर लेंगे । कई आदमियोंका काम तो अकेले मोहित बाबू ही कर रहे हैं । बड़े विलक्षण और परिश्रमी आदमी है ।

घन०—(करुणामयसे) क्यों महाशय ! आप खिन्न क्यों हो रहे हैं ? आजके दिन ऐसी वैसी बातोंकी चिन्ता मत कीजिएगा ।

करुणा०—नहीं नहीं मैं खिन्न क्यों होने लगा ।

(वकीलके साथ रूपचन्दका प्रवेश।)

रूप०—वाह खिन्न न होंगे तो और क्या करेंगे ? कहिए आप मुझे पहचानते तो हैं न ? मैं रूपचन्द मित्र हूँ। मैंने आपका घर आपको लौटा दिया है। आपका देना चुका दिया है और पाँच हजार रुपए नगद दिए हैं। क्या यह भी कभी हो सकता है कि आप वह सब हजम कर जायँगे ? और मेरे लड़केके साथ अपनी लड़कीका ब्याह न करेंगे ?

वकील—महाशय ! यह तो आपने बड़े ही अन्यायका काम किया है। इससे तो आप Cheating के मुकद्दमेमें फँस जायँगे। अच्छी तरह सोच समझ लीजिए; क्योंकि अभी तक कन्यादान नहीं हुआ है। बाबू रूपचन्दके लड़केके साथ ब्याह कर दीजिए, नहीं तो फिर कहीं ऐसा न हो कि आपको जेल जाना पड़े।

रूप०—वाह साहब ! आप बड़े ही भले आदमी दिखाई देते हैं ! आपकी बातका कुछ ठीक-ठिकाना ही नहीं है। मैंने सुना है कि मँझली लड़कीके ब्याहके समय आपने खूब हाथ चमका कर कहा था कि मैं लालचन्दके साथ अपनी लड़कीका ब्याह ही न करूँगा। रुपएकी आपने कोई परवा ही न की थी। कहा था कि मैं बात हार चुका हूँ, अब चाहे सर्वनाश हो जाय, सारा परिवार मर जाय—यह सब स्वीकार है, पर लालके साथ लड़कीका ब्याह करना स्वीकार नहीं है। अब आपकी वह बात कहाँ गई ? आपको याद है कि आप मुझसे बात हार चुके हैं ? आप अपनी वाग्दत्ता कन्याका दूसरेके साथ ब्याह कर रहे हैं ? आपको धर्मका कुछ ज्ञान नहीं है ? शास्त्रका कुछ ज्ञान नहीं है ? जानते हैं कि यदि दूसरे पात्रसे आपकी कन्याका ब्याह हो जायगा तो वह द्विचारिणी हो जायगी ? खैर ! आपकी लड़की जो चाहे सो हो, पर पहले मुझे यह बतलाइए कि

अब आपका क्या इरादा है ? जरा मुँहसे कुछ बोलिए तो सही, और क्यों घनश्याम बाबू ! आप एक वाग्दत्ता कन्याके साथ अपने लड़केका व्याह करने आए हैं ? छिः ! ऐसा काम कभी मत कीजिएगा ।

घन०—(करुणामयसे) आप कोई चिन्ता न करें । मैं इनसे समझ लेता हूँ । (रूपचन्दसे) क्यों साहब ! आप वाग्दत्ता किसे कहते हैं ? तिलक तो चढ़ा ही नहीं, लड़की वाग्दत्ता कैसे हो गई ?

वकील०—Contract हुआ है ।

घन०—विजातीय कानूनके अनुसार जो Contract हो उससे कन्या वाग्दत्ता नहीं हो सकती । बाबू रूपचन्द ! आपके कितने रुपए चाहिए ? मैं अभी सूद समेत सब रुपए देनेके लिये तैयार हूँ ।

वकील०—Contract के अनुसार वे विवाह करनेके लिये बाध्य हैं । अगर हम लोग अपना रुपया न लेना चाहें तो ?

घन०—तो अच्छी बात है, आप अदालत कीजिए । इस समय मुझे केवल यही बतला दीजिए कि आप रुपये लेनेके लिये तैयार हैं या नहीं ? मैं अभी सूद समेत सब रुपए देता हूँ । बतलाइए आपके कितने रुपए बाकी हैं ? (करुणामयसे) महाशय ! अब आप अन्दर जाइए, मैं इनसे निपट लेता हूँ, आप कुछ चिन्ता न कीजिए । जाइए, अब आप यहाँ खड़े मत रहिए । हाँ, अब आप बतलाइए कि आपके कितने रुपए हैं ? केवल मेरे घर तक आदमीके जाने और आनेकी देर है, मैं अभी रुपए गिन देता हूँ ।

[करुणामयका प्रस्थान ।

रूप०—जाइए मत, जाइए मत । आपको इतनी लज्जा किस बातकी है ? जब जूआ-चोरी करने गए थे तब लज्जा नहीं आई थी ? वाग्दत्ता कन्याका दूसरेके साथ व्याह करते लज्जा नहीं आती ?

वाह ! यह आपने बहुत अच्छा रोजगार सीखा है—एक ही माल दो गाहकोंके हाथ बेचना आप खूब जानते हैं।

घन०—महाशय आप क्यों यह सब व्यर्थकी बातें करते हैं ? जाइए। आपको जो कुछ करना हो सो कीजिए।

रूप०—मुझे जो कुछ करना है वह तो मैं करूँगा ही, कुछ छोड़ तो दूँगा नहीं। लेकिन आपसे तो मेरी कोई बातचीत है नहीं। (नेपथ्यकी ओर देख कर) ओ करुणामय बाबू ! सुनिए सुनिए, दो पैसे लिए जाइए, जाकर एक गगरी खरीद लाइए और उसी तालावमें जाकर डूब मरिए। आपकी मँझली लड़की तो रास्ता दिखला ही गई है। जाइए, जाइए गगरी ले आइए। लड़की बेच कर खाइए, संसारमें किसीको मुँह मत दिखलाइएगा।

घन०—महाशय ! आप इतना बढ़-बढ़ कर बातें क्यों करते हैं ? आपने रुपया दिया है, अपना रुपया ले लीजिए। इन सब बातोंसे मतलब ? अब आप जाइए। आपको यहाँ आनेके लिये किसीने निमंत्रण नहीं दिया है।

रूप०—मैं देखता हूँ कि आपके पास रुपया बहुत बढ़ गया है। अच्छी बात है, मेरा रुपया अगर जाय तो जाय कोई परवाह नहीं, पर मैं भी उन्हें जेलमें भेज कर ही छोड़ूँगा।

(लालचन्दका प्रवेश।)

लाल०—बाबूजी बाबूजी ! आप व्यर्थका झगड़ा फसाद मत कीजिए। मैं अपना ब्याह नहीं करना चाहता।

रूप०—तुम आगए—आओ।

लाल०—मैं आया तो हूँ, पर ब्याह करनेके लिये नहीं आया। बाबूजी, अब मुझे समझ आ गई है। किशोर बाबू ! मैं बहुत ही

प्रसन्न हूँ, आप व्याह कीजिए। वाबूजी! अब मैंने प्रेम करना आरम्भ किया है। मैं तो तुमसे पहले ही कह चुका हूँ, कि जबसे मैंने करुणामय बाबूकी लड़कीको देखा है तबसे मुझे न जाने क्या हो गया है। तुम देखते तो हो कि न मैं घरसे बाहर निकलता हूँ, न यार दोस्तोंसे मिलता हूँ और न बगीचे जाता हूँ। बाबूजी! तुम मजेमें किशोर बाबूके साथ व्याह कराके घर लौट चलो।

रूप०—अच्छा चुप रहो—चुप रहो। सभी जगह बेवकूफीकी बातें मत किया करो। करुणामय बाबू—करुणामय बाबू! जरा आकर सुन जाइए। अपनी जबानसे कह जाइए कि व्याह करेंगे या नहीं और नहीं तो फिर कानून तो है ही, मैं समझ लूँगा।

लाल०—बाबूजी! भला इसमें कानून क्या करेगा? जब मैं व्याह ही नहीं करना चाहता तब आपका कानून क्या करेगा। बाबूजी! जरा किशोर बाबूकी शकल देखो और अपने लड़केकी यह बेहंगम शकल देखो। यदि तुम करुणामय बाबूकी लड़कीको देख लेते तो यह व्यर्थकी किच किच न करते और उस पद्मिनी कन्याको घोड़मुँहे लँगड़ेके गले बाँधनेकी इच्छा न करते।

एक आदमी—क्यों महाशय! अब आपका कुछ दावा तो नहीं है न? क्योंकि अब तो आपका लड़का ही व्याह नहीं करना चाहता।

लाल०—हाँ साहब! आप सब लोग कान खोल कर सुन लीजिए। मैं व्याह नहीं करना चाहता। बाबूजी! जरा अपने मनमें यह तो समझो कि अगर तुम्हारे इस बेहंगम लड़केके घर दो तीन लड़कियाँ हो जायँगी तो उन लड़कियोंका व्याह करते करते तो हमारे धनका कहीं पता भी न रह जायगा। अगर किसी लड़कीको मेरा चौथाई भी कूबड़ हुआ तो उसीका व्याह करनेमें तुम्हारा पता न लगेगा। करुणामयकी लड़कीसे यदि तुम मेरा व्याह करोगे तो तुम्हारे घरमें

लँगड़ों और कुबड़ोंकी फ़ौज खड़ी हो जायगी। इस लिये मजेमें चुप-चाप व्याह देख कर घर चलो। किशोर बाबूका व्याह देख कर ही मेरा कलेजा ठंढा हो जायगा।

रूप०—मैंने भी क्या बेहंगम लड़का पैदा किया था। वकील-साहब! क्या मेरा सब रुपया मिट्टीमें मिल जायगा? घनश्याम बाबू! मैंने इनका मकान छोड़ दिया है, सात हजार रुपएका देना चुकाया है और पाँच हजार रुपए नगद दिए हैं।

घन०—कोई चिन्ता नहीं, आप सूद जोड़ कर बतलाइए कि कुल मिला कर कितने रुपए होते हैं? मैं सब अभी देता हूँ।

लाल०—बाबूजी! यह सब चमारियापन छोड़ो। तुमने बहुतसे लोगोंको फाँसी दी है। तुम्हारा कुबड़ा लड़का सुख न भोग सकेगा। तुम यह सब रुपया छोड़ दो। इसमें तुम्हारी खूब बड़ाई होगी। जानते हो? तुम्हारे इस रूप-गुण-सम्पन्न लड़केके साथ जो अपनी लड़कीका व्याह करेगा वह अपने गलेमें फाँसी लगावेगा। किशोर बाबू! मेरी एक प्रार्थना है, वह तुम्हें स्वीकार करनी पड़ेगी। यह करधनी, यह दोनों झुमके और यह दोनों बाजूबन्द आप अपने हाथसे अपनी स्त्रीको पहना कर एक बार उसके साथ खड़े होइए और मैं आप दोनोंको देख लूँ। किशोर बाबू आपकी स्त्रीके साथ प्रेम करके मैंने संसारको एक दूसरी ही दृष्टिसे देखा है। अब मेरे मनमें कोई दूसरा भाव नहीं रह गया। अब मैं ज्योतिको अपनी बहनके समान समझता हूँ। बाबूजी! यह थोड़ेसे रुपए छोड़ कर अपना नाम कर लो। किशोर बाबू! आप मेरी बात मानिएगा न?

किशोर—हाँ भाई, मानूँगा। मुझे पहले नहीं मालूम था कि तुम इतने बड़े महात्मा हो।

लाल०—अरे पगली—ओ पगली ! आ, देख जा । तूने मुझे जो कुछ पढ़ाया था वह मैं भूल नहीं गया । अब मेरे अन्दर ज्वाला नहीं रह गई, अब मेरे प्राण शीतल हो गए हैं ।

रूप०—क्या लड़का पैदा हुआ था ! इसकी माने जनमते ही इसे अफीम देकर क्यों न मार डाला !

वकील—छिः ! कैसा बढ़िया केस हाथसे निकल गया ! nice point of law discuss होता ।

लाल०—बोस बाबू ! बोस बाबू ! आप डरिए मत, बाहर आइए ।

घन०—(सरकारसे) सरकार बाबू ! कल वकीलके घर जाकर उनका हिसाब करके सब रुपया दे आइएगा ।

(रामलालका पुनः प्रवेश ।)

राम०—बाबूजी ! अब कन्यादानका समय हो गया । अब वरको मंडपमें ले चलिए ।

घन०—अच्छा भाई, अच्छा, (पुरोहितसे) पुरोहितजी ! अब देर क्यों करते हैं ? चलिए, ले चलिए ।

[सबका प्रस्थान ।

नवाँ दृश्य ।

गोशाला ।

करुणामय ।

करुणा०—यहाँ अभी तक गौओंके पैरोंके चिह्न बने हुए हैं । यह स्थान भी गंगातटके समान पवित्र है । मैंने बड़े उत्साहसे गौओंके रखनेके लिये यह स्थान बनवाया था । सोचा था कि गऊका दूध

पिला कर कन्याओंका प्रतिपालन करूँगा, लेकिन लक्ष्मी जिस घ
त्याग करके चली गई हो उस घरमें गौ-रत्न कैसे रह सकता है! ...
कौन? हाँ ठीक, तुमने जो कहा था वह ठीक है, यह स्थान अवश्य
निर्जन है। तुम इतने दिनों तक कहाँ थीं? तुम सचमुच विपत्तिमें काम
आनेवाली हो, लेकिन इतने दिनों तक दिखलाई क्यों नहीं पड़ीं? मैं
तो विपत्तिके सोतमें डूब रहा था। तुम इतने दिनों तक क्यों नहीं
आई? हाँ, समझ गया। इतने दुःखमें भी तुम मान कर बैठी थीं,
इतने दुःखमें भी तुम्हारा सत्य भंग नहीं हुआ। मैं समझ गया, अब
हद हो गई है, इसी लिये तुम अन्तिम समयमें मेरा साथ देने आई
हो। बेटी! तुम आ गई? मैं भी आता हूँ। वहाँ तालाव पर बहुत
भीड़ थी, इसी लिये मैं यहाँ आया हूँ। जरासा ठहर जाओ, मैं अभी
आता हूँ। तुम विपत्तिमें साथ देनेवाली हो। मैंने दुःख-सागरके केव-
टको देख लिया है। देखती नहीं हो, यह खड़ा हुआ हँस रहा है।
तुम्हें खानेको नहीं मिला था, इसी लिये तुमने पानीसे अपना पेट भर
लिया। लेकिन मैं तो खानेको खाता हूँ, मुझे पानी पीनेकी आवश्य-
कता नहीं है। बहुतसे उपाय हैं, यह अस्त्र रखा है। क्यों जी!
क्या कहती हो? अस्त्र ठीक नहीं होगा? हाँ ठीक कहती हो, अस्त्र
ठीक न होगा। सम्भव है कि वह मर्म्म तक प्रवेश न करे। यह मेरी हीन-
ताका साक्षी मेरे साथ ही है। अब तुम मुझे छोड़ दो, मैं अपने बन्धुका
आश्रय लूँगा। अब तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं है। (पाँच हजार
रुपएके पाँच नोट फेंक कर) रस्सी! रस्सी! ठीक है। तुम घबराओ
मत। अब देर नहीं है। मेरे जैसे बहुतसे अभागे पड़े हुए हैं।
शायद तुम उन्हींके पास जानेके लिये घबरा रही हो! अच्छा
अच्छा, जरासा ठहर जाओ, मैं तैयार होता हूँ। मैं कहाँ लटकूँगा?
बस इसी कड़ीमें। ठीक है, जरासा ठहर जाओ—जरासा ठहर

जाओ। कहीं कोई आ न जाय ! मैं यह दरवाजा बन्द कर लूँ। बस बेटी, अब देर नहीं है।

(गोशालामें प्रवेश करके अन्दरसे किवाड़ा बन्द कर लेना।)

(किरण, मोहित और दाईका प्रवेश।)

मोहित०—यहाँ तो नहीं दिखलाई देते !

किरण०—इसी तरफ तो आए थे। मुझसे कह आए थे कि मैं अभी आता हूँ।

(रामलालका प्रवेश।)

राम०—क्यों मिले ? मैं तो तालाब तक ढूँढ़ आया, पर कहीं पता न लगा।

दाई—जरा यह गौशाला तो देखो, इसमेंसे कुछ आहट आ रही है। (आगे बढ़ कर) हाँ हाँ, ठीक है !

राम०—दरवाजा तोड़ डालो—दरवाजा तोड़ डालो। (स्वगत) जान पड़ता है कि सर्वनाश हो गया।

(सबका दरवाजा तोड़ना और करुणामयको छतसे लटके हुए देखना।)

राम०—सर्वनाश हो गया—सर्वनाश हो गया ! यह छुरी पड़ी हुई है, इससे डोरी काट डालो—डोरी काट डालो। सर्वनाश हो गया ! आइए आइए, बढ़िए।

(मोहितका जंगले पर चढ़ कर डोरी काट देना और रामलाल आदिका करुणामयकी लाशको पकड़ कर लेटा देना।)

राम०—जल्दी पानी लाओ—जल्दी पानी लाओ। डाक्टर साहब ! डाक्टर साहब !

(समितिके सभासदोंका प्रवेश।)

किरण०—बाबूजी ! बाबूजी ! यह तुमने क्या किया—यह कैसा अनर्थ कर डाला ! मैं काल होकर तुम्हारे घरमें जनमी थी। मेरे ही

कारण तुम्हारी इतनी दुर्गति हुई। हाय ! हाय ! मैं ऐसी कुलच्छनी क्यों जनमी थी ! हाय ! यह क्या हो गया ! बाबूजी ! उठो ऐसा सर्वनाश करके मत जाओ !

मोहित०—डाक्टर साहब ! जरा आकर देखिए। (किरणसे) जरासा हट जाओ, डाक्टर साहबको देखने दो।

डाक्टर—(परीक्षा करके) अब तो इनमें जान है ही नहीं। तुरन्त ही मृत्यु हो गई थी। अब कोई उपाय नहीं हैं।

(जल्दीसे सरस्वतीका प्रवेश।)

सर०—हाय ! तुम मुझे छोड़ कर कहाँ चले ?

(मूर्च्छा।)

किरण०—मा ! मा ! उठो—उठो।

सर०—(होशमें आकर) हाय ! मैं मर गई—मैं मर गई ! हाय तुमने बड़ा दुःख पाया था ! तुम किसीकी बात सह नहीं सकते थे। इसी लिये तुम नाराज होकर चले गए। तुम्हें दिन-रात मेरी ही चिन्ता रहती थी। मेरे रहनेके लिये तुमने मकान ठीक किया था। मेरे इस चाण्डाल पेटके लिये और मेरे लड़के-लड़कियोंके लिये तुम्हें दूसरोंके सामने सिर झुकाना पड़ता था। इसी लिये तुमने अपने आपको बलिदान दे दिया। लेकिन तुमने पहले मुझसे क्यों न कहा ! तुम तो कभी मुझसे कोई बात न छिपाते थे ! तुमने पहले मुझसे क्यों न कहा कि ज्योतिका ब्याह करके मैं अपना बलिदान करूँगा ! हाय तुम मुझे छोड़ कर एक दिन भी नहीं रह सकते थे। आज मुझे छोड़कर जा रहे हो ? मुझे छोड़ मत जाओ, अपने साथ लेते चलो।

मोहित०—(डाक्टर और रामलालके साथ परामर्श करके किरणसे) तुम अपनी माको ले जाओ।

सर०—कौन ? बेटा मोहित ! तुम मुझे कहाँ ले जानेके लिये कह रहे हो ? मैं तो अब इनके साथ ही जाऊँगी । मैं तो अब तक कभीकी अपनी हिरणके पास पहुँच गई होती, लेकिन इन्हींके कारण नहीं जा सकती थी । मैंने सोचा था कि इन्हें दुःखमें ऊपरसे और भी दुःख होगा, इसी लिये मैं हिरणके पास नहीं गई । लेकिन अब मुझे किसीकी चिन्ता नहीं है—अब मैं क्यों व्यर्थ यहाँ पड़ी रहूँ ? तुम किरणको लेकर अपनी गृहस्थी देखो । किशोरने ज्योतिका भार ले लिया है, अब मेरा कोई काम तो है ही नहीं ।

(जल्दीसे घनश्याम किशोर, ज्योतिर्मयी तथा दूसरे सम्बधियोंका प्रवेश ।)

ज्योति०—मा ! मा !

सर०—कौन ? ज्योति ! अब तुम माको क्यों बुलाती हो ? मैं तो तुम्हें किशोरके हाथ सौंप कर निश्चिन्त हो गई हूँ । तुम यही कहती हो न कि नलिनको देखो—वह बड़ा अभागा है ।

ज्योति०—मा !

सर०—अब मैं तुम्हारी मा नहीं हूँ । क्यों तुम मुझे मा-मा कह रही हो ? वह देखो, हिरणका हाथ पकड़े हुए तुम्हारे बाबूजी मुझे बुला रहे हैं ।

(मृत्यु ।)

किशोर—डाक्टर साहब ! डाक्टर साहब !

डाक्टर--इनके हृदयकी गति बिलकुल बन्द हो गई है । देखिए न शरीर बरफकी तरह ठंढा हो रहा है ।

किशोर—तो क्या अब कोई उपाय नहीं है ?

डाक्टर—मुँहसे खून निकला है । जान पड़ता है कि कोई नस फट गई है ।

(नलिनका प्रवेश।)

किरण०—भइया नलिन ! देखो मा और बाबूजी हम लोगोंको छोड़ कर चले गए !

नलिन—हैं ! मा ! मा ! बाबूजी ! बाबूजी ! बहन ! अब क्या होगा ?

घन०—बेटा, डरो मत। मैं तो मौजूद ही हूँ।

(गोदमें उठा लेना।)

घन०—मोहित ! तुम किरणको ले जाओ। किशोर ! तुम किसीको भेज कर अपनी बहन और माको बुलवा लो। हम लोगोंके समाजमें कन्याके पिताका यही परिणाम होता है। घर घर यही शोचनीय अवस्था है। कहीं बहुएँ आत्महत्या करती हैं और कहीं कन्याएँ त्यागी जाती हैं। घर घर दरिद्रता है। सबको घर घर नित्य यही शोचनीय दृश्य दिखाई देता है। लेकिन फिर भी हम लोग अपने पुत्रके शुभ विवाहमें कन्याके पिताओंको पीड़ित करनेमें अपनी ओरसे कोई बात उठा नहीं रखते ! जो विवाह-संस्कार इतना पवित्र है वही हम लोगोंके समाजमें एक विलक्षण कीर्ति है—एक विलक्षण रहस्य है। भारतमें कन्यादान करना कन्यादान नहीं है बल्कि 'बलिदान' है।

(परदा गिरता है।)